टय-साहित्य-माला

मेरे इक्कीस हास्य एकांकी

स्वदेशकुमार

H
817
Sw 12 M

817
Sw12 M

...त्माराम एण्ड संस

मेरे इक्कीस हास्य एकांकी

हमारा, उत्कृष्ट एकांकी साहित्य

इतिहास के स्वर	डा० रामकुमार वर्मा	(१९६८)	२०.००
आहें और मुस्कान	डा० विमला रैना	(१९६९)	२५.००
प्रतिनिधि हास्य एकांकी	सं० श्रीकृष्ण : अरुण : सरल		१०.००
विषकन्या (सचिव)	गोविन्दवल्लभ पन्त		४.००
भगवान मनु तथा अन्य एकांकी	लक्ष्मीनारायण मिश्र		२.५०
आनन्द का राजपथ	सीताचरण दीक्षित		२.२५
बादलों के पार	हरिकृष्ण 'प्रेमी'		३.५०
सफर की साथिन	रामसरण शर्मा		२.००
दस बजे रात	विष्णु प्रभाकर		४.००
रंग और रूप	सिद्धनाथकुमार		२.००
आधुनिक एकांकी	सं० विजय चौहान		२.००
हाथी के दाँत	जयनाथ 'नलिन'		३.५०
रेलगाड़ी के डिब्बे	अरुण		२.००
रंगारंग	चिरंजीत		२.००
अटैची केस	राजेन्द्रकुमार शर्मा		२.००
पर्दा उठने से पहले	राजेन्द्रकुमार शर्मा		२.००
कालिख और लाली	राजेन्द्रकुमार शर्मा		२.००
दृष्टि का दोष	पृथ्वीनाथ शर्मा		४.००
बिना बुलाए पंच	देवराज 'दिनेश'		३.००
सफर के साथी	कणादऋषि भटनागर		२.००
आज का ताजा अखबार	कणादऋषि भटनागर		३.००
आग, राख और रोशनी	रेवतीसरन शर्मा		२.००
पत्थर और आँसू	रेवतीसरन शर्मा		४.००
दिमाग का बीमा	एन० आर० टण्डन		२.५०
खाँसी को फाँसी	शैलेश मटियानी		२.००
चट्टान का फूल	मोहन चोपड़ा		२.५०
रक्त-संगम	दिनेश खरे		२.५०

आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-६

मेरे
इक्कीस
हास्य एकांकी

लेखक
स्वदेशकुमार

आत्माराम एण्ड संस
दिल्ली . नई दिल्ली . जयपुर . लखनऊ . चंडीगढ़

MERE EKKEESA HASYA EKANKI

By : Sudesh Kumar

Price Rs. 4·00

© 1970, ATMA RAM & SONS, DELHI-6.

प्रकाशक : रामलाल पुरी, संचालक,
आत्माराम एण्ड संस,
कश्मीरी गेट, दिल्ली-६ ।

शाखाएँ : हौज़ खास, नई दिल्ली ।
धमानी मार्केट, जयपुर ।
१७, अशोक मार्ग, लखनऊ ।
विश्वविद्यालय क्षेत्र, चंडीगढ़ ।

मूल्य : रुपए ४.००

मुद्रक : राष्ट्रवाणी प्रिण्टर्स,
सदर थाना रोड,
दिल्ली-६ ।

39646
18/5/72
Date
Library
IIAS, Shimla
H 817 Sw 12 M
00039646

दो शब्द

इनसान जब पैदा होता है तो रोता है, और जब मरता है तो दूसरों को रुलाता है—जैसे जीवन का प्रारम्भ और अन्त रोने से ही है।

खैर, चलिए मान लेते हैं—मजबूरी है। लेकिन पैदा होने और मरने के बीच का जो जीवन है, उस में इनसान क्यों रोता रहे? रोने वाले अनेक कारण उपस्थित कर देंगे—कुछ सही, कुछ गलत। लेकिन फिर भी बिना हँसे, खुल कर कहकहे लगाए जीना भी कोई जीना है! अरे साहब, मुसीबत किस पर नहीं आती? मुसीबत में हँसते रहना ही तो जीवन है। फिर आप क्यों नहीं हँसते?

हँसने के लिए कोई हँसी की बात भी होनी चाहिए। और ये बातें हमें अपने आस-पास के जीवन में ही मिल जाती हैं—जरा ध्यान से देखने की ज़रूरत है। मैंने इन्हें ध्यान से देखा है और कलमबद्ध कर दिया है।

साहित्य में अनेक रसों के साथ हास्य रस भी है। लेकिन हिंदी-साहित्य का सब से उपेक्षित अंग हास्य ही रहा है। और अभी भी हिन्दी के लेखक हास्य रस को उपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं। हास्य लेखकों को वह साहित्यिक भी नहीं मानते। देखिए, है न हँसी की बात।

खैर, छोड़िए, मैं इस पचड़े में नहीं पड़ना चाहता। और न मैं यहाँ हास्य रस पर कोई थीसिस उपस्थित करना चाहता हूँ। मैं तो बस इतना मानता हूँ कि हँसना हमारे जीवन को सुखी बनाने के लिए बहुत आवश्यक है। इसीलिए मैं अपने इस हास्य संग्रह को प्रस्तुत कर रहा हूँ कि जब आप दिन भर की चख-चख और झखझख के बाद रात को अपने पलँग पर लेटें तो इस की दो-चार रचनाओं सो पढ़ कर हँसते-हँसते सो जाएँ, और अगले दिन का सामना उनकी याद दिल में लिए हुए करें—दिमाग कम खराब होगा।

इन झलकियों में से सभी आकाशवाणी से प्रसारित हो चुकी हैं या पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। इन्हें सुन-पढ़ कर लोग दिल खोल कर हँसे

हैं—यह मुझे मालूम है। इसी बलबूते पर इन्हें संग्रह के रूप में प्रस्तुत कर रहा हूँ।

इन्हें पढ़कर आप को हँसी न आए, तो···तो आप मेरी बेवकूफी पर ही हँस लीजिएगा जो मैंने इन्हें लिख कर और प्रकाशित करवा कर की है।

आर-१६, हौज़ खास एन्क्लेव,
नई दिल्ली-१६

स्वदेशकुमार

विषय-सूची

क्रम		पृ०
१.	दफ्तर का बाबू	१
२.	शादी की बात	१०
३.	नौकर की तलाश	२१
४.	तुरपचाल	३१
५.	महापुरुष	३७
६.	फ्री लिफ्ट	४१
७.	यों ही मामूली-सा	४३
८.	चार नुस्खे	४६
९.	उतार-चढ़ाव	५०
१०.	तलाक	५२
११.	इंटरव्यू	६०
१२.	बुरे फँसे कार लेकर	६७
१३.	क्या पकाया है ?	८०
१४.	डाक्टर	८४
१५.	हाथ की रेखाएँ बताती हैं···	९०
१६.	जरा आराम कर लें	९६
१७.	सब जानूँ राम से भेंट	१०८
१८.	अब कोई चिन्ता नहीं	१११
१९.	बात बस टिकट की थी	१२०
२०.	होली है !	१२९
२१.	पूछताछ	१३८

१

दफ्तर का बाबू

(रमेश और शांता के घर का एक कमरा)

रमेश : (सो कर उठते हुए) आ···आ···(पुकार कर) शांता !

शांता : (दूर से) जाग गए ?

रमेश : (उनींदा) हाँ, जाग तो गया हूँ, पर क्या अभी सवेरा नहीं हुआ ?

शांता : (पास आते हुए) तो क्या तुम्हें रात ही दिखाई दे रही है ?

रमेश : पर यह अँधेरा···

शांता : (हँसते हुए) काली घटा छाई हुई है, जनाब !

रमेश : अच्छा ? तो क्या बारिश होने वाली है ?

शांता : बादल आए हैं तो क्या बारिश नहीं आएगी ! अब उठो भी, या बैठे-बैठे चारपाई ही तोड़ते रहोगे ?

रमेश : उठता हूँ, भई ! तुम तो बस एकदम फौजी हुक्म चला देती हो ।

शांता : जल्दी से उठकर तैयार हो जाओ, नहीं तो देर हो जाएगी ।

रमेश : बज क्या गया ?

शांता : साढ़े आठ !

रमेश : (सकपका कर) अरे बाप रे ! इतनी देर हो गई ? आज कैसे वक्त पर दफ्तर पहुँचूँगा ।

शांता : आज दफ्तर की छुट्टी है !

रमेश : (आश्चर्य से) दफ्तर की छुट्टी है ? क्यों ? आज इतवार तो नहीं है । अखबार में कुछ निकला है क्या ? खैरियत तो है ?

शांता : इतने परेशान क्यों होते हो ? सब खैरियत है ?

रमेश : फिर छुट्टी किस बात की ?

शांता : राजा इन्द्र की आज्ञा है—इसलिए ।

रमेश : कौन राजा इन्द्र ? हमारे देश में अब किसी राजा या नवाब का हुक्म नहीं चलता ।

शांता : (हँसते हुए) वह देखो, ऊपर ! आकाश में राजा इन्द्र मंडरा रहे हैं ।

रमेश : ओह ! तुम्हारा मतलब है बारिश के डर से आज दफ्तर नहीं जाऊँ ? है न ?

शांता : जी, नहीं !

रमेश : यानी जाऊँ ?

शांता : जी, नहीं !

रमेश : भई, सुबह-ही-सुबह तुम्हें यह क्या मजाक सूझा है आखिर ? साफ-साफ कहो न, क्या कहना चाहती हो ?

शांता : तुम तो कुछ समझते ही नहीं, मैं कह रही हूँ कि मौसम इतना बढ़िया है, आज दफ्तर की छुट्टी कर दो ! समझे ?

रमेश : वाह, खूब दलील है ! इतने दिनों से रास्ते भर लू के थपेड़े खाता हुआ दफ्तर जाता था, आज मौसम अच्छा है, दफ्तर का रास्ता बड़े मजे से कटेगा !

शांता : जी नहीं !

रमेश : फिर वही, जी नहीं !

शांता : जी, हाँ !

रमेश : (बिगड़ कर) क्या जी नहीं, जी हाँ लगा रखी है ।

शांता : (हँस कर) ऐसे अच्छे मौसम में बिगड़ा नहीं करते, और दफ्तर भी नहीं जाते ! समझे ?

रमेश : फिर क्या करते हैं ?

शांता : मनबहलाव के लिए पिकनिक पर जाते हैं

रमेश : तुम्हारा दिमाग तो खराब नहीं हो गया है ?

शांता : क्यों ?

रमेश : क्यों क्या ? दफ्तर से छुट्टी लूँ, वह भी पिकनिक के लिए !

शांता : तो क्या पिकनिक पर जाना गुनाह है ?

रमेश : न सही गुनाह ! पर पिकनिक के लिए भला दफ्तर से छुट्टी मिल सकती है ? और वह भी हम बाबुओं को ?

शांता : तो क्या बाबुओं को पिकनिक पर नहीं जाना चाहिए ?

रमेश : न जाएँ तो ही अच्छा है ।

शांता : क्यों ?

रमेश : इसलिए कि पिकनिक तो जाएँगे एक दिन, और उस का नशा चढ़ा रहेगा छः दिन । फिर दफ्तर में कौन काम करेगा ?

शांता : (झुँझला कर) दफ्तर ! दफ्तर ! दफ्तर ! दफ्तर क्या हुआ कैद-खाना हो गया !

रमेश : यह कैदखाना न होता तो हमें दो वक्त रोटी कहाँ से मिलती ?

शांता : हम एक ही वक्त रोटी खा कर सब्र कर लेंगे, तुम महीने में पन्द्रह दिन ही दफ्तर जाया करो ।

रमेश : (मजाक उड़ाते हुए) अरे वाह । क्या जोरदार तरकीब सोची है ! इस तरह से तो दो समस्याएँ एक साथ हल हो जाएँगी । बाबुओं की छुट्टी की भी और अनाज की कमी की भी ।

शांता : (खीजते हुए) देखो जी, इस तरह मजाक में बात मत उड़ाओ !

रमेश : (चिढ़ाते हुए) मजाक ? बचपन से लेकर आज तक भला मैंने किसी स्त्री से मजाक किया है, जो तुमसे करूँगा !

शांता : फिर वही ?

रमेश : अच्छा, बाबा, लो कुछ नहीं कहता । इस चक्कर में बेकार ही दफ्तर को और भी देर हो गई ।

शांता : मैं कहती हूँ चाहे कुछ हो जाए, आज तुम्हें दफ्तर नहीं जाने दूँगी । सुना तुमने ?

रमेश : तुम भी सुन लो, मैं कहता हूँ चाहे कुछ हो जाए—मैं दफ्तर जरूर जाऊँगा । आज ही तो दफ्तर जाने का लुत्फ है ।

शांता : तुम तो पहले बहुत रोमांटिक हुआ करते थे । आकाश में जरा-सा बादल का टुकड़ा दिखाई दिया नहीं कि बहकने लगे । और अब सारे आकाश में काले-काले बादल मँडरा रहे हैं, लेकिन···

रमेश : (साँस भर कर) अरे, क्यों उन बातों की याद दिलाती हो,

शांता ! जब से बाबू बने हैं सब रोमांस चौपट हो गया। दफ्तर में इतना काम रहता है कि एक मिनट को सिर उठाने की भी फुरसत नहीं मिलती और तुम कहती हो एक दिन की छुट्टी ले लूँ।

शांता : मैं सब जानती हूँ कितना काम करते हो !

रमेश : क्या जानती हो ?

शांता : यही कि तुम बाबू लोग दफ्तर में कामवाम कुछ नहीं करते, बस हाय-हाय करते रहते हो, ताकि अफसर यह न समझे कि कुछ काम नहीं है।

रमेश : अरे, जरा धीरे बोलो।

शांता : क्यों ?

रमेश : पड़ोसी बाबू ने सुन लिया तो दफ्तर में जाकर सब से कह देगा कि तुम बाबुओं की बुराई कर रही थीं।

शांता : तो क्या होगा ?

रमेश : तुम्हारा तो कुछ नहीं बिगड़ेगा। पर वे लोग मेरा सिगरेट लेमन जरूर बंद कर देंगे।

शांता : मैं कुछ नहीं जानती, तुम्हें आज छुट्टी लेनी ही पड़ेगी—कहे देती हूँ।

रमेश : और जो न लूँ तो ?

शांता : तो भूख हड़ताल।

रमेश : यानी कि इस जरा सी बात के लिए तुम भूख हड़ताल कर दोगी ? हूँ !

शांता : मैं क्यों करती, तुम्हारी भूख हड़ताल करवा दूँगी। समझे ?

रमेश : समझ तो गया। पर, शांता, जरा सोचो तो···

शांता : (बीच में ही) मैंने तो सोच लिया, अब तुम्हारी बारी है।

रमेश : यानी कि यह तुम्हारा अल्टीमेटम है ?

शांता : जी, हाँ।

रमेश : यानी कि मैं किसी भी तरह दफ्तर नहीं जा सकता ?

शांता : जी, हाँ।

रमेश : यानी कि···

शांता : (बीच में ही) यानी कि अब आप बहाने बनाना छोड़कर पिकनिक चलने की तैयारी करिए।

रमेश : लेकिन छुट्टी के लिए तो कोई बहाना बनाना ही पड़ेगा।

शांता : कह दीजिए कि तबियत ठीक नहीं है; सब से आसान बहाना है।

रमेश : अगर सभी बाबुओं की पत्नियाँ तुम्हारी तरह हो जाएँ तो दफ्तर जाना छोड़कर सब बाबू पिकनिक मनाते रहें।

शांता : यह कभी हो ही नहीं सकता। दो बाबू कहीं भी मिल जाएँ वहीं दफ्तर खोल कर बैठ जाएँगे।

रमेश : यानी कि आज तुम हम लोगों की बुराई करने पर उतारू हो गई हो।

शांता : (हँसकर) बिल्कुल नहीं, मैं तो तारीफ कर रही हूँ। दफ्तर के काम के अलावा बाबुओं को दुनिया की किसी और बात की चिंता ही नहीं रहती। घर में, बाजार में, पड़ोस में, महल्ले में, सड़क पर, बस में—जहाँ एक और एक दो बाबू मिले कि हो गई दफ्तर की बातें शुरू, अरे, मैं कहती हूँ···

रमेश : (बीच में ही) अब कुछ न कहो, शांता, मैंने घुटने टेक दिए।

शांता : (हँस कर) अच्छा, तो अब उठो और जाकर कहीं से दफ्तर टेलीफोन कर आओ, तब तक मैं भी तैयारी कर लेती हूँ।

रमेश : अच्छा जाता हूँ। (जाने लगता है)

शांता : (पुकार कर) और सुनो, टेलीफोन करके जल्दी ही वापस आना। ऐसा न हो कि रास्ते में कोई बाबू मिल जाए और दोनों वहीं खड़े-खड़े दफ्तर के काम का रोना रोने लगो। समझे ?

रमेश : (दूर से) समझ गया, हुजूर।

(रमेश लौट कर आता है।)

शांता : कर आए टेलीफोन ?

रमेश : (आते हुए) नहीं।

शांता : क्यों ? क्या फिर दफ्तर जाने की उमंग उठ गई ?

रमेश : नहीं, नहीं, शांता यह बात नहीं है। रास्ते में मुझे ख्याल आया कि अभी तो नौ ही बजे हैं। दफ्तर में होगा कौन ? किसे टेलीफोन

करता !

शांता : फिर ?

रमेश : मैं श्यामनाथ के घर चला गया।

शांता : कौन श्यामनाथ ?

रमेश : वह मेरे दफ्तर में ही काम करता है।

शांता : तो तुम माने नहीं ?

रमेश : (जल्दी से) नहीं, शांता, मैं सच कहता हूँ, मैंने श्यामनाथ से दफ्तर के काम की एक भी बात नहीं की। उसे छुट्टी की अरजी देकर सीधा चला आ रहा हूँ।

शांता : और क्या-क्या बातें कीं ?

रमेश : विश्वास करो, शांता, मैंने बस यही कहा था कि बड़े बाबू को अरजी दे देना।

शांता : और कुछ नहीं कहा ?

रमेश : नहीं···(रुक-रुककर) हाँ, इतना जरूर मेरे मुँह से निकल गया कि आज कुतुब मीनार जा रहे हैं। पर इस का दफ्तर के काम से तो कोई संबंध नहीं है।

शांता : खैर, अब जल्दी करो, नहीं तो कुतुब के लिए और देर हो जाएगी।

रमेश : तुम ने सब तैयारी कर ली ?

शांता : और क्या मैं तुम्हारी तरह कोई बाबू हूँ, जो सुबह से शाम तक चार लाइन का एक ड्राफ्ट भी नहीं लिख पाते।

रमेश : (आजिज़ी से) शांता, तुम से एक प्रार्थना है—घर में चाहे तुम मुझ से कुछ भी कह लो, पर कुतुब पहुँच कर कुछ न कहना, नहीं तो आसपास के लोग···

शांता : (हँस कर) हाँ, हाँ, मैं जानती हूँ कि बाबुओं को अपनी जान से भी ज्यादा प्यारी शान होती है।

रमेश : तो वचन देती हो ?

शांता : एक शर्त पर कि वहाँ तुम कोई ऐसी हरकत नहीं करोगे कि सब जान जाएँ कि तुम दफ्तर के बाबू हो। दफ्तर के काम के बारे में एक शब्द भी नहीं कहोगे।

रमेश : मैं वादा करता हूँ।

शांता : तब ठीक है। मैं भी वचन देती हूँ।

रमेश : तो अब चलें ? दस बजने वाले हैं।

(कुतुब के बाग का एक कोना।)

शांता : आओ, इधर उस पेड़ के नीचे चल कर बैठें।

रमेश : हाँ, वहीं ठीक है, एकांत रहेगा।

शांता : जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाओ न। इतनी देर करोगे तो कोई और आकर अड्डा जमा लेगा।

रमेश : चल तो रहा हूँ, भई। इतनी भारी तो पोटली पकड़ा दी है। बोझ के मारे···

शांता : (बीच में ही) और जब दफ्तर से फाइलों का बंडल ढोकर लाते हो, तब बोझ नहीं मालूम देता ?

रमेश : देखो, अब दफ्तर की बात तुम कर रही हो या मैं ?

शांता : (हँस कर) गलती हुई, कान पकड़ती हूँ।

रमेश : शुक्र है भगवान का ! कभी तो तुम ने अपने कान पकड़े।

बड़े बाबू : (दूर से आवाज देकर आते हुए) रमेश बाबू !

रमेश : हे भगवान्, यहाँ भी किसी ने मेरी जात पहचान ली। (कुछ रुक कर एक दम) अरे, यह तो हमारे दफ्तर के बड़े बाबू लपके हुए चले आ रहे हैं।

शांता : (हँस कर) मालूम होता है वह भी पिकनिक पर आए हैं।

रमेश : अजी, राम भजो। इन्हें पिकनिक का शौक होता तो भला कभी बड़े बाबू बन सकते थे।

शांता : फिर क्या बात है ?

रमेश : कुछ समझ में नहीं आता।

बड़े बाबू : (पास आकर हाँफते हुए) रमेश बाबू, सारी कुतुब छान मारी तब कहीं आप दिखाई दिए इस कोने में।

रमेश : खैरियत तो है, बड़े बाबू ?

बड़े बाबू : अजी, खैरियत होती तो आफिस में बेफिक्री से बैठा होता। यहाँ आप के पीछे-पीछे क्यों भागा आता ?

रमेश : आखिर बात क्या है ?

बड़े बाबू : अजी, बात क्या होती ! आप तो तबियत खराब होने का बहाना कर के यहाँ पिकनिक मना रहे हैं और···

रमेश : (घबरा कर) वह···बात···यह हुई, बड़े बाबू···बड़े बाबू···

बड़े बाबू : वह तो श्यामनाथ ने मुझे बता दिया था, वरना···

रमेश : इस बार माफ कर दीजिए, बड़े बाबू ! आगे से कभी झूठी अरजी नहीं दूँगा ।

बड़े बाबू : खैर, वह तो बाद में देखा जाएगा । पहले आप यह बताइए कि चार दिन से इतनी जरूरी चिट्ठी आई पड़ी है, आप ने अब तक उस का जवाब क्यों नहीं दिया ? आज रिमाइण्डर आ गया है ।

रमेश : कौन सी चिट्ठी ?

बड़े बाबू : यह देखो, तुम्हारी मेज से ढूँढ़ढाँढ़ कर फाइल ले आया हूँ । बड़े साहब बहुत नाराज़ हो रहे थे । बोले, अभी इस का जवाब जाना चाहिए, नहीं तो···

रमेश : (घबरा कर) नहीं तो ?

बड़े बाबू : जवाबतलबी और फिर चार्जशीट । और क्या पता मुअत्तल भी कर दें । मैंने सोचा मैं ही इस का जवाब दे दूँ । पर तुम्हारी फाइल ही इतनी उलटीसीधी लगी हुई थी कि इस चिट्ठी का रेफरेंस ही नहीं मिला । पहले सोचा कि सब मामला बड़े साहब से रिपोर्ट कर दूँ ।

रमेश : (बुरी तरह घबरा कर) तो क्या आपने रिपोर्ट कर दी ?

बड़े बाबू : तुम्हारे बीवी-बच्चों का खयाल आ गया, इसीलिए यहाँ दौड़ा चला आ रहा हूँ ।

रमेश : मैं अभी इस चिट्ठी का जवाब लिख देता हूँ, बड़े बाबू ! आप बड़े साहब से मत कहिएगा कि मैं यहाँ पिकनिक मना रहा हूँ !

शांता : (भुनभुना कर) बस, रहने दीजिए, हो गया पिकनिक । जाइए, दफ्तर में काम करिए जा कर ।

रमेश : देखो, शांता, तुमने वचन दिया था कि यहाँ मुझ से कुछ न कहोगी ।

शांता : और तुम ने भी तो वादा किया था कि यहाँ दफ्तर के काम का जिक्र नहीं करोगे।

रमेश : अब तुम ही बताओ, शांता, मैं क्या करूँ ?

शांता : (क्रोध से) अपना बोरिया बिस्तर लेकर दफ्तर में ही रहने लगो। समझे ?

२

शादी की बात

(साधारण ढंग से सजी हुई बैठक। पुराना और नया दोनों तरह का फर्नीचर—मेज, कुरसी, तख्त, कालीन, दरी, दीवार पर खानदान के पूर्वजों के चित्र।

चमेली कमरे की व्यवस्था ठीक करने में व्यस्त है, इतने में बाहर से दरवाजे पर दस्तक होती है। चमेली उस ओर जाती है, फिर प्रभातचंद्र और चांद को साथ लेकर अन्दर आती है।)

चमेली : आइए, बैठिए।

चांद : (चमेली से) आप भी बैठिए न!

चमेली : मैं ?

चांद : क्या हर्ज है ?

चमेली : जी, मैं···

प्रभातचंद्र : (कड़े स्वर में) चांद!

चांद : जी, पिताजी!

प्रभातचंद्र : मैंने तुम्हें क्या समझाया था ? सब भूल गए ?

चांद : नहीं तो, पिताजी, मुझे सब याद है।

प्रभातचंद्र : फिर यह क्या बेवकूफी की बातें करने लगे ?

चांद : बेवकूफी की बातें! मैं तो रिहर्सल कर रहा हूँ, पिताजी, ग्रांड रिहर्सल! ड्रेस रिहर्सल! अगर मैं कहीं अपने संवाद भूल जाऊँ तो आप प्रौम्प्ट कर दीजिएगा। (उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना ही चमेली से) आपका शुभ नाम ?

चमेली : (घबरा कर) मेरा ?

चांद : जी ।

चमेली : मुझे चमेली कहते हैं ।

चांद : (मजनूँ स्टाइल में) चमेली ! ओह, कितना प्यारा नाम है ! चमेली—जिस की मादक सुगन्ध मस्तिष्क के ऊपर छाकर आत्म-विभोर कर देती है । (कुछ देर चमेली के उत्तर की प्रतीक्षा करता है ; लेकिन उसे चुप देखकर) पिताजी, आपने तो बताया था कि इसके बाद वह मेरा नाम पूछेंगी । इन्होंने तो कुछ पूछा ही नहीं, अब मैं क्या करूँ ?

प्रभातचंद्र : तुम रहे निरे बुद्धू के बुद्धू ही ।

चांद : बुद्धू के बुद्धू ही ? पिता जी, आखिर मैं हूँ तो आपका ही लायक बेटा ।

प्रभातचंद्र : अगर लायक होते तो इस वक्त खुद ही झट से अपना नाम बता देते ।

चांद : ओह, ठीक है, हाँ, तो चमेली जी, मेरा शुभनाम चांद है ।

चमेली : मुझे मालूम है ।

चांद : मालूम है ? पिताजी, अब क्या पूछूँ—इन्हें मेरा नाम मालूम है तो काम भी मालूम होगा ।

प्रभातचंद्र : चमेली, अपनी बहूजी को खबर तो कर दो ।

चमेली : जी, अभी लीजिए ।

(जाती है ।)

चांद : यह आपने क्या किया, पिताजी ? रिहर्सल अधूरा ही रह गया ।

प्रभातचंद्र : मैंने जो बातें तुम्हें लिखाई हैं, उन्हें जल्दी से एक बार दोहरा लो ।

चांद : (जेब से नोटबुक निकालकर) अभी लीजिए, पिताजी, (नोटबुक खोलकर उसमें देखते हुए स्वतः) आपका शुभ नाम क्या है ? आप कहाँ तक पढ़ी हैं ? आपको गाना आता है ? आपको खाना आता है ?

प्रभातचंद्र : खाना आता है ! अबे बेवकूफ, मैंने तो लिखाया था कि आपको खाना बनाना आता है ?

चांद : ठीक, ठीक। गलत बोल गया था। (स्वतः) हाँ, तो आपको खाना बनाना आता है ? आपको बोलना आता है ?

प्रभातचंद्र : फिर गलती की ? मैंने कहा था—आपको अँग्रेजी बोलना आता है ?

चांद : ठीक, ठीक। आपको रोना आता है ?

प्रभातचंद्र : यह प्रश्न मैंने कहाँ लिखाया था ?

चांद : यह मैंने अपनी तरफ से जोड़ लिया है। जब गाना आता है तो रोना भी आता ही होगा। पिताजी···

प्रभातचंद्र : क्या है ?

चांद : अगर उसने मेरे किसी प्रश्न का उत्तर नहीं दिया तो मैं क्या करूँ ?

प्रभातचंद्र : (क्रोध से) ओफ, कैसे गधे से पाला पड़ा है !

चांद : पिता जी, गधा तो एक ही तरह का होता है।

प्रभातचंद्र : मुझे लगता है तुम जरूर लुटिया डुबो दोगे।

चांद : पिताजी, मैंने तैरना भी सीख लिया है।

(रजनीदेवी और चमेली का प्रवेश।)

रजनीदेवी : नमस्ते !

प्रभातचंद्र : नमस्ते !

रजनीदेवी : बैठिए, चमेली, चाय तो ला।

चमेली : अभी लाई, बहूजी, (जाती है।)

प्रभातचंद्र : आप अच्छी हैं ?

चांद : अच्छी ही नहीं—बहुत अच्छी।

(प्रभातचंद्र चांद को घूरकर देखते हैं। चांद अपनी गलती नहीं समझ पाता। रजनीदेवी भेंप जाती हैं।)

रजनीदेवी : मैं अभी आती हूँ चकोरी को लेकर। (जाती है।)

चांद : (पिता से) पिताजी !

प्रभातचंद्र : क्या है ?

चांद : आपने सुना—उस का नाम चकोरी है।

प्रभातचंद्र : तो क्या हुआ ?

चांद : वाह, पिताजी, आप तो साहित्य से बिल्कुल परिचित नहीं मालूम होते। मैं चांद, तुम चकोरी ! रहेगी कैसी सुन्दर जोड़ी ?

प्रभातचंद्र : (डाँटते हुए) चुप वे, बदतमीज ! (अपनी छड़ी दिखाते हुए) ऐसी मरम्मत करूँगा कि सारी कविता करना भूल जाएगा।

चांद : पिताजी, घर चलकर चाहे जितना मार लीजिएगा, यहाँ तो कविता कर लेने दीजिए। आपको पता नहीं आजकल की लड़कियाँ कवियों को विशेष रूप से पसन्द करती हैं। सुनिए—

बच्चन ! 'इस पार प्रिये, तुम हो, मधु है,
उस पार न जाने क्या होगा ?'

सुमित्रानन्दन पन्त ! वियोगी होगा पहला कवि,
आह से उपजा होगा गान ;
उमड़ कर आँखों से चुपचाप,
वही होगी कविता अनजान !'

(रूमाल से आँसू पोंछता है)

प्रभातचंद्र : (क्रोध से) कवि के बच्चे !

चांद : (प्रसन्न होकर) आह, तो आप भी कवि बन गए ! जादू वह जो सिर पर चढ़कर बोले। किन्तु, पिताजी, आज तो शादी की बात मेरी हो रही है, आप किसी और दिन कवि बनिएगा।

(प्रभातचंद्र क्रोध में खड़े होकर चांद को मारने के लिए अपने हाथ की छड़ी उठाते हैं कि इतने में रजनीदेवी और उनके पीछे अति आधुनिक ढंग से शृंगार किए हुए चकोरी आती है।)

रजनीदेवी : (आश्चर्य से) क्या बात है ?

प्रभातचंद्र : (झेंपते हुए) कुछ नहीं, जरा यों ही—

चांद : (खिसियाना सा) जरा यों ही—

(दोनों कोई बात नहीं बना पाते।)

रजनीदेवी : (आश्चर्य से) जरा यों ही ?

(प्रभातचंद्र और चांद 'ही ही' करते हुए बैठ जाते हैं। चाँद फौरन ही एकाएक उठ खड़ा होता है।)

चांद : आई एम सॉरी। लेडीज़ फर्स्ट !

रजनीदेवी : यह मेरी वेटी चकोरी है ।

चांद : ही ! ही ! मुझे चांद कहते हैं । (पिता की ओर) यह मेरे परम पूज्य पिताजी हैं; इनका शुभ नाम श्री प्रभातचंद्र है । यह मिडिल फेल हैं, मैं इण्टर पास हूँ । मैं ही आपको देखने आया हूँ । पिताजी तो मेरे साथ बाई दी वे आ गए हैं । हाऊ डू यू डू ?
(चांद चकोरी से हाथ मिलाने को अपना हाथ वढ़ाता है, लेकिन चकोरी दोनों हाथ जोड़ कर नमस्ते करती है ।)

चांद : आई एम फाइन, थैंक यू !
(चांद 'ही ही' करता हुआ बैठ जाता है, लेकिन चकोरी को खड़ा देखकर फौरन उठ जाता है ।)

चाँद : पहले आप वैठिए, लेडीज़ फर्स्ट !
(रजनीदेवी और चकोरी के वैठने पर चांद भी वैठ जाता है ।)

चकोरी : (रजनीदेवी से) मेरा विचार है कि हम वाहर वगीचे में चलें ।

रजनीदेवी : जी, हाँ, ठीक है ।
(प्रभातचंद्र चांद को एक तरफ ले जाकर धीरे-धीरे कुछ समझाते हैं, और रजनीदेवी दूसरी तरफ चकोरी को कुछ वताती हैं । फिर प्रभातचंद्र और रजनीदेवी वाहर चले जाते हैं, थोड़ी देर तक निःस्तब्धता रहती है । चांद और चकोरी एक दूसरे को कनखियों से देखते हैं ; और फिर शरमा कर नीची निगाहें कर लेते हैं ; तभी चमेली ट्रे में चाय के वर्तन, फल, मिठाई आदि ला कर रख देती है और इन दोनों को दूर-दूर खड़े देखकर आश्चर्यचकित सी चली जाती है ।)

चांद : (गला साफ करते हुए) मैं तो आपको देखकर सव भूल गया ।

चकोरी : क्या भूल गए ?

चांद : पिता जी ने जो वताया था ।

चकोरी : क्या वताया था ?

चांद : याद हो तो वताऊँ । (जेव में हाथ डालकर) अरे, मेरी डायरी कहाँ गई ? खैर, कोई वात नहीं, मैं मुँह-जवानी ही वोलूँगा । जरा एक गिलास पानी तो मँगवा दीजिए ।

चकोरी : चाय पीजिए, आइए ।

चांद : अच्छा ।

(चकोरी चाय बनाती है, पहले प्यालों में चाय का पानी डालती है, फिर दूध और फिर चीनी ।)

चांद : यह आप किस तरह चाय बनाती हैं ?

चकोरी : (आश्चर्य से) क्यों ?

चांद : पहले चीनी, फिर दूध और सबसे बाद में चाय का पानी डालना चाहिए, और आपने इसका उलटा ही किया है ।

चकोरी : चाय तो ऐसे ही बनती है जैसे मैंने बनाई है ।

चांद : आपने चाय बनानी कहाँ सीखी थी ?

चकोरी : स्कूल में, डोमेस्टिक साइंस की टीचर ने ऐसे ही चाय बनानी सिखाई है ।

चांद : सिखाई होगी । लेकिन अब आपको जैसे मैं कहूँ उस तरह चाय बनानी होगी ।

चकोरी : क्यों ?

चांद : बड़ी भोली हैं आप ! शास्त्रों में लिखा है कि पत्नी को पति की आज्ञा का पालन करना चाहिए ।

चकोरी : और जो मैं न मानूँ तो ?

चांद : तो मैं रूठ जाऊँगा, तुम मनाना । ओह, इस रूठने-मनाने में कितना आनन्द है !

चकोरी : और जो मैं न मनाऊँ तो ?

चांद : तो थोड़ी देर बाद मैं खुद ही मान जाऊँगा ।

चकोरी : आप तो बड़ी दिलचस्प बातें करते हैं ।

चांद : (फूल कर) आप को मेरी बातें अच्छी लगती हैं ? पिताजी तो कहते हैं मुझे कुछ नहीं आता ।

चकोरी : पर बातें बनानी खूब आती हैं ।

चांद : अच्छा, अब हम कुछ काम की बातें करें तो कैसा रहे ?

चकोरी : शुरू कीजिए ।

चांद : (सोचते हुए) हूँ ! जरा खड़ी तो हो जाइए ।

चकोरी : (खड़ी होते हुए) क्यों ?

चांद : अब जरा चल कर दिखाइए ।

चकोरी : मैं कोई घोड़ी हूँ, जो आप मेरी चाल देखना चाहते हैं ?

चांद : देखिए, अब काम की बातें हो रही हैं। जरा चलिए। (चकोरी एक चक्कर लगाती है) ठीक है। मैं देख रहा था कहीं आप लंगड़ाती तो नहीं । (जेब से इंचीटेप निकाल कर) अब इधर आइए। आप की लंबाई नापनी है। लेकिन अपनी यह ऊँची एड़ी वाली सैंडिल उतार दीजिए ।

(चकोरी जूते उतार देती है। चांद फीते से उस की लंबाई नापता है।)

चांद : पाँच फुट, तीन इंच। (एक अमरीकी मैगजीन में देख कर) ठीक है।

चकोरी : (आश्चर्य से) क्या ठीक है ?

चांद : आप की लम्बाई वही है जो अमरीकन स्टैंडर्ड के हिसाब से उचित समझी जाती है। जरा एक मिनट ठहरिए ।

(चांद बाहर जाता है और वजन तोलने की मशीन उठाकर अन्दर लाता है।)

चांद : जरा इस पर खड़ी तो हो जाइए ।

चकोरी : क्यों ?

चांद आपका वजन तौलना है ।

(चकोरी मशीन पर खड़ी हो जाती है। चांद मशीन पर झुक कर देखता है।)

चांद : १२६ पौंड। (मैगजीन में देख कर) बिलकुल ठीक ।

(चकोरी की कमर के चारों ओर फीता लपेटने लगता है)

चकोरी : (पीछे हट कर) यह क्या बदतमीजी है ?

चांद : (आश्चर्य से) कमर का नाप ले रहा हूँ ।

चकोरी : आपने तो बेशरमी की हद कर दी। इस तरह कोई कमर में हाथ डालता है !

चांद : यह भी खूब रही ! अमरीका में तो इसे बुरा नहीं समझा जाता ।

चकोरी : यह अमरीका नहीं—भारत है ।

चांद : अच्छा, तो यह लो फीता, अपने हाथ से नाप कर बता दो। देखो, ठीक-ठीक नापना । १७ इंच कमर नहीं हुई तो शादी की बात यहीं खत्म हो जाएगी ।

चकोरी : (अपनी कमर नाप कर) यह लो—पौने १० इंच है ।

चांद : (प्रसन्न होकर) वैरी गुड ! आप तो कवि की कल्पना को साकार कर रही हैं । अब जरा आँखें तो दिखाइए ।
(चकोरी आँखें फाड़-फाड़ कर उस की ओर घूर कर देखने लगती है ।)

चांद : मुझे डराती क्यों हो ?

चकोरी : आपने ही तो कहा था कि आँखें दिखाओ ।

चांद : (हँसते हुए) वाह ! वाह ! आप को मजाक करना भी खूब आता है । अच्छा, अब दाँत तो दिखाइए ।
(चकोरी खीसें निपोर देती है ।)

चांद : आह ! क्या मोती जैसी लड़ियाँ हैं । दि कॉलीनोज स्माइल ! (आगे झुककर दाँत गिनने लगता है) एक, दो, तीन···

चकोरी : यह क्या है ?

चांद : दाँत गिन रहा हूँ कि पूरे बत्तीस हैं भी या नहीं ?

चकोरी : आप अजीब आदमी मालूम होते हैं !

चांद : इज्जत अफजाई का शुक्रिया । हाँ, कहीं आपके दाँत दूध के तो नहीं हैं ?

चकोरी : दूध के नहीं, चाय के दाँत हैं ।

चांद : चाय के दाँत ?

चकोरी : हाँ, क्योंकि मैं दूध नहीं, चाय पीती हूँ ।

चांद : (सोचते हुए) हूँ ! आप अभी पढ़ती हैं ?

चकोरी : जी, नहीं ! मैं बी० ए० पास कर चुकी हूँ ।

चांद : (झेंपते हुए) ! ही ! ही ! आप तो मुझ से भी आगे बढ़ गईं ! आप को खाना पकाना तो आता ही होगा ?

चकोरी : जी हाँ, मैं चटनी बनाना खूब जानती हूँ, एक बार एक लड़के ने

मुझ से कुछ कह दिया था, उस की मैंने वह चटनी बनाई कि बच्चू को जन्म भर स्वाद आता रहेगा ।

चांद : अच्छा, मान लीजिए मेरी कमीज का बटन टूट जाए, तो आप क्या-क्या करेंगी ?

चकोरी : दूसरा बटन टाँक दूँगी ।

चांद : तो फिर जरा दिखाइए तो आप कैसे बटन टाँकती हैं ?

(चांद एक बटन, सुई, डोरा चकोरी को देता है । चकोरी बटन टाँकने उगती है । सुई कभी चाँद के सीने में, कभी गाल पर चुभ जाती है और चांद चीख उठता है ।)

चांद : बस, रहने दीजिए । मैं बगैर बटन के अच्छा हूँ । आप को संगीत का भी शौक है ?

चकोरी : बहुत, मैं तो रेडियो के पीछे दीवानी हूँ ।

चांद : मेरा मतलब है आप खुद भी कुछ गा-बजा लेती हैं ?

चकोरी : हाँ, हाँ, मैं ग्रामोफोन बड़ा अच्छा बजा लेती हूँ ।

चांद : खूब ! कुछ नाच का भी शौक है ?

चकोरी : हाँ, पर नाच नचाने का ज्यादा शौक है ।

चांद : (हँसकर) इस समय तो आप का नाच ही हो जाए ।

चकोरी : लेकिन कोई तबलिया तो है ही नहीं ।

चांद : वाह, आइए, तबला मैं बजाता हूँ ।

चकोरी : अच्छी बात है ।

(चकोरी घुंघरू बाँधती है ; चांद तबला ले कर बैठ जाता है ।)

चांद : कौन सा ठेका बजाऊँ ?

चकोरी : तीन ताल ।

(चाँद तबला बजाना शुरू कर देता है और चकोरी कत्थक जैसा कुछ नाचने लगती है । दोनों ही गलत-सलत बजा और नाच रहे हैं । चकोरी यकायक झुँझला कर रुक जाती है ।)

चकोरी : यह आप क्या बजा रहे हैं ?

चांद : तबला ।

चकोरी : ओह, मैंने कहा कौन सा ठेका कहा है ?

चांद : तीन ताल ।

चकोरी : न जाने कौन सा ऊटपटाँग ठेका बजा रहे हैं ! सम ठीक नहीं आ रहा है, लय भी गड़बड़ है ।

चांद : तबला तो ठीक ही बज रहा है, आप ताल में नहीं हैं ।

चकोरी : मैं ताल में नहीं हूँ ? मैंने अच्छे-अच्छे तबलियों के छक्के छुड़ा दिए हैं ।

(चकोरी झुँझला कर घुँघरू उतार कर फेंक देती है, चाँद तबला छोड़ कर उठ बैठता है, वह भी झुँझलाया हुआ है ।)

चकोरी : अभी कुछ और पूछना बाकी रह गया है ?

चांद : नहीं ।

चकोरी : मुझे भी आप से कुछ पूछना है ।

चांद : पूछिए ।

चकोरी : आप क्या करते हैं ?

चांद : कविता ।

चकोरी : कविता तो बेकार लोग किया करते हैं । आप कहीं नौकरी भी करते हैं ?

चांद : मुझे क्या गरज पड़ी है नौकरी करने की । यहाँ तो घर के रईस हैं ।

चकोरी : घर के रईस ! फिर तो आप की काफी बड़ी जायदाद होगी ?

चांद : सब अपना ही है । जिस किराए के मकान में रहते हैं उसे अपना ही समझते हैं । सरकारी बस में बिना टिकट सफर करते हैं, क्योंकि सरकार अपनी ही है । दोस्तों के जिम्मे काफी मुफ्त पीते हैं, क्योंकि दोस्त भी अपने ही हैं ।

चकोरी : रोटी किस के सिर खाते हैं ।

चांद : पिताजी के सिर, क्योंकि पिताजी अपने ही हैं ।

चकोरी : तो फिर शादी किस के बूते पर करने आए हैं ?

चांद : आप की माँ के बूते पर, क्योंकि वह भी अपनी ही···नहीं, नहीं, क्योंकि वह आप की माँ हैं । और उन्होंने दहेज में तीस हजार रुपए देने का वादा किया है ।

चकोरी : ओह, तो यह बात है ! मुझे नहीं मालूम था । अब तो मैं कभी

यह शादी नहीं होने दूंगी, मुझे भी कसम है ।

चांद : (घबरा कर) हैं ! हैं ! यह आपने इतनी बड़ी कसम इतनी आसानी से कैसे खा ली ? ऐसा अन्याय न कीजिए । मैं एक होनहार कवि हूँ । औरों के मुकाबले मेरा दिल जरा जल्दी टूट जाता है, किसी शायर ने कहा है :

'हमारे शीशए दिल को सम्हाल, कर हाथ में लेना,
नजाकत इस में इतनी है, नजर से जब गिरा, टूटा ।'

मैं आप से सच कहता हूँ, बीस मिनट से मैं आप से प्रेम करने लगा हूँ ।

(प्रभातचंद्र और रजनीदेवी का प्रवेश ।)

प्रभातचंद्र : चांद, क्या बात है ?

चांद : पिताजी, गजब हो गया । इन्होंने कसम खा ली है कि मुझ से शादी नहीं करेंगी ।

प्रभातचंद्र : तुमने जरूर कोई उल्टी-सीधी बात कह दी होगी । खैर, चलो जो कुछ हुआ अच्छा ही हुआ ।

चांद : पिताजी, यह आप क्या कह रहे हैं ! मेरी हालत पर तरस खाइए । मैं इनका (चकोरी की ओर संकेत कर के) वियोग नहीं सह सकता ।

प्रभातचंद्र : तुम दोनों अब साथ ही रहोगे ।

चांद : (प्रसन्न हो कर) सच ? लेकिन कैसे ?

प्रभातचंद्र : (अपनी जेब से चांद वाली नोटबुक निकाल कर) तुम ने इस नोटबुक को अपनी जेब के धोखे में मेरी जेब में डाल दिया था । रजनीदेवी से बातें करते समय जब मैंने इसे अपनी जेब में पाया तो रजनीदेवी ने पूछा कि इस में क्या लिखा है । मैंने वही प्रश्न, जो तुम्हें बताए थे, इनके सामने पढ़ दिए । इन्होंने उन प्रश्नों का बड़ा ही संतोषजनक उत्तर दिया । बस हमारी शादी तय हो गई ।

चांद : आप की शादी ! और मैं ?

प्रभातचंद्र : अब तुम और चकोरी भाई-बहन के समान हो ।

३

नौकर की तलाश

(घर के बाहर का बरामदा)

पत्नी : (आते हुए) अजी, सुनते हो ?

पति : बिलकुल नहीं ।

पत्नी : (पास आ कर) क्या कहा ? तुम मेरी बात भी नहीं सुनना चाहते ?

पति : क्या सुनूँ ! छः महीने से सिवा एक बात के तुम ने कुछ और भी कहा है ? सुनते-सुनते मेरे कान भी पक गए, पर तुम्हारी जबान नहीं थकी ।

पत्नी : देखो, जी, सुबह-ही-सुबह तुम झगड़ा करने लगे ।

पति : और तुम भी तो सुबह-ही-सुबह वही बात ले बैठीं । कई बार कहा कि अगर तुम्हें नौकर की बात कहनी ही है तो रात को सोते वक्त कहा करो, ताकि सुनते-सुनते मैं बीच में ही सो जाया करूँ ।

पत्नी : खुद काम करना पड़े तो यों मजाक में बात न टालते ।

पति : तुम्हारे कहे तो दिन भर निठल्ला ही बैठा रहता हूँ ।

पत्नी : दफ्तर में दो-चार घण्टे कलम घिस ली तो समझने लगे बड़ा भारी काम कर लिया । मेरी तरह बरतन घिसने पड़ें, झाड़ू-बुहारी, खाना पानी करना पड़े सुबह से रात तक, तो एक दिन में पता चल जाए ।

पति : (व्यंग्य से) एक काम तो तुम गिनाना भूल ही गईं । पड़ोसिनों से सारी दोपहर गप्पें हाँकना कितना मुश्किल काम है !

पत्नी : देखो जी, ऐसी बातें करोगे तो मैं मायके चली जाऊँगी ।

पति : चली जाओ, सब कामों से छुट्टी मिल जाएगी ।

पत्नी : कैसे जल्दी कह दिया चली जाओ ! सोचते होंगे चली जाऊँ तो तुम्हें

मुझ से छुट्टी मिल जाए।

पति : मत जाओ।

पत्नी : तो फिर कोई इंतजाम क्यों नहीं करते ?

पति : किस बात का ? तुम्हारे मायके न जाने का ?

पत्नी : नहीं, नौकर का।

पति : एक ही बात है। नौकर का इंतजाम हो जाए तो तुम्हारा यह रोज-रोज मायके जाना भी रुक जाए। लेकिन करूँ क्या ? आजकल नौकर मिलते ही कहाँ हैं ? और मिलते भी हैं तो उनके मिज़ाज नहीं मिलते।

पत्नी : दुनिया को नौकर मिल जाते हैं, एक तुम्हें ही नहीं मिलते।

पति : तुमने दुनिया देखी भी है ?

पत्नी : मैं कुछ नहीं देखना चाहती। बस इस घर में एक नौकर देखना चाहती हूँ।

पति : अच्छा, अगर तुम्हें कोई आपत्ति न हो तो मैं कुछ देर अखबार देख लूँ; इतनी देर तुम जरा चौका-चूल्हा देखो। कुछ चाय-नाश्ते का प्रबन्ध करो। आज इतवार है, थोड़ा आराम मिल जाए तो···

पत्नी : (बात काट कर) जब तक नौकर नहीं मिलता आराम भी नहीं मिल सकता।

पति : अच्छा, तो एक काम किया जाए।

पत्नी : क्या ?

पति : क्यों नहीं दोनों किसी ज्योतिषी को अपनी जन्मपत्रियाँ दिखाएँ।

पत्नी : क्यों ?

पति : यह जानने के लिए कि हमारी किस्मत में नौकर है भी या नहीं ?

पत्नी : (चिढ़ कर) तुम फिर मजाक में बात उड़ा रहे हो ?

पति : बिलकुल नहीं।

पत्नी : और नहीं तो क्या ? छः महीने से मैं कह रही हूँ कि···

पति : और मैं भी तो छः महीने से कह रहा हूँ कि पूरी कोशिश करने के बाद भी कोई ढंग का नौकर मिलता ही नहीं। अच्छा इस दिलचस्प विषय पर फिर कभी फुरसत से बात करेंगे। इस समय तो कुछ चाय-

नाश्ता मिल जाए तो बड़ी मेहरबानी हो। क्या खयाल है ? (हँसता है) तब तक मैं जरा अखबार ही देख लूँ।

पत्नी : (भुनभुना कर) तुम्हारे ऊपर तो किसी बात का असर ही नहीं होता।

पति : (अखबार के पन्ने उलटता है, स्वतः) इतवार का आधा अखबार तो विज्ञापनों से ही भरा रहता है। किसी को वर चाहिए, किसी को वधु; किसी को नौकरी चाहिए तो किसी को नौकर। (चौंक कर अखबार पढ़ते हुए) घरेलू नौकरों के लिए निम्नलिखित पते पर प्रार्थनापत्र भेजिए या मैनेजर से मिलिए। घरेलू नौकर सप्लाई ब्योरो, पेड़ नम्बर पाँच, माया मछंदर रोड। (हँसते हुए) बहुत खूब ! क्या जमाना आ गया है ! यानी कि नौकर को रखने के लिए अब मालिकों को प्रार्थनापत्र लेकर जाना पड़ेगा ?

पत्नी : (आते हुए) कैसा प्रार्थनापत्र ? क्या किसी और नौकरी के लिए प्रार्थनापत्र भेज रहे हो ?

पति : नौकरी के लिए नहीं, नौकर के लिए प्रार्थनापत्र भेजना पड़ेगा। यह देखो अखबार में विज्ञापन निकला है कि जिन्हें नौकर चाहिए वे घरेलू नौकर सप्लाई ब्योरो में प्रार्थनापत्र भेजें या मैनेजर से मिलें।

पत्नी : (प्रसन्न हो कर) अजी, प्रार्थनापत्र में तो बहुत दिन लग जाएँगे, मेरे खयाल से अभी चलकर मैनेजर से मिल लें।

पति : (व्यंग्य से) कहो तो किसी मन्त्री की सिफारिश भी ले चलें।

पत्नी : बातें छोड़ो, जल्दी से चाय पीकर कपड़े पहन लो। तब तक मैं भी तैयार हो जाती हूँ।

पति : तुम किसलिए तैयार होती हो ?

पत्नी : मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगी, नहीं तो तुम वहाँ जरूर कोई गड़बड़ कर दोगे और नौकर मिलने का यह सुनहरा मौका हाथ से निकल जाएगा।

पति : अच्छा, बाबा, जैसी तुम्हारी मरजी।

(अवकाश)

पत्नी : (आते हुए) मैं तैयार हूँ। चलो।

(सड़क के किनारे एक पार्क)

पति : माया मछंदर रोड तो आ गई, पर मुसीबत यह है कि अब यहाँ पेड़

नम्बर ५ कहाँ ढूंढ़ा जाए ? पता भी अजीब है ।

पत्नी : किसी से पूछ लो ।

पति : जिस से पूछोगी वही बेवकूफ बनाएगा । किसी पेड़ के नीचे कोई आदमी भी बैठा हुआ नहीं दिखाई देता । कहीं मैनेजर साहब ने पेड़ के ऊपर तो अपना दफ्तर नहीं खोल रखा ।

पत्नी : चलो फिर पेड़ों पर ही देखो ।

पति : अरे, वह सामने वाले पेड़ के नीचे अभी-अभी एक आदमी आकर बैठा है, शायद वही मैनेजर हो ।

पत्नी : चलो मालूम करें । (चलते हैं)

पति : (मैनेजर से) माफ कीजिएगा, जिस पेड़ के नीचे आप बैठे हैं उस का नम्बर पाँच ही है ?

मैनेजर : हाँ, जी !

पति : माफ कीजिएगा, क्या घरेलू नौकर सप्लाई ब्योरो के मैनेजर आप ही हैं ?

मैनेजर : हाँ, जी ! मैं ही मनेजर हूँ । पर आप बार-बार मुझ से माफी क्यों माँग रहे हैं ?

पति : जी, नहीं, माफी माँगने का तो कोई खास इरादा नहीं था । बात यह है कि हमने आज अखबार में आपका विज्ञापन पढ़ा था, उसी सिल-सिले में हम यहाँ आए हैं ।

मैनेजर : तो आप को नौकर चाहिए ?

पत्नी : जी, हाँ, हमें नौकर की बहुत सख्त जरूरत है, छः महीने से हम नौकर की तलाश में हैं, पर अब तक कोई नहीं मिला ।

मैनेजर : घबराने की कोई बात नहीं । आप लोगों की परेशानी दूर करने के लिए ही हम ने यह ब्योरो खोला है ।

पत्नी : तो फिर जल्दी से एक अच्छा सा नौकर हमारे साथ कर दीजिए ।

मैनेजर : लेकिन पहले कुछ जरूरी बातें तो तय कर ली जाएँ, तभी आप को नौकर सप्लाई किया जा सकता है ।

पति : क्या ?

मैनेजर : पहले तो यह बताइए कि आप को जो नौकर चाहिए उस की कव्वा-

लीफिकेशन क्या-क्या हों ?

पति : कव्वालीफिकेशन ?

मनेजर : हाँ, जी !

पति : जनाब, मैं कुछ समझा नहीं, ओह, अच्छा···समझ गया, आप का मतलब है क्वालीफिकेशन ।

मैनेजर : हाँ, जी !

पत्नी : मैनेजर साहब, नौकर की उमर यही कोई १७-१८ साल की हो और खाना बनाना, चौका बरतन, झाड़ू बुहारी, खाट बिछौना इत्यादि का काम कर सके ।

मैनेजर : तब तो आपको बहुत ही कव्वालीफाइड नौकर चाहिए, एक ही नौकर जो ये सब काम कर सके, आजकल भला कहाँ मिलता है !

पत्नी : तो क्या हमें नौकर नहीं मिल सकेगा ?

मैनेजर : वैसे तो शायद नहीं मिल सके, पर हमारा बोरो जरूर आपको इतना कव्वालीफाइड नौकर सप्लाई कर सकता है । यही तो हमारे बोरो की तारीफ है । लेकिन तनखाह आप को कम-से-कम ६० रुपया देनी होगी ।

पति : अजी, आप भी कमाल करते हैं ! ५५ रुपए में तो ग्रेजुएट बाबू मिल जाता है ।

मैनेजर : मिल जाता होगा, साहब, पर नौकर नहीं मिल सकता ।

पत्नी : ६० रुपए तो बहुत ज्यादा हैं । कुछ कम कर दीजिए, मैनेजर साहब ।

मैनेजर : अच्छा, मेरे कुछ सवाल हैं । अगर आप उनका ठीक-ठीक जवाब दे देंगे तो मैं तनखाह में थोड़ा-बहुत कंसेशन कर दूँगा ।

पति : कैसे सवाल ?

मैनेजर : मैं यह जानना चाहता हूँ कि आप नौकर रखने के काबिल भी हैं या नहीं ?

पति : क्या मतलब ?

मैनेजर : बात यह है, साहब, कि अगर नौकर रखने की आप की कव्वालीफिकेशन अच्छी हुई तो चलो ठीक है । मालिक अच्छा मिल जाए तो नौकर कम तनखाह पर भी काम करने को राजी हो जाता है ।

पति : क्या मजाक है ! यह तो हमारा अपमान है ।

मैनेजर : साहब, अपमान की इस में क्या बात है ? जब मालिक यह जानना चाहता है कि नौकर लायक है या नहीं, तो नौकर को भी यह हक है कि वह देखे कि मालिक कहीं नालायक तो नहीं है ।

पति : मैनेजर साहब, हमें तो आप की कुछ बात जँचती नहीं ।

पत्नी : पर, खैर, आप पूछिए क्या सवाल पूछना चाहते हैं ?

पति : नहीं, नहीं, हमें आपके ब्योरो से कोई नौकर नहीं चाहिए ।

पत्नी : (पति से) देख तो लो यह पूछना क्या चाहते हैं ? बाद में जैसा होगा फैसला कर लेंगे ।

पति : पर···

मैनेजर : हाँ, जी, तो जल्दी फैसला कर लीजिए । मेरे पास ज्यादा वक्त नहीं है, यह सामने से कुछ कुछ और भी केंडीडेट आ रहे हैं । मुझे उनसे भी बात करनी है ।

पत्नी : (मैनेजर से) मैनेजर साहब, आप पूछिए क्या पूछना चाहते हैं ।

मैनेजर : सुबह आप कितने बजे सो कर उठती हैं ?

पत्नी : यही कोई पाँच साढ़े पाँच बजे ।

मैनेजर : नौकर को आप से पहले उठना होगा या बाद में ?

पत्नी : पहले ही उठना होगा ।

मैनेजर : मैंने नोट कर लिया । अब यह बताइए कि आप असली घी-दूध इस्तेमाल करती हैं या नहीं ?

पत्नी : असली घी और एकदम खालिस दूध ।

मैनेजर : नौकर रखने के बाद अगर आपके घर में असली घी बेवजह ही महीने से पहले खत्म होने लगे और खालिस दूध पानी मिला हुआ लगे तो आप अपने मन में यह तो नहीं सोचेंगी कि यह काम नौकर का ही है ?

पत्नी : जरूर सोचूँगी ।

मैनेजर : सिर्फ सोचेंगी ही या कुछ और भी करेंगी ?

पत्नी : नौकर से पूछूँगी भी ।

मैनेजर : सिर्फ पूछेंगी ही या उस पर नाराज भी होंगी ?

पत्नी : अगर यह काम उसका होगा तो नाराज भी जरूर होऊँगी ।

मैनेजर : मैंने आपके जवाब नोट कर लिए हैं। तीसरा सवाल यह है कि नौकर के बाजार से साग, सब्जी लाने पर अगर आपको एकाएक यह पता चले कि सब्जियाँ महँगी हो गई हैं तो, साहब, आप खुद बाजार जा कर ठीक दाम तो मालूम नहीं करेंगे ?

पति : क्यों नहीं करेंगे ?

मैनेजर : मैंने नोट कर लिया है। अब यह बताइए कि आप नौकर को दोपहर में कितने घण्टे की छुट्टी देंगी ?

पत्नी : एक बजे से चार बजे तक।

मैनेजर : अगर नौकर चार के बजाए छः बजे छुट्टी से वापस आए, तो आप को कोई एतराज तो नहीं होगा ?

पत्नी : कभी-कभी की तो कोई बात नहीं, पर रोज ही अगर वह देर से आएगा तो जरूर एतराज होगा।

मैनेजर : हूँ ! अच्छा, मैंने नोट कर लिया। अगर आप के घर कभी कपड़ों की या रुपए-पैसे की या जेवर की चोरी हो जाए तो आप क्या करेंगे ?

पति : पुलिस में रिपोर्ट लिखवाएँगे।

मैनेजर : रपट में आप यह तो नहीं लिखवाएँगे कि आप का शक नौकर पर है।

पति : अगर शक होगा तो ज़रूर लिखवाएँगे।

मैनेजर : यानी आप पूरी गारंटी नहीं दे सकते कि आप नौकर पर शक नहीं करेंगे।

पति : जी, नहीं, इस की गारंटी भला पहले से कौन दे सकता है !

मैनेजर : मैंने इसे भी नोट कर लिया है। अच्छा, अब यह बताइए कि आप के यहाँ मेहमान आते हैं या नहीं ?

पति : मेहमान किस के यहाँ नहीं आते ?

मैनेजर : मेहमानों के आने पर अगर नौकर के पेट में दर्द होने लगे और वह काम न कर सके तो आप क्या करेंगे ?

पति : कुछ दवा वगैरह देंगे।

मैनेजर : और तब भी दर्द बंद न हुआ तो ?

पति : आखिर कभी तो बंद होगा ही।

मैनेजर : अगर मेहमानों के जाने के बाद बन्द हुआ तो आप यह तो नहीं कहेंगे

कि दर्द नहीं हो रहा था, दर्द का वहाना करे पड़ा था ।

पति : जव वेमौके दर्द शुरू हो और ठीक मौके पर वंद हो जाए तो कहना ही पड़ेगा कि यह वहाना ही था ।

मैनेजर : नोट कर लिया, साहव, अव यह वताइए कि आप अपना हजामत का सामान, तेल, कँघा वगैरह ताले में वंद कर के तो नहीं रखते ?

पति : भला इन मामूली चीजों को ताले में वंद कर के कौन रखता है !

मैनेजर : अगर आप को पता चले कि आप की इन मामूली चीजों को कोई और भी इस्तेमाल करता है तो आप वीवीजी से यह तो नहीं कहेंगे कि जरा नौकर पर निगरानी रखना ?

पति : देखिए, जनाव, हमारे घर में सिर्फ मैं ही हूँ जिस के दाढ़ी-मूँछें उगती हैं, सो हजामत मेरे अलावा और कोई वनाता नहीं । रही कंघे की वात तो मेरी बीवी को मुझ से छिपा कर उन्हें इस्तेमाल करने का कोई कारण नहीं । ऐसी हालत में नौकर पर ही निगरानी रखने के लिए कहा जा सकता है ।

मैनेजर : वह भी मैंने नोट कर लिया है ।

पति : अव तो आप काफी वातें नोट कर चुके हैं । क्या अभी आप के सवाल खत्म नहीं हुए ? इतने सवाल तो वड़ी से वड़ी नौकरी की इंटरव्यू में भी नहीं पूछे जाते ।

मैनेजर : वस, साहव, एक आखिरी वात और पूछनी है ।

पति : वह भी पूछ लीजिए ।

मैनेजर : आप को नौकर रखने का कुछ तजुरवा है ?

पति : जी, हाँ, एक साल पाँच महीने का ।

मैनेजर : उस ने नौकरी क्यों छोड़ी ? आप का कसूर क्या था ?

पति : (भिन्ना कर) : कसूर हमारा नहीं, नौकर का था । हर दूसरे तीसरे महीने उसके गाँव से चिट्ठी आ जाती थी कि उसकी माँ मर गई है, वाप मर गया है, भाई मर गया है, वहन मर गई है ; या फिर उस की शादी होने वाली है ।

मैनेजर : तो, साहव, यह तो कोई ऐसी वात नहीं थी कि इस पर आप उसे निकाल देते ।

पति : आप ही बताइए कि जब एक साल पाँच महीने के दौरान में कम से से कम चार बार तो उस के माँ, बाप, भाई, बहन मरे और दो बार उस की शादी हुई और हर बार वह दस बारह दिन की छुट्टी ले कर घर चला गया, तो हमारा काम कब तक चल सकता था !

मैनेजर : साहब, काम तो किसी के बिना रुकता नहीं । आप ने इतनी मामूली सी बात पर उस नौकर को निकाल कर बड़ा जुल्म किया ।

पति : अच्छा, जनाब, जुल्म ही सही । अब आप यह बताइए कि आप के ब्योरो से हमें नौकर मिल सकता है या नहीं ? मिल सकता है तो कम-से-कम तनख्वाह क्या लेगा ?

मैनेजर : कम-से-कम क्या ज्यादा-से-ज्यादा तनखाह पर भी आप को कोई नौकर नहीं मिल सकेगा ।

पत्नी : क्यों ?

पति : (व्यंग्य से) क्या हम नौकर रखने के काबिल नहीं हैं ?

मैनेजर : जी, हाँ, बात तो यही है । आप ने मेरे सवालों के जो जवाब दिए हैं, उन से साफ जाहिर है कि नौकर को आप के घर में न कोई आराम मिल सकता है न कोई सुविधा, और न अपनी मरजी से कुछ करने की आजादी । अब आप ही बताइए इतनी बंदिशों में कौन रहना पसंद करेगा ?

पति : तो वह नौकर क्या हुआ, मालिक हो गया ?

पत्नी : क्या कोई भी तरीका ऐसा नहीं है जो हमें नौकर मिल जाए ?

मैनेजर : एक तरीका तो यही है कि आप नौकर को मालिक की तरह रखें ।

पति : यह तो हमें बिल्कुल भी मंजूर नहीं है ।

मैनेजर : तो फिर और क्या हो सकता है ?

पत्नी : मैनेजर साहब, हमारी कुछ तो मदद कीजिए ।

मैनेजर : मैं आप को एक सलाह दे सकता हूँ । आप की तरह कुछ और लोग भी मेरे पास आए थे जो नौकर रखने के काबिल नहीं थे । उन्हें मेरी वह सलाह बहुत पसंद आई ।

पत्नी : तो हमें भी बता दीजिए ।

मैनेजर : बता दूँगा, पर आपको उसकी फीस दस रुपए देनी होगी ।

पति : और जो हमें आप की सलाह पसंद नहीं आई तो ?
मैनेजर : यह हो ही नहीं सकता ।
पत्नी : यह लीजिए फीस के रुपए, अब बताइए ।
मैनेजर : मेरे ख्याल से आप को चाहिए कि अपने नौकर आप खुद ही बन जाएँ ।

४

तुरपचाल

(कपड़े की दुकान)

लाला जी : (प्रसन्न होते हुए ग्राहक से) आइए, बाबू साहब। आइए। आज तो बड़े दिनों में दर्शन दिए।

बाबू जी : (कुछ नाराज हो कर) बस अब आखिरी बार दर्शन देने आया हूँ।

लाला जी : राम, राम ! ऐसी बुरी बात सुबह ही सुबह क्यों मुँह से निकालते हैं ! भगवान करे आप सौ वर्ष जिएँ और रोज ही दर्शन दें।

बाबू जी : लाला जी, आप यह न समझिए कि मेरा आखिरी वक्त आ गया है। मरूँगा तो आप के बाद ही। लेकिन अब आगे से कभी आप की दुकान पर नहीं आऊँगा।

लाला जी : ऐसी क्या बात हो गई, बाबू साहब ? क्या हम से नाराज हो गए हैं ?

बाबू जी : नाराज होने की तो बात ही है। मैंने कसम खा ली है कि आगे से आप की दुकान से कभी कपड़ा नहीं खरीदूँगा।

लाला जी : क्यों, बाबू साहब ? हम ने तो हमेशा आप को बढ़िया माल ही दिया है।

बाबू जी : आप की बात का भरोसा कर के ही मैं हमेशा कपड़ा ले जाता था, लेकिन इस बार आपने एकदम घटिया माल दिया है।

लाला जी : राम ! राम ! कैसी बातें करते हैं, बाबू जी ! भला ऐसा कभी हो सकता है कि हमारी दुकान पर किसी को धोखा दिया जाए !

बाबू जी : हुआ है, तभी तो कह रहा हूँ। यह देखिए, इस सूट का कपड़ा

आप की दुकान से ही खरीदा था ।

लाला जी : एक नम्बर चीज दी है, बाबू साहब । सारे शहर में इतना बढ़िया कपड़ा नहीं मिल सकता ।

बाबू जी : बस रहने दीजिए, लाला जी । इस से रद्दी कपड़ा आज तक मैंने नहीं देखा ।

लाला जी : क्या खराबी है इस कपड़े में ?

बाबू जी : आप ने तीन गज कपड़ा दिया था न ?

लाला जी : जी, हाँ, बल्कि एक गिरह ज्यादा ही था ।

बाबू जी : और अब यह चार गिरह कम हो गया है ।

लाला जी : यह कभी नहीं हो सकता । आप हमारा गज नाप कर देख लीजिए—पूरे सोलह गिरह का है ।

बाबू जी : मैं यह नहीं कहता कि आप का गज छोटा है, पर कपड़ा जरूर छोटा हो गया । सूट जब दर्जी ने सी कर दिया तो ठीक था । पर एक बार धुलने के बाद ही सिकुड़ गया ।

लाला जी : तो इस में हमारा क्या कसूर है ? यह तो लाँड्री वाले की नालायकी है कि उस ने सूट को इतना ज्यादा क्यों धोया कि वह सिकुड़ गया ।

बाबू जी : लाला जी, लाँड्री वाला कहता है कि कपड़ा खराब था, इसलिए सिकुड़ गया ।

लाला जी : नहीं, बाबू साहब, ऐसा कभी नहीं हो सकता । यही कपड़ा हमारे मुनीम जी ने अपने दामाद को दिया था । वह तो नहीं सिकुड़ा । (मुनीम से) क्यों, मुनीम जी, आप के दामाद का सूट कहीं सिकुड़ा ?

मुनीम : नहीं, लाला जी, सूट तो नहीं सिकुड़ा, हाँ, दामाद अवश्य सिकुड़ गया ।

लाला जी : भला क्यों ?

मुनीम : इतने बढ़िया कपड़े का सूट उसने पहली बार पहना था, सो बेचारा सहम कर सिकुड़ गया ।

लाला जी : सुना, आप ने बाबू साहब ?

बाबू जी : मैं कुछ सहीं सुनना चाहता, लाला जी ! अब यह सूट मेरे किसी काम का नहीं है । आप इसे वापस ले लीजिए ।

लाला जी : बाबू जी, हमारे तो पुरखों ने आज तक सूट नहीं पहना—हम भला इसे लेकर क्या करेंगे ! आप ही सोचिए ।

बाबू जी : आप इसे लेकर ओढ़ेंगे या बिछाएँगे—यह सोचना आप का काम है, मेरा नहीं ।

लाला जी : बाबू जी, आप तो नाहक नाराज हो रहे हैं । इस कपड़े के हम ने थान के थान बेच डाले । आज तक किसी ने आ कर शिकायत नहीं की कि कपड़ा सिकुड़ गया ।

बाबू जी : तो मैं झूठ बोल रहा हूँ ?

लाला जी : इस का फैसला भला मैं क्या कर सकता हूँ ! वह आप के पड़ोस में वकील साहब रहते हैं—वह भी यही कपड़ा ले गए थे । क्यों, मुनीम जी, ले गए थे न ?

मुनीम जी : हाँ, जी, ले तो गए थे अपने लिए, पर सूट उनका लड़का पहनता है ।

बाबू जी : वकील साहब का सूट भी सिकुड़ गया होगा ।

मुनीम जी : नहीं, बाबू जी, बात यह थी कि जब सूट सिल कर आया तो वकील साहब के लड़के को वह बहुत पसन्द आया । उसने वैसे ही कपड़े का एक सूट बनवा देने के लिए कहा, तो वकील साहब ने उत्तर दिया कि तुम अभी बहुत छोटे हो । जब बड़े हो जाओगे तब सूट बनवा देंगे ।

बाबू जी : फिर ?

मुनीम जी : लड़का तो उस सूट पर इस बुरी तरह लट्टू था कि वह रात भर डंड-बैठक लगाता रहा, और सुबह तक बड़ा हो गया । फिर तो वकील साहब को उसे अपना सूट देना ही पड़ा ।

लाला जी : (हँसते हुए) सुना आप ने, बाबू साहब !

बाबू जी : ऐसी बातों से आप मुझे बेवकूफ नहीं बना सकते, लाला जी । आप को यह सूट वापस लेना ही पड़ेगा ।

लाला जी : आप तो, बाबू जी, अजीब बात करते हैं । हमारा कोई कसूर

हो तो हम उसकी सजा भुगतने को तैयार हैं। लेकिन···

बाबू जी : (क्रोधित) लेकिन-वेकिन कुछ नहीं, लाला जी। या तो आप सूट वापस लीजिए वरना अच्छा नहीं होगा।

मुनीम : आप तो नाराज हो गए, बाबू जी।

बाबू जी : नाराज होने की तो बात ही है।

मुनीम : तो, बाबू जी, ऐसा करो कि चार गिरह कपड़ा जो सिकुड़ कर कम हो गया है, उसके पैसे वापस ले लो। (लाला जी से) क्यों, लाला जी, ठीक है न ?

लाला जी : चलो, ऐसा ही सही।

बाबू जी : ऐसा बिलकुल ही सही नहीं।

मुनीम : पैसे नहीं लेने हैं, तो बाबू जी, चार गिरह कपड़ा और ले जाओ। (लाला जी से) क्यों, लाला जी ठीक है न ?

लाला जी : चलो चार गिरह का घाटा हम ही उठा लेंगे।

बाबू जी : लेकिन चार गिरह का पैबंद लगाने से क्या मेरा सूट बड़ा हो जाएगा ?

मुनीम : अच्छा, तो ऐसा करिए कि आधे-आधे में फैसला कर लीजिए।

बाबू जी : क्या मतलब ?

मुनीम : आधा घाटा आप उठाएँ और आधा लाला जी। (लाला जी से) क्यों, लाला जी, ठीक है न ?

लाला जी : चलो, ऐसा ही सही। बाबू जी हमारे पुराने ग्राहक हैं। इन्हें कोई नाराज थोड़े ही करना है। (बाबू जी से) क्यों, बाबू जी, अब तो आप खुश हैं न ?

बाबू जी : खुश तो बाद में होऊँगा, पहले यह बताइए कि आधे में किस बात का फैसला करना चाहते हैं ?

मुनीम : सूट का आधा-आधा कर लेते हैं—लाला जी कोट वापस ले लें और पतलून बाबू जी अपने पास रख लें।

बाबू जी : नहीं, नहीं, मुझे यह बेतुका फैसला बिल्कुल मंजूर नहीं है। मैं तो पूरा सूट वापस कर के रहूँगा।

लाला जी : बाबू जी, आप तो बड़ा टेढ़ा सवाल कर रहे हैं। अगर हम ऐसे

ही हरेक का सिलासिलाया कपड़ा वापस लेने लगें तो कितने दिन दुकान चलेगी ?

बाबू जी : इसका मतलब तो यह हुआ कि आप सरे बाज़ार ग्राहकों को लूटते रहेंगे ।

लाला जी : नहीं, बाबू जी । ऐसा करेंगे तो कल को जेल की हवा खानी पड़ेगी ।

बाबू जी : लाला जी, भला चाहते हो तो सूट वापस ले कर मेरे दाम लौटा दो, वरना आज ही जेल की हवा खानी पड़ जाएगी ।

लाला जी : लेकिन हम यह कैसे मान लें कि कपड़ा सिकुड़ गया ?

बाबू जी : इस में आश्चर्य की तो कोई बात नहीं है । भीगने से कपड़ा सिकुड़ जाता है, सूखने से लकड़ी सिकुड़ जाती है, सर्दी लगने से आदमी सिकुड़ जाता है, और पैसे देने के नाम से आप का दिल सिकुड़ जाता है । बताइए, मैंने कुछ गलत कहा ?

लाला जी : तुम्हीं बताओ, मुनीम जी । हमारी तो कुछ समझ में नहीं आता ।

मुनीम : मेरी समझ में आ गया, लाला जी । बाबू जी ठीक ही कह रहे हैं । दुनिया में और भी बहुत सी चीजें सिकुड़ जाती हैं ।

बाबू जी : अब माना न आपने । इतनी देर से आप बेकार ही बहस किए जा रहे थे ।

लाला जी : मुनीम जी, फिर क्या सलाह है ?

मुनीम : सूट लेकर बाबू जी के पैसे लौटा दीजिए ।

लाला जी : सोच लो, मुनीम जी ।

मुनीम : सोच-समझ कर ही कह रहा हूँ । (बाबू जी से) हाँ तो, बाबू जी, आप कपड़े के दाम वापस लेना चाहते हैं ?

बाबू जी : जी, हाँ ।

मुनीम : आपने क्या दिया था ?

बाबू जी : सौ रुपए का नोट ।

मुनीम : ठीक है···यह लीजिए अपना नोट ।

बाबू जी : (आश्चर्य से) यह आप क्या दे रहे हैं, मुनीम जी ?

मुनीम : आप का नोट ।

बाबू जी : मैंने सौ रुपए का नोट दिया था, मुनीम जी ।
मुनीम : वही नोट वापस कर रहा हूँ, बाबू जी ।
बाबू जी : यह सौ रुपए का नोट है या दस रुपए का ?
मुनीम : सौ का ही है, बाबू जी । रखे-रखे सिकुड़ कर दस का रह गया है ।
बाबू जी : क्या...क्या ? नोट सिकुड़ गया ?

५

महापुरुष

राज : हैलो, कमल, बड़े दिनों बाद मुलाकात हुई तुम से, यार। कहाँ गायब हो गए थे ? आओ, सामने वाले बाग में पेड़ के नीचे बेंच पर बैठ कर बातें करेंगे।

कमल : कुछ न पूछो, बड़ी दूर-दूर का चक्कर लगा कर आया हूँ।

राज : अच्छा, और यह वेश कैसा बना रखा है तुम ने ? क्या कवि बन गए हो ?

कमल : अरे, कविता तो मैं बचपन से करता था। कई प्रकाशक मेरे पीछे पड़े रहे, पर मैंने उन्हें इस काबिल ही नहीं समझा कि उन्हें अपनी कविताएँ प्रकाशन के लिए दूँ। उस दिन बनारस में एक कवि से छायावाद पर वाद-विवाद हो गया। वैसे तो उन के कई कविता-संग्रह निकल चुके हैं, लोग उन्हें महाकवि भी मानते हैं। लेकिन मैंने कुछ ही मिनटों में उन्हें कायल कर दिया कि छायावाद का वास्तविक अर्थ क्या है, और वह मान गए कि उन्होंने छायावाद को अब तक ठीक से समझा ही नहीं था।

राज : तुम तो, यार, छिपे रुस्तम निकले और सुनाओ कहाँ-कहाँ की सैर की ?

कमल : बम्बई गया था।

राज : वहाँ किसी फिल्म स्टार से भी मिले ?

कमल : मैं भला क्यों किसी से मिलने जाता ! लेकिन मालूम नहीं उन लोगों को कैसे पता चल गया कि मैं आया हुआ हूँ। बस, जनाब, सुबह से रात तक किसी न किसी का ताँता लगा ही रहता था।

राज : अच्छा !

कमल : हाँ, और सब मुझ से यही पूछते थे कि मेरे इतना सफल अभिनेता बनने का रहस्य क्या है ?

राज : अभिनेता और तुम ! मैंने तुम्हें कभी किसी फिल्म में अभिनय करते देखा नहीं ।

कमल : अरे, जिस जमाने में मैं स्टेज पर अभिनय करता था, तुम पैदा भी नहीं हुए थे । आज जो इतने बड़े-बड़े अभिनेता बने फिरते हैं, सब को मैंने ही तो अभिनय करना सिखाया था !

राज : ओह हो ! मुझे पता नहीं था । तब तुम खुद फिल्म लाइन में क्यों नहीं चले गए ?

कमल : बात यह हुई कि एक बार छज्जू महाराज मेरे यहाँ आए ।

राज : वही जो आज बहुत प्रसिद्ध नृत्यकार हैं ?

कमल : हाँ, वही । वह नाचने के लिए खड़े हुए । लेकिन कोई उनके साथ तबला ही नहीं बजा सका । छज्जू महाराज बैठ गए । मैंने कहा, "आप नाच शुरू कीजिए, तबला मैं बजाता हूँ ।" उन्होंने लयकारी दिखाई, मैं साथ-साथ बजाता रहा । जब वह नाच खत्म करने लगे, तो मैंने कहा, "महाराज, अब तक मैंने आप के साथ तबला बजाया, अब जरा आप मेरे तबले के साथ नाचिए ।" मैंने इतनी तेज लय बजाई कि छज्जू महाराज के पैरों ने जवाब दे दिया, और उन्होंने चट मेरे पैर पकड़ लिए । बोले, आज से वह मेरे शागिर्द बन गए ।

राज : यार, तुम तो ग़ज़ब के आदमी निकले, हमें क्या पता था !

कमल : भई, घर की मुर्गी दाल बराबर होती है । तुम ने वह उपन्यास पढ़ा है ?

राज : कौन सा ?

कमल : रानी लक्ष्मीबाई !

राज : हाँ, हाँ, वह तो मथुरालाल शर्मा का बहुत प्रसिद्ध उपन्यास है ।

कमल : हाँ, नाम तो उसी का है ।

राज : क्या मतलब ?

कमल : वास्तव में वह मेरा ही लिखा हुआ है।

राज : तुम्हारा लिखा हुआ ? तो फिर मथुरालाल शर्मा का उस पर नाम कैसे गया ?

कमल : (थोड़ा हँस कर) अरे, वह मेरा बचपन का मित्र है। एक बार मिला तो कहने लगा एक उपन्यास लिखा है, देखो कैसा है ? मैंने उसे पढ़ा तो महज़ बकवास के सिवा उसमें और कुछ नहीं था। उसे तो पता ही नहीं कि उपन्यास कहते किसे हैं। फिर मैंने शुरू से आखिर तक उसे दोबारा लिख कर दिया।

राज : भई, तुम आदमी हो या जादू का पिटारा ?

कमल : (हँसकर) जादू का पिटारा ! तुमने उस जादूगर का नाम सुना है—सोगिया नाशा ?

राज : हाँ, हाँ, मैंने तो उसके जादू के खेल देखे भी हैं। कमाल है !

कमल : बहुत दिनों तक मेरे पीछे पड़ा रहा कि रोपट्रिक सिखा दो। मैंने सोचा कि चलो किसी का भला हो जाएगा।

राज : तो उसे रोप-ट्रिक तुम ने सिखाई है ?

कमल : हाँ, और रोप-ट्रिक ही क्या, मैंने उसे कई खेल सिखाए हैं।

राज : भई, हद हो गई।

कमल : लेकिन लोग भी देखो कितने नाशुक्रे होते हैं ? तुम्हें याद है कि सन् ४२ के आंदोलन में एक प्रसिद्ध नेता जेल से भाग गए थे।

राज : हाँ, हाँ, पुलिस बहुत उनके पीछे पड़ी रही।

कमल : उनके जेल से भागने की सारी योजना मैंने बनाई थी। बाद में वह मेरे ही घर छिपे रहे। एक बार पुलिस को शक हो गया। मैंने चट उनकी तरह अपना रूप धरा और वहाँ से निकल भागा। पुलिस को खूब इधर-उधर चक्कर दिया, और चुपके से अपने घर वापस आ गया।

राज : अरे, खूब !

कमल : लेकिन अब वह नेता मुझे पहचानते भी नहीं। लेकिन सी० आई० डी० वाले भी मुझे मान गए। अब तक उन के बड़े-बड़े अफसर चोर-डाकुओं को पकड़ने में मेरी सलाह लेने आते हैं।

राज : अच्छा, तब तो तुम्हें इन चोर-डाकुओं के बारे में पूरी जानकारी मालूम होती है ।

कमल : अरे भई, हम से जो सलाह-मशवरा लेने आता है, उसे किसी बात के लिए मना नहीं किया जाता । पिछले दिनों जब मैं ग्वालियर में था, तो एक दिन रात को एक आदमी बड़ी हड़बड़ाहट में मेरे कमरे में घुसा । कहने लगा, 'पुलिस उसके पीछे पड़ी है । कहीं छिपा दो । तुम्हारी पनाह में हूँ । मुझे बचाओ ।'

राज : कौन था वह आदमी ?

कमल : तुमने चम्पत डाकू का नाम सुना होगा?

राज : हाँ, हाँ, वह तो बहुत नामी डाकू है ।

कमल : जब उसने मुझ से पनाह माँगी तो मुझे उस पर रहम आ गया । मैंने कहा, 'घबराने की कोई बात नहीं है, तुम मेरी शरण आए हो, मेरे मित्र हो ।'

एक व्यक्ति : (आ कर) आप चम्पत डाकू के मित्र हैं ? मेहरबानी कर के मेरे साथ चलिए ।

कमल : (चौंक कर) तुम कौन हो, जी ?

व्यक्ति : मैं सी० आई० डी० का आदमी हूँ । अब आप मेरे साथ पुलिस थाने चलिए ।

कमल : भई, मेरी बात तो सुनो ।

व्यक्ति : बहुत देर से आप की बातें सुन रहा था । बाकी बातें थाने में होंगी । चलिए ।

६

फ्री लिफ्ट

(कार की आवाज़)

सुरेश : लो, भाई बलवंत, यह चौथी कार भी बिना रुके ही निकल गई, और हमारा हाथ उठा ही रह गया। चलो बस स्टैंड पर ही चल कर खड़े हों।

बलवंत : इस दोपहर में मील भर चलकर बस स्टैंड पर पहुँचना मेरे बस का तो है नहीं। वहाँ भी क्यू में घंटों खड़े रहना पड़ेगा। फिर बस का भी क्या भरोसा! यहीं खड़े रहो, किसी न किसी कार वाले को हम पर दया आएगी।

सुरेश : वह देखो एक और कार आ रही है। इस बार तुम हाथ दो। मेरी तो दोनों बाँहें बुरी तरह दुखने लगी हैं।

(कार की आवाज़)

बलवंत : यह भी निकल गई।

सुरेश : हे भगवान, इस की कार में पंक्चर हो जाए, तब पता चले कि धूप में खड़े होने में क्या मज़ा है?

बलवंत : सुरेश, वह देखो सामने एक कार खड़ी है, चलो पूछें उससे।

सुरेश : चलो।

(अवकाश)

बलवंत : भाई साहब, आप हमें कनाट प्लेस तक छोड़ देंगे? आप की बड़ी कृपा होगी।

व्यक्ति : बड़ी खुशी से। मैं तो सोच ही रहा था कि कोई मिले। लेकिन पहले आपको एक काम करना पड़ेगा।

सुरेश : हाँ, हाँ, अवश्य । कहिए ।

व्यक्ति : मेरी कार में पेट्रोल खत्म हो गया है । धक्का देकर पंप तक ले चलिए । बस कोई एक मील है उस बस स्टैंड के पास ।

बलवंत : इतनी दूर चलने की हिम्मत होती तो बस स्टैंड पर ही न चले जाते । आओ, सुरेश, वापस चलें ।

(अवकाश)

सुरेश : वह देखो सामने से एक और कार आ रही है । रोको ।

(कार की आवाज़)

बलवंत : गई ।

सुरेश : हमारी जिंदगी तो बेकार है ।

(एक कार आ कर रुकती है)

बलवंत : यह देखो मैंने कहा था न कि किसी को हमारे ऊपर अवश्य दया आएगी । सरदार जी, आप हमें कनाट प्लेस तक छोड़ देंगे ?

सरदार जी : आइए, बैठिए ।

बलवंत : धन्यवाद !

सुरेश : बड़ी मेहरबानी होगी आपकी ।

(कार स्टार्ट होकर चलती है और कुछ देर बाद रुकती है)

बलवंत : सरदार जी, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद !

सुरेश : आपको कष्ट तो बहुत दिया ।

सरदार जी : तकलीफ की क्या बात है !

बलवंत : अच्छा, नमस्ते ! चलो, सुरेश ।

सरदार जी : चले कहाँ, बाबू जी ?

बलवंत : कहिए, हमारे योग्य कोई सेवा ?

सरदार जी : सेवा क्या, किराया तो देते जाइए ।

बलवंत : किराया ? आप की तो प्राइवेट कार है न ?

सरदार जी : आपने उस तरफ लगा हुआ मीटर नहीं देखा ? यह टैक्सी है । पाँच रुपए हुए ।

सुरेश : टैक्सी ? लेकिन अपने पास तो सिर्फ बस का किराया ही है ।

७

यों ही मामूली-सा

जीवन : (पुकार कर) शीला ! अरे भई, कहाँ चली गईं ?

शीला : (दूर से) आ रही हूँ । (आती है) कहाँ गए थे ?

जीवन : और सुनो ! पूछती हो कहाँ गया था ! मैं दो घंटे पहले कह कर गया था कि अपने एक दोस्त से अपने लिए एक किराए का खाली मकान का पता पूछने जा रहा हूँ ।

शीला : पूछ आए ?

जीवन : हाँ, और उसकी मोटर भी माँग लाया हूँ वहाँ जाने के लिए । शादी के बाद कल तुम पहली बार आई हो, मकान मिलना बहुत जरूरी है । इसीलिए मोटर माँग कर लाया हूँ ताकि मकान मालिक यह न समझे कि हम छोटे-मोटे आदमी हैं । अच्छा, अब जल्दी चलो ।

शीला : अभी चलती हूँ । जरा पाउडर लगा लूँ ।

जीवन : कल से मैं तुम्हें हर वक्त पाउडर लगाते ही देखता हूँ । तुम्हें और कुछ भी आता है ?

शीला : अच्छा, जी ! क्या समझ रखा है मुझे ?

जीवन : पहले कार में बैठ जाओ, बातें रास्ते में हो जाएँगी ।

शीला : कार मैं चलाऊँगी ।

जीवन : (आश्चर्य से) तुम चला लोगी ? आती है ?

शीला : यह पूछो मुझे क्या नहीं आता ?

(कार स्टार्ट हो कर चलने की आवाज़ ।)

जीवन : हाँ, तो तुम्हें गाना आता है ?

शीला : आता है पर यों ही मामूली सा ।

जीवन : खैर, कोई बात नहीं । नाचना तो अच्छा आता होगा ?

शीला : क्यों नहीं, पर यों ही मामूली सा ।

जीवन : कोई हर्ज नहीं, खाना बनाना तो आता होगा ?

शीला : खाना बनाना तो लड़कियों का खास काम है । पर यों ही मामूली सा ।

जीवन : खैर, खाना तो नौकर भी बना सकता है···अरे, हार्न बजाओ न ! वह सामने आदमी है ।

शीला : तुम समझते हो मुझे हार्न बजाना भी नहीं आता । मैं खुद ही बजाने वाली थी ।

(हार्न)

जीवन : अच्छा, कपड़े सीने तो आते ही होंगे ?

शीला : क्यों नहीं ? हमारे घर में मशीन है, पर यों ही मामूली से आते हैं ।

जीवन : खैर, कपड़े तो दर्जी से भी सिलवाए जा सकते हैं । कम-से-कम अपने साड़ी जम्पर पर इस्तरी तो कर ही लेती होगी ।

शीला : क्यों नहीं ? यों ही मामूली सी कर लेती हूँ ।

जीवन : धोबी थोड़े ही सारे मर गए हैं ! फिक्र की कोई बात नहीं ।

(अवकाश)

शीला : चुप क्यों हो गए ? और पूछो ।

जीवन : अब और रह ही क्या गया ?

शीला : क्यों, अभी तो तैरना जो रह गया है ।

जीवन : अच्छा, तुम्हें तैरना भी आता है ।

शीला : नदी में तो नहीं, पर टैंक में तैर लेती हूँ, यों ही मामूली सा ।

जीवन : डूबने से कोई-न-कोई बचा ही लेता होगा । अच्छा, तुम्हें कुछ पढ़ना-लिखना भी आता है ?

शीला : तुम से तो ज्यादा पढ़ी-लिखी हूँ । पर यों ही मामूली सा ।

जीवन : खैर, शादी तो फिर भी हो ही गई । रोना तो आता ही होगा ?

शीला : यह क्या बेवकूफी का सवाल है ? कुछ और पूछो ।

जीवन : (घबरा कर) अरे···अरे···यह क्या कर रही हो ? सामने वह टाँगा

है, जल्दी ब्रेक लगाओ···अरे, यह पटरी पर···क्यों ? रोको । (जोर से) शीला, तुम्हें कार चलाना भी आता है ?

शीला : हाँ, यों ही मामूली सा । कुछ और पूछो ।

जीवन : पहले मुझे स्टियरिंग पर बैठ जाने दो, फिर पूछूँगा ।

८

चार नुस्खे

(जामा मस्जिद पर एक व्यक्ति जोर-जोर से भाषण करता है)

साहबान, जरा एक मिनट रुक कर मेरी बात सुनते जाइए। मैं जानता हूँ आप लोगों को दफ्तर, दुकान जाने की जल्दी है। पर वहाँ तो आप रोज ही जाते हैं। एक दिन जरा देर से चले जाएँगे, तो कोई हर्ज नहीं होगा। लेकिन मैं यहाँ रोज-रोज नहीं आता, और जो कुछ मैं आज आप को बताऊँगा उस से आप का ही लाभ होगा।

(शोर थोड़ा बढ़ जाता है।)

आप लोग जरा शांत हो जाइए। हाँ, साहबान, लगता है आप लोगों पर मेरी बात का असर हुआ है। आप जानना चाहते हैं मैं क्या बेचता हूँ ? तो, साहबान, सुनिए : मैं न तो तावीज बाँटता हूँ, न दवाएँ बेचता हूँ ; मैं न जादूगर हूँ, न सौदागर। फिर भी मैं आप लोगों की मुराद पूरी कर सकता हूँ। आप के कष्टों को दूर कर सकता हूँ। लेकिन जरा ठहरिए। आप यह न समझ लीजिए कि मैं आप की हर मुराद पूरी कर सकता हूँ या आप के हर कष्ट को दूर कर सकता हूँ। कसम है स्पूतनिक उर्फ नए चाँद की, मैं न किसी देवता का अवतार हूँ और न हकीम लुकमान के खानदान से सम्बन्ध रखता हूँ। मैं आप की तरह ही एक मामूली इनसान हूँ। पर इतना जरूर है कि मेरे पास वह है जो आप लोगों के पास नहीं है। आप जानना चाहेंगे, वह क्या है। बता दूँ ? खैर, जाने दीजिए। जब आप का उस से वास्ता ही नहीं, तो क्या करेंगे जान कर ?

लेकिन मैं देख रहा हूँ आप बगैर पूछे मानेंगे नहीं। अच्छा, साहबान, तो सुनिए : वह जो मेरे पास है और आप के पास नहीं—उसे बोलचाल की भाषा में कहते हैं दिमाग। कहिए, है न यही बात ? अरे, अरे, आप तो बिगड़ उठे। लेकिन

अपना गुस्सा मुझ पर उतारने से पहले मेरी वह बात तो सुन लीजिए जिस के लिए मैंने आप को यहाँ रोका है। अगर उसे सुन कर आप मान जाएँ कि वाकई दिमाग सिर्फ मेरे पास है और आप लोग उस से महरूम हैं, तो अपना गुस्सा आप उसी तरह पी जाइएगा जिस तरह पंजाबी लस्सी पीते हैं, मद्रासी कॉफी पीते हैं, महाराष्ट्री नारियल का पानी पीते हैं और बंगाली जौल उर्फ खालिस पानी पीते हैं।

हाँ, साहबान, तो किस्सा मुख्तसिर यह है कि मैं न तावीज बाँटता हूँ, न दवाएँ बेचता हूँ। मेरे पास तो कुल मिला कर चार नुस्खे हैं—न एक कम, न एक ज्यादा। और उन की कीमत ? कीमत बहुत थोड़ी है। कीमत की मुझे चिंता नहीं। वह आप अपने आप बिना माँगे हँसते-हँसते चुका देंगे।

हाँ, साहबान, तो सुनिए। पहला नुस्खा है उन लोगों के लिए जिन्हें पेट की शिकायत रहती हो, यानी जिन्हें खाना हज़्म न होता हो। खाना खाने पर पेट में दर्द होने लगता हो, खट्टी डकारें आने लगती हों और दिन में कई बार उस नापाक जगह जाना पड़ता हो, जहाँ बस चले तो एक बार भी आप जाना पसंद न करें। आप सोच रहे होंगे कि अभी मैं अपने इस थैले में से कोई गोली या दवा या लक्कड़-हज़्म, पत्थर-हज़्म चूरन निकाल कर आप को बेचना शुरू कर दूँगा। जी, नहीं, मैं इन मामूली इलाजों में विश्वास नहीं करता। कसम है स्पूतनिक उर्फ नए चाँद की, मेरे पास जो नुस्खा है वह अचूक है। उस के इस्तेमाल से आप को शर्त्तिया लाभ होगा। न हो तो कीमत वापस—जो मैंने अभी आप से वसूल नहीं की है। तो बता दूँ वह नुस्खा ? अच्छा, तो सुनिए। अगर आप का खाना हज़्म न होता हो, तो आप खाना खाना ही छोड़ दीजिए।

(हँसी का कहकहा)

हाँ, साहबान, एक नुस्खा मेरे पास उन लोगों के लिए है जो छपास के रोगी हैं। यानी जो लोग लेख लिखते हैं, या किस्से कहानी गढ़ते हैं, या पुरानी या नई कविता करते हैं, या नाटक रचते हैं। लेकिन हर कोशिश के बावजूद न तो उनकी चीजें किसी पत्र-पत्रिका में छपती हैं, न रेडियो से ब्राडकास्ट होती हैं। या तो वे संपादक के अभिवादन व खेद सहित वापस लौट आती हैं या रद्दी की टोकरी में स्थान पाती हैं। यहाँ तक कि मर्द होते हुए भी आपने स्त्री के नाम से अपनी रचनाएँ भेजी हों, फिर भी जालिम संपादकों के दिल पर कोई

असर न हुआ हो, सिफारिशें बेकार साबित हुई हों। मतलब यह कि अगर आप लोग सब तरह की कोशिशें करके हार गए हों, तो इस छपास के रोग से छुटकारा पाने के लिए मेरे नुस्खे को एक बार जरूर आजमाएँ। कसम है स्पूतनिक उर्फ नए चाँद की, हमेशा के लिए आप इस रोग से मुक्ति पा जाएँगे। तो, साहबान, वह नुस्खा है—आप स्वयं संपादक बन जाइए।

मेरा तीसरा नुस्खा! मेरा तीसरा नायाब नुस्खा उन दुखी भाइयों के लिए है जो अपनी बीवी से परेशान हैं। या यों कहिए कि बीवी से नहीं, उसकी एक इच्छा से परेशान हैं।

आप सब कुछ जानते हुए भी अनजान की तरह पूछेंगे कि आखिर आपकी बीवी की वह कौन सी इच्छा है। बताने से पहले मैं उसका कारण बताता हूँ। कारण है कि आप अपनी बीवी की छोटी-मोटी इच्छाओं को पूरा नहीं कर पाते, तो वह एक बहुत बड़ी इच्छा प्रकट कर देती है, और उसे पूरा करवाने के लिए सत्याग्रह जैसे जबरदस्त ग्रह के चक्कर में आपको फँसा देती है। लेकिन अगर आप बीवी की उस जबरदस्त इच्छा को पूरा करते हैं तो आप का अपना जीवन दुखी बन जाता है। इस विकट स्थिति से आपको निकालने में मेरा नुस्खा अकसीर साबित होगा। तो मैं कह रहा था कि आप की बीवी की वह जबरदस्त इच्छा, जो अपनी छोटी-मोटी इच्छाओं के पूरा न होने पर वह प्रकट करती है, वह है मायके जाने की इच्छा। कहिए, है न कितनी जालिम इच्छा, जिसे पूरा करने पर आप का जीवन दुखी बन जाएगा?

तो, साहबान, ऐसे दुखी भाइयों से मैं कहूँगा कि वे मेरा नुस्खा आजमा कर देखें। कसम है स्पूतनिक उर्फ़ नए चाँद की, उससे आप की बीवी की इच्छा भी पूरी हो जाएगी और आप का जीवन भी दुखी नहीं बनेगा, बल्कि और सुखी हो जाएगा। तो, साहबान, आँख बंद करके आप अपनी बीवी को मायके भेज दीजिए और इसके साथ ही आप भी अपने ससुर के घर जमाई बन जाइए।

(ज़ोर का कहकहा)

अब मेरे पास एक ही नुस्खा और बचा है। इस का संबंध उन हज़ारों लोगों से है जो आज के इस घासलेटी युग में एक ऐसी नामुराद बीमारी के शिकार हैं जिसे देख कर अन्य व्यक्ति उन से सहानुभूति रखने के बजाए उन की खिल्ली उड़ाते हैं, उन पर हँसते हैं। पहले यह बीमारी बूढ़ों को ही होती थी,

अब जवान भी एक बड़ी संख्या में इस के शिकार होने लगे हैं। इस बीमारी से छुटकारा पाने के लिए आप ने क्या न किया होगा, लेकिन बेकार हुआ होगा। ऐसी बेहूदा बीमारी से भला कौन परेशान न होगा! लेकिन मैं कहता हूँ कि अब आप को और अधिक परेशान होने की जरूरत नहीं है। कसम है स्यूतनिक उर्फ नए चाँद की, मेरे नुस्खे का इस्तेमाल करने से कोई आप की खिल्ली नहीं उड़ा सकेगा, कोई आप पर हँस नहीं सकेगा। मैं फिर कहता हूँ कि न मैं डाक्टर हूँ, न हकीम, न वैद्य। लेकिन जहाँ तक इस नामुराद बीमारी का संबंध है, मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि मेरे नुस्खे का असर न हो तो आप मुझे देश-निकाला दे सकते हैं—मैं बड़ी खुशी से आप के खर्चे पर विदेश यात्रा करने को तैयार हूँ। तो, साहबान, उस नामुराद बीमारी के लिए मेरे नुस्खे को आप बेखटके इस्तेमाल कीजिए। लीजिए, मैं आप को अपना नुस्खा बताता हूँ··· लेकिन ठहरिए, मैंने बीमारी का नाम तो बताया ही नहीं। हाँ, तो उस का नाम है गंजापन—यानी सिर के बाल नामालूम तरीके से चुपके-चुपके गायब होने शुरू हो जाते हैं, और इस के लिए जो नुस्खा मैं आप को बता रहा हूँ, वह यह है कि आप अपने गंजे सिर पर टोपी पहन लीजिए।

(जोर का कहकहा)

अब आप लोग मेरे ये चारों नुस्खे आज़मा कर देखिए और इन की कीमत? कीमत आप ने अदा कर दी है—अपने कहकहों से।

९

उतार-चढ़ाव

सतीश : अरे जीवन, तुम ! खूब मिले, यार !

जीवन : ओह, सतीश ! कहो, भई, कहाँ हो आजकल ? तुम से मिले तो बरसों हो गए ।

सतीश : बंबई में हूँ । फिल्म डाइरेक्टर बन गया हूँ ।

जीवन : अच्छा ! तब तो तुम्हारे बड़े मज़े रहते होंगे ?

सतीश : हाँ, भगवान की दया से अच्छी गुजरती है । तुम सुनाओ, तुम्हारे क्या हालचाल हैं ?

जीवन : इन पाँच सालों में न जाने मेरे जीवन में कितने उतार-चढ़ाव आए । दुनिया कहाँ से कहाँ पहुँच गई, पर मैं वहीं का वहीं हूँ । मुझे खुशी है कि मेरा दोस्त जीवन में उन्नति कर रहा है । शादीवादी तो कर ली होगी ?

सतीश : शादी करने की फ़ुरसत ही नहीं मिलती । सुबह से आधी-आधी रात तक स्टूडियो में घिरा रहता हूँ । घर आ कर सो जाता हूँ । बीवी से क्या सपनों में बात करूँगा ? तुम ने तो शादी कर ही ली होगी ?

जीवन : तुम्हें शादी करने का अवकाश नहीं, मुझ में इतनी सामर्थ्य नहीं । मुझ से भला कौन लड़की शादी करेगी ?

सतीश : क्यों इतने निराश होते हो ? ज़िन्दगी में दुख-सुख तो लगा ही रहता है । अच्छा, आओ, आज तुम मेरे साथ डिनर खाना ! इसी होटल में चलेंगे । लिफ्ट किधर है ?

जीवन : यह रही सामने । चलो, पहुँचा दूँ ।

(लिफ्ट चढ़ने की आवाज़)

सतीश : तुम ने बताया नहीं आजकल क्या कर रहे हो ?

(लिफ्ट रुकती है)

जीवन : वह रहा सामने दरवाजा ।

सतीश : अरे, तुम खड़े क्यों रह गए ? आओ न ?

जीवन : मुझे तो वापस जाना है ।

सतीश : कहाँ ?

जीवन : नीचे । मैंने कहा नहीं कि मेरे जीवन में हमेशा उतार-चढ़ाव आते रहते हैं । मैं लिफ्टमैन हूँ ।

(लिफ्ट उतरने की आवाज़)

१०

तलाक

(चाँदनी रात में पेड़ के नीचे)

रंजना : कुमार !

कुमार : हूँ !

रंजना : क्या सोच रहे हो ?

कुमार : कुछ नहीं ।

रंजना : कुछ तो, तुम्हें मेरी कसम !

कुमार : हाय, अपनी कसम न खिलाओ ।

रंजना : फिर बताओ क्या सोच रहे हो ?

कुमार : यही कि अगर हमेशा तुम इसी तरह मेरे सामने बैठी रहो और मैं तुम्हें देखता रहूँ तो कितना अच्छा हो ?

रंजना : लेकिन, कुमार, यह कैसे संभव है ?

कुमार : क्यों ? क्या तुम्हें इस तरह मेरे सामने बैठे रहना अच्छा नहीं लगता ?

रंजना : अच्छा तो लगता है, लेकिन हमेशा तो बैठे रहना संभव नहीं ।

कुमार : क्या कोई नाराज़गी है, रंजना ?

रंजना : नहीं, नाराज़गी की बात नहीं, मजबूरी है ।

कुमार : मजबूरी कैसी ? मैं कहता हूँ, माता-पिता, समाज या दुनिया वाले— किस की मजाल है जो तुम्हें मेरी आँखों के सामने से हटा सके ।

रंजना : वह तो ठीक है, लेकिन फिर भी मैं हमेशा इसी तरह तुम्हारे सामने नहीं बैठी रह सकती ।

कुमार : लेकिन क्यों ?

रंजना : क्या मैं कभी चलूँ-फिरूँगी नहीं ?

कुमार : तो क्या हुआ ? मैं फिर भी तुम्हारी तरफ देखता रहूँगा ।

रंजना : क्या तुम कभी सोओगे नहीं ?

(अवकाश)

रंजना : कुमार !

कुमार : हूँ !

रंजना : क्या सोच रहे हो ?

कुमार : कुछ नहीं ।

रंजना : कुछ तो, तुम्हें मेरी कसम !

कुमार : हाय, अपनी कसम न खिलाओ ।

रंजना : फिर बताओ क्या सोच रहे हो ?

कुमार : जब मैं दफ्तर से थका-माँदा लौट कर आऊँगा तो तुम सजसजा कर मुसकराते हुए मेरा स्वागत करोगी न ?

रंजना : क्यों नहीं ! बल्कि मैं तो तुम्हारे दफ्तर जाते ही सजना-सँवरना शुरू कर दूँगी और सारा दिन तुम्हारी प्रतीक्षा में दरवाजे पर ही खड़ी रहूँगी ।

कुमार : नहीं, नहीं, ऐसा न करना ।

रंजना : क्यों ?

कुमार : तुम थक जाओगी ।

रंजना : तुम्हारे लिए मैं क्या नहीं कर सकती !

कुमार : सच ?

रंजना : हाँ ।

कुमार : और जो मानो मुझे किसी दिन दफ्तर से आने में देर हो गई ?

रंजना : तो मैं उदास हो कर विरह का कोई गीत गाने लगूँगी ।

कुमार : और तब भी मैं नहीं आया तो ?

रंजना : तो मैं दूसरा गीत गाने लगूँगी जो पहले वाले से भी ज्यादा दुःख भरा होगा ।

कुमार : फिर भी मैं नहीं आया तो ?

रंजना : तो फिर मैं अपने आँसू पोंछ लूँगी, दरवाजे अंदर से बंद कर लूँगी और सो जाऊँगी ।

कुमार : फिर मैं आ कर दरवाजा खटखटाऊँगा और धीरे से पुकारूँगा,,

'रंजना !' तुम चौंक कर उठ बैठोगी और जल्दी से आ कर दरवाजा खोलोगी ।

रंजना : ऊँ हुँ ! न मैं चौंक कर उठूंगी, न जल्दी से आ कर दरवाजा खोलूंगी ।

कुमार : क्यों ? क्या मुझ से रूठ जाओगी ?

रंजना : हाँ ।

कुमार : अच्छा, तो मैं माफी माँग लूंगा । कहूँगा, 'क्या करूँ—दफ्तर में इतना काम था कि दम मारने की भी फुरसत नहीं मिली ।' फिर तो माफ कर दोगी न ?

रंजना : नहीं ।

कुमार : क्यों ?

रंजना : क्योंकि मैं समझ जाऊँगी कि तुम उस समय दफ्तर से नहीं, बल्कि सिनेमा से लौट कर आए हो ।

(अवकाश)

कुमार : रंजना !

रंजना : हूँ !

कुमार : क्या सोच रही हो ?

रंजना : कुछ नहीं ।

कुमार : कुछ तो, तुम्हें मेरी कसम !

रंजना : हाय, अपनी कसम न खिलाओ ।

कुमार : फिर बताओ क्या सोच रही हो ?

रंजना : मैं अपने हाथ से तुम्हारे लिए खाना बनाऊँगी । बताओ, तुम्हें क्या-क्या अच्छा लगता है ?

कुमार : रोटी, दाल, सब्जी—और क्या ?

रंजना : ऊँ हुँ ! ये तो सब मामूली चीज़ें हैं ।

कुमार : फिर तुम्हीं बताओ क्या बना कर खिलाओगी ?

रंजना : मैं क्या बताऊँ ? जो तुम कहोगे वही बनाऊँगी ।

कुमार : नहीं, जो तुम बनाओगी वही मैं खाऊँगा ।

रंजना : अच्छा, तो फिर मैं तुम्हें ऐसे बढ़िया-बढ़िया पकवान बना कर खिलाऊँगी कि तुम उँगली चाटते रह जाओगे ।

कुमार : क्या-क्या पकवान बनाने आते हैं तुम्हें ?

रंजना : यह पूछो क्या-क्या नहीं आते ?

कुमार : फिर भी दो चार के नाम तो बताओ ।

रंजना : सोहन हलुआ, रसगुल्ले, पिस्ते की बरफी—अब कहाँ तक नाम गिनाऊँ ।

कुमार : तुम सोहनहलुआ भी बना लेती हो ?

रंजना : हाँ, क्यों नहीं ! इस में क्या मुश्किल है ?

कुमार : तब तो कमाल है !

रंजना : उस दिन छोटे भाई की सालगिरह की पार्टी में मैंने ही तो सोहन-हलुआ बनाया था । तुम ने भी तो खाया था ।

कुमार : अच्छा, वह तुम ने बनाया था ?

रंजना : क्यों ?

कुमार : तभी !

रंजना : तभी क्या ?

कुमार : मैं शहर भर में हलवाइयों की दुकानों के बेकार ही चक्कर काटता रहा । किसी भी दुकान पर मुझे वैसा सोहनहलुआ नहीं मिला ।

रंजना : मिलता भी कैसे ?

कुमार : अच्छा ही हुआ जो न मिला ।

रंजना : क्यों ?

कुमार : उसे इनाम देना पड़ता ।

रंजना : इनाम तो मुझे मिलना चाहिए । लाओ अब दे दो ।

कुमार : हाँ, मिलना तो तुम्हें ही चाहिए । लेकिन मैं तुम्हें नहीं दे सकता ।

रंजना : क्यों ?

कुमार : जो इनाम मैं उसे देना चाहता था वह तुम्हारे लिए उपयुक्त नहीं है ।

रंजना : आखिर क्या इनाम देना चाहते थे उसे ?

कुमार : मैं उस के सारे दाँत तोड़ना चाहता था, क्योंकि उस दिन जो सोहन-हलुआ खाया, तो अब तक मेरे चार दाँत हिल रहे हैं ।

(अवकाश)

रंजना : कुमार !

कुमार : हूँ !

रंजना : क्या सोच रहे हो ?

कुमार : कुच नहीं ।

रंजना : कुछ तो, तुम्हें मेरी कसम !

कुमार : हाय, अपनी कसम न खिलाओ ।

रंजना : फिर बताओ क्या सोच रहे हो ?

कुमार : मैं रोज तुम्हारे लिए एक नई साड़ी लाया करूँगा ।

रंजना : सच ?

कुमार : हाँ, रंजना । साड़ी ही क्यों—मैं रोज तुम्हारे लिए नए-नए डिजाइन की सैंडिलें भी लाया करूँगा ।

रंजना : तुम कितने अच्छे हो, कुमार !

कुमार : मैं तो तुम्हें हर प्रकार से सुखी रखना चाहता हूँ । साड़ी और सैंडिलें ही क्यों—रोज तुम्हारे लिए क्रीम, पाउडर, रूज़, लिपस्टिक, इत्र, तेल, साबुन, कंघा, चुटीला और चूड़ियाँ भी लाया करूँगा ।

रंजना : इतनी सारी चीजें ?

कुमार : हाँ, रंजना । साड़ी, सैंडिलें, क्रीम, पाउडर, रूज़, लिपस्टिक, इत्र, तेल, साबुन, कंघा, चुटीला, और चूड़ियाँ ही क्यों—मैं रोज तुम्हारे लिए कोई न कोई सोने का ज़ेवर भी लाया करूँगा । तुम्हें ज़ेवरों का शौक है न ?

रंजना : हाँ, हाँ, बहुत ज्यादा ।

कुमार : साड़ी, सैंडिलें, क्रीम, पाउडर, रूज़, लिपस्टिक, इत्र, तेल, साबुन कंघा, चुटीला, चूड़ियाँ और सोने के जेवर ही क्यों—मैं रोज़ ही तुम्हारे लिए हीरे, मोती, पन्ने और नीलम—एक से एक बढ़िया जवाहरात भी लाया करूँगा ।

रंजना : ओह, कुमार, तुम क्या मुझे इतना अधिक प्रेम करते हो ?

कुमार : हाँ, रंजना ! यही नहीं—तुम जो कहोगी मैं तुम्हारे कदमों में ला कर रख दूँगा ।

रंजना : इन सब चीज़ों को खरीदने में तो बहुत ज्यादा खर्च हो जाएगा ।

कुमार : कोई परवाह नहीं, रंजना । मैं तुम्हारे लिए क्या कुछ नहीं कर सकता !

रंजना : सोच लो ।

कुमार : इस में सोचने-समझने की बात ही क्या है ? रंजना, तुम नहीं जानतीं कि एक बार मैंने जो कह दिया, वह अवश्य पूरा होगा ।

रंजना : लेकिन, कुमार, एक बात मैं जरूर जानती हूँ ।

कुमार : क्या ?

रंजना : रोज-रोज ये सब चीज़ें खरीद सको—इतनी तो तुम्हारी तनख्वाह भी नहीं होगी ।

(अवकाश)

कुमार : रंजना !

रंजना : हूँ !

कुमार : क्या सोच रही हो ?

रंजना : कुछ नहीं ।

कुमार : कुछ तो, तुम्हें मेरी कसम !

रंजना : हाय, अपनी कसम न खिलाओ ।

कुमार : फिर बताओ क्या सोच रही हो ?

रंजना : तुम मुझे क्या कह कर बुलाओगे ?

कुमार : शादी के पहले वर्ष कहूँगा, 'ए जी ! ओ जी !' दूसरे वर्ष कहूँगा, 'मुन्ने की माँ !' तीसरे वर्ष कहूँगा, 'मुन्ने-मुन्नी की माँ !' चौथे वर्ष कहूँगा, 'मुन्ने-मुन्नी टुन्ने की माँ !' पाँचवें वर्ष कहूँगा, 'मुन्ने-मुन्नी टुन्ने-टुन्नी की माँ !' छठे वर्ष कहूँगा...

रंजना : देखो, जी, झगड़ा हो जाएगा ।

कुमार : क्यों ? इसमें झगड़े की क्या बात है ?

रंजना : झगड़े की नहीं, तो क्या प्यार की बात है ?

कुमार : और नहीं तो क्या ? मुन्ना-मुन्नी टुन्ना-टुन्नी तो हमारे प्यार के प्रतीक होंगे ।

रंजना : मुझे नहीं चाहिए ।

कुमार : देखो, रंजना । बच्चों के बिना घर सूना लगता है ।

रंजना : सूना क्यों लगेगा ? मैं जो होऊँगी घर में ।

कुमार : वह तो ठीक है । पर तुम बच्चों की जगह थोड़े ही ले सकती हो ?

रंजना : क्यों नहीं ले सकता ?

कुमार : ओह, अब तुम्हें कैसे समझाऊँ ? मान लो मैं चाहता हूँ कि बच्चों को कंधे पर चढ़ा कर सैर कराऊँ। अब तुम्हीं बताओ उन की जगह मैं तुम्हें तो कंधे पर चढ़ा कर सैर नहीं करा सकता। या मान लो मैं घोड़ा बन कर बच्चों को अपनी पीठ पर बैठाना चाहता हूँ। बताओ उनकी जगह तुम्हें कैसे पीठ पर बैठा सकता हूँ ?

रंजना : मैं नहीं बोलती तुम से।

कुमार : क्यों ?

रंजना : बस कह दिया मैंने।

कुमार : तुम तो खामख्वाह नाराज हो गईं, रंजना।

रंजना : नाराज होने की तो बात ही है। तुम्हें मुझ से ज्यादा बच्चे प्यारे हैं, तो उन्हीं के साथ रहो। मैं जा रही हूँ।

कुमार : जाना चाहती हो तो जाओ। जब तक तुम लौट कर आओगी, मैं सामने पार्क में बच्चों के साथ खेलता रहूँगा।

(अवकाश)

रंजना : कुमार !

कुमार : हूँ !

रंजना : क्या सोच रहे हो ?

कुमार : कुछ नहीं।

रंजना : कुछ तो, तुम्हें मेरी कसम !

कुमार : हाय, अपनी कसम न खिलाओ।

रंजना : फिर बताओ क्या सोच रहे हो ?

कुमार : न तो मैं हमेशा तुम्हें देख सकूँगा।

रंजना : हाँ, और न मैं तुम्हारे दफ्तर से आने पर सज-सँवर कर तुम्हारा स्वागत कर सकूँगी।

कुमार : हाँ, और न मैं तुम्हारा बनाया हुआ सोहनहलुआ खा सकूँगा।

रंजना : हाँ, और न मैं तुम्हारे उपहारों के दर्शन कर सकूँगी।

कुमार : हाँ, और न मैं तुम्हें 'मुन्ने-मुन्नी टुन्ने-टुन्नी की माँ' कह कर बुला सकूँगा।

रंजना : फिर क्या होगा ?

कुमार : झगड़ा होगा ।
रंजना : कौन करेगा झगड़ा ?
कुमार : तुम करोगी ।
रंजना : नहीं, तुम करोगे ।
कुमार : (कुछ तेज होकर) नहीं, तुम करोगी ।
रंजना : (और भी तेज होकर) नहीं, तुम करोगे ।
कुमार : (उससे भी तेज होकर) मैं कहता हूँ, झगड़ा तुम करोगी—तुम !
रंजना : (उससे भी तेज होकर) मैं कहती हूँ, झगड़ा तुम करोगे—तुम !
कुमार : (क्रोधित) स्त्रियाँ स्वभाव से ही झगड़ालू होती हैं ।
रंजना : (क्रोधित) पुरुष स्वभाव से ही ज़ालिम होते हैं ।
कुमार : (क्रोधित) मैं कहता हूँ, तुमने एक शब्द भी मुँह से निकाला तो अच्छा न होगा !
रंजना : (क्रोधित) मैं कहती हूँ, अगर तुमने मुझ से कुछ कहा तो बस देख लेना !
कुमार : (क्रोधित) क्या करोगी तुम ?
रंजना : (क्रोधित) मैं तुम्हें तलाक दे दूँगी ।
कुमार : (क्रोधित) उस से पहले मैं तुम्हें तलाक दे दूँगा ।
रंजना : (क्रोधित) मैंने तुम्हें तलाक दे भी दिया ।
कुमार : (क्रोधित) मैंने भी तुम्हें तलाक दे दिया ।
रंजना : (शांत) ठहरो ! तुम अभी तलाक नहीं दे सकते ।
कुमार : (शांत) तो तुम भी अभी नहीं दे सकतीं ।
रंजना : हाँ, कोई भी नहीं दे सकता ।
कुमार : क्यों ?
रंजना : अभी हमारी शादी ही कहाँ हुई है ?

११

इण्टरव्यू

बाबू : मैं अन्दर आ सकता हूँ, श्रीमान् जी ?

अफसर : आइए, बैठिए ।

बाबू : धन्यवाद, श्रीमान् जी !

अफसर : आपका ही नाम श्री गौरीशंकर है ?

बाबू : जी हाँ, श्रीमान् जी, मेरा पूरा नाम गौरीशंकर 'कुलबुलाहट' है ।

अफसर : जी, हाँ, गौरीशंकर 'कुलबुलाहट'—यही आपने प्रार्थनापत्र में भी लिखा है । गौरीशंकर तो समझ में आता है, लेकिन यह 'कुलबुलाहट' क्या है ?

बाबू : श्रीमान् जी, यह मेरा उपनाम है ।

अफसर : ओह, समझा ! क्या आप कवि हैं ?

बाबू : जी, हूँ तो नहीं, लेकिन कविता करने की कभी-कभी बड़ी कुलबुलाहट होती है, इसलिए यही उपनाम रख लिया कि शायद कभी यह उपनाम अपना असर लाए और कविता करने की मेरी कुलबुलाहट पूरी हो जाए ।

अफसर : देखिए, गौरीशंकर 'कुलबुलाहट' जी, वैसे मुझे आप की कुलबुलाहट से कोई एतराज़ नहीं होना चाहिए, लेकिन...

बाबू : लेकिन क्या, श्रीमान् जी ?

अफसर : आपने मेरे दफ्तर में क्लर्की की नौकरी के लिए प्रार्थनापत्र भेजा है और उसी के लिए आप इस समय इण्टरव्यू के लिए आए हैं ।

बाबू : जी, हाँ, आपकी कृपा हुई तो···

अफसर : यही तो डर है मुझे कि अगर मैंने आप पर कृपा कर दी तो मुझे

अपना दफ्तर बंद न करना पड़ जाए।

बाबू : इस डर का कारण क्या है, श्रीमान् जी ?

अफसर : कारण है आप की कुलबुलाहट।

बाबू : वह कैसे, श्रीमाव् जी ?

अफसर : दफ्तर के समय में कहीं आप को कुलबुलाहट होने लगी तो आप कविता के रस में डूब कर अपनी कुलबुलाहट मिटाने लगेंगे। उस के बाद आप दफ्तर के दूसरे बाबुओं को जमा कर के उन्हें अपनी कुलबुलाहट सुनाने लगेंगे। नतीजा यह होगा कि मेरा दफ्तर कवि सम्मेलन का पंडाल बन जाएगा।

बाबू : नहीं, श्रीमान् जी, मैं आप को विश्वास दिलाता हूँ कि ऐसा कभी नहीं होगा। मैं अपना काम पूरे ध्यान से करूँगा।

अफसर : लेकिन आप किसी अखबार के संपादक वगैरह क्यों नहीं बन जाते ? आप उस काम के अधिक योग्य हैं।

बाबू : यही तो रोना है, श्रीमान् जी !

अफसर : क्यों, इस में रोने की क्या बात है ?

बाबू : अब आप से क्या छिपाऊँ, श्रीमान् जी, एक दिन मुझे बहुत जोर की कुलबुलाहट हुई, और मैंने एक कविता लिख डाली। अपने दोस्तों को सुनाई, तो उन्होंने मेरी गिनती संसार के स्वर्गीय महान् कवियों में कर डाली।

अफसर : स्वर्गीय महान् कवियों में क्यों ?

बाबू : इसलिए कि जीवित कवियों में से कोई भी मेरे पासंग नहीं उतरता।

अफसर : यह तो बड़ी प्रसन्नता की बात है 'कुलबुलाहट' जी।

बाबू : नहीं, श्रीमान् जी, उस दिन से आज तक मैं रोता ही रहा हूँ।

अफसर : क्यों ? क्यों ?—ऐसी क्या बात हुई ?

बाबू : एक पत्रिका में उपसंपादक की जगह के लिए इण्टरव्यू देने गया, और अपनी योग्यता के प्रमाण स्वरूप मैंने संपादक जी को अपनी वही कविता सुनाई।

अफसर : फिर तो आप को अवश्य उपसंपादक की जगह रख लिया गया होगा। लेकिन आपने वह नौकरी छोड़ क्यों दी ?

बाबू : छोड़ने का तो सवाल ही नहीं उठता, श्रीमान्, मुझे नौकरी मिली ही नहीं, बल्कि कह दिया गया कि आगे से उस पत्रिका के दफ्तर के एक मील के घेरे के अन्दर मैं कदम भी न रखूँ।

अफसर : क्यों ?

बाबू : संपादक जी बोले कि मुझ जैसा खानदानी बाबू कभी भी कवि नहीं बन सकता।

अफसर : यह उन्होंने कैसे जाना ?

बाबू : मैंने अपने प्रार्थनापत्र में, अपने दादा, पिता, चाचा, ताऊ आदि का हवाला दिया था। वे सभी बाबू थे या हैं। बस यही देखकर संपादक जी कहने लगे कि तुम्हारी नसों में बाबुओं का खून बह रहा है, तुम भी बाबू ही बन सकते हो, कवि नहीं। तभी से मैंने अपनी कुलबुलाहट को दबा रखा है। इसीलिए अब मैं आपके पास आया हूँ। अगर आप मुझे अपनी सेवा करने का मौका दें, तो मैं बाबूपन के वह जौहर दिखाऊँगा कि आप खुश हो जाएँगे।

अफसर : (सोचते हुए) हूँ ! खैर यह तो बाद में देखा जाएगा। अभी तो मुझे आपसे और बहुत कुछ पूछना है।

बाबू : अवश्य पूछिए, श्रीमान्, मैं हर बात का बिल्कुल सही-सही उत्तर दूँगा।

अफसर : आप ने अपने प्रार्थनापत्र में लिखा है कि आप ने बी० ए० पास किया है।

बाबू : जी, हाँ।

अफसर : आपने बी० ए० क्यों पास किया ?

बाबू : (सकपका कर) जी···मैं···आप का मतलब समझा नहीं।

अफसर : न समझने की तो कोई बात नहीं है। मैंने पूछा है कि आपने बी० ए० क्यों पास किया ?

बाबू : जी···वह सभी पास करते हैं मैंने भी पास कर लिया।

अफसर : अगर सभी अपनी नाक कटा लें, तो आप भी कटा लेंगे ?

बाबू : जी, नहीं ! बिल्कुल नहीं, भला मैं अपनी नाक क्यों काटूँगा। (जल्दी से) याद आ गया, श्रीमान्, मैंने अपनी योग्यता बढ़ाने के लिए बी०

ए० पास किया है।

अफसर : तो आप समझते हैं कि बी० ए० पास करने से आपकी योग्यता बढ़ गई ?

बाबू : जी, हाँ, श्रीमान् जी।

अफसर : आप अपनी योग्यता का प्रमाण दे सकते हैं ?

बाबू : एक से एक बढ़कर।

अफसर : आज के अखबार में सब से बड़ा समाचार क्या था ?

बाबू : 'दिल की बहार' फिल्म का विज्ञापन।

अफसर : ठीक से याद करके बताइए।

बाबू : जी, मुझे अच्छी तरह याद है, मैंने उसे बड़े गौर से पढ़ा है। पूरे एक पृष्ठ का विज्ञापन है। इस से बड़ा विज्ञापन कोई और था ही नहीं अखबार में।

अफसर : इस विज्ञापन से महत्त्वपूर्ण और कोई समाचार था ?

बाबू : नहीं, श्रीमान्, 'दिल की बहार' आज से शुरू हो रही है--इस से अधिक महत्त्वपूर्ण और क्या समाचार हो सकता है ?

अफसर : अच्छा, यह बताइए कि दिल्ली की कुतुबमीनार को किस ने बनाया था ?

बाबू : (याद करते हुए) जी···मेरे ख्याल से...हाँ ! बहुत सारे लोगों ने मिल कर बनाया था। ठीक संख्या तो याद नहीं, लेकिन यह एक दो आदमियों के बस का तो काम नहीं है, काफी राज-मजदूर लगे होंगे।

अफसर : इसे कुतुबुद्दीन ने तो नहीं बनाया ?

बाबू : नहीं, श्रीमान्, वह बेचारा अकेला कैसे बना सकता था ?

अफसर : अच्छा, गौरीशंकर 'कुलबुलाहट' जी, क्या आप बता सकते हैं कि रात और दिन क्यों होते हैं ?

बाबू : जी हाँ, श्रीमान्, सभी जानते हैं कि दिन दफ्तर में काम करने के लिए होता है और रात घर में सोने के लिए। मैंने ठीक बताया न, श्रीमान् ?

अफसर : हाँ, आपके हिसाब से ठीक ही समझिए।

बाबू : धन्यवाद !

अफसर : आपको खेल-कूद का शौक है ?

बाबू : जी, नहीं, लेकिन क्रिकेट का मुकाबला देखने का शौक ज़रूर है ।

अफसर : क्रिकेट का मुकाबला ? अच्छा, आपका मतलब क्रिकेट मैच से है ।

बाबू : जी, हाँ । अंग्रेजी और हिन्दी का मुझे अच्छा ज्ञान है, इसलिए मैं अंग्रेजी न जानने वालों को हिन्दी में अनुवाद करके बता देता हूँ । रेडियों में क्रिकेट के मुकाबलों का जो आँखों देखा हाल अंग्रेजी में सुनाया जाता है, उसके बहुत से शब्दों का मैंने हिन्दी में अनुवाद किया है ।

अफसर : उदाहरण के तौर पर कुछ शब्द बताइए ।

बाबू : जैसे लेग ब्रेक बॉल का अनुवाद मैंने टाँगतोड़ गेंद किया है । स्क्वायर लेग का चौखूटी टाँग, डीप फाइन लेग का गहरी अच्छी टाँग, सिली मिड ऑन का बीच का मूर्ख आदि ।

अफसर : बहुत सुन्दर ! आपको तो हिन्दी अनुवाद की डाक्टरेट मिल जानी चाहिए थी ।

बाबू : क्या बताएँ, श्रीमान् ! अभी हिन्दी अनुवादकों की इतनी कद्र नहीं है ।

अफसर : रूढ़केला के बारे में आप कुछ बता सकते हैं ?

बाबू : जी, हाँ । केलों की एक प्रसिद्ध जाति को रूढ़केला कहते हैं, जैसे बंबइया केला, चुनिया केला, हरी छाल का केला, चितलीदार केला होता है वैसे ही रूढ़केला भी होता है ।

अफसर : वास्तव में आपकी योग्यता का मैं कायल हो गया हूँ ।

बाबू : (प्रसन्न होकर) तो श्रीमान्, मुझे आप नियुक्त कर देंगे न ?

अफसर : नियुक्त ?

बाबू : मतलब यह कि चूँकि मैं इस इंटरव्यू में सफल रहा हूँ, मुझे नौकरी मिल जाएगी ?

अफसर : एक प्रश्न का उत्तर दीजिए । कभी आप पेड़ पर चढ़े हैं ?

बाबू : जी, हाँ, कई बार । जब मैं छोटा था तो बाग में पेड़ों पर चढ़कर चोरी-चोरी आम तोड़ कर खाया करता था ।

अफसर : और कभी बाग के रखवाले के आ जाने पर एकदम पेड़ से कूद कर भागे भी होंगे ?

बाबू : जी, हाँ। अक्सर ऐसा होता था। पास ही मेरा घर था। मैं ऐसा सरपट भागता था कि देखते-देखते एक मिनट में आँख से ओझल हो जाता था।

अफसर : अच्छा, मान लीजिए आम के पेड़ की ऊँचाई पांच फुट थी और वहाँ से आपका घर पचास फुट की दूरी पर था।

बाबू : श्रीमान्, आपका अन्दाज़ा बिलकुल सही है।

अफसर : पाँच फुट की ऊँचाई से कूदने में आपको दो सेकंड लगे होंगे ?

बाबू : जी, हाँ।

अफसर : और अट्ठावन सेकंड में आप पचास फुट दूर अपने घर भाग कर पहुँच गए होंगे। इस तरह आपको कुल एक मिनट लगा।

बाबू : जी, हाँ।

अफसर : अच्छा, तो अब यह बताइए कि सौ फुट ऊँचे पेड़ से कूद कर पचहत्तर फुट दूर जमीन पर भागने में आपको कितना समय लगेगा ?

बाबू : अभी लीजिए (हिसाब लगाते हुए) पाँच फुट की ऊँचाई से कूदने में दो सेकंड लगते हैं तो सौ फुट की ऊँचाई से दो वटा पाँच गुणा सौ··· यानी चालीस सेकंड, पचास फुट भागने में अट्ठावन सेकंड तो पचहत्तर फुट अट्ठावन वटा पचास गुणा पचहत्तर यानी सत्तासी सेकंड···कुल हुए १२७ सेकंड···यानी दो मिनट ७ सेकंड।

अफसर : आपका उत्तर सही है ?

बाबू : जी, हाँ, एकदम सही। हिसाब में तो मैं हमेशा बहुत अच्छे नम्बरों से पास हुआ हूँ।

अफसर : अच्छा, आपका घर यहाँ से कितनी दूर है ?

बाबू : जी ८७५ फुट।

अफसर : आपने नापा था ?

बाबू : जी, मैं आते हुए गिनता हुआ आया था। पूरे ३५० कदम थे, और एक कदम ३० इंच यानी अढ़ाई फुट होगा।

अफसर : आप एक मिनट में कितने कदम दौड़ते हैं ?

बाबू : १२० कदम।

अफसर : यहाँ से घर तक दौड़ते हुए पहुँचने में आपको कितनी देर लगेगी ?

बाबू : अढ़ाई मिनट ।

अफसर : अच्छा, तो दौड़ते हुए अपने घर अढ़ाई मिनट में पहुँच कर दिखाइए ।

बाबू : जी, पहले 'रेडी ! वन, टू, थ्री !' तो कीजिए ।

अफसर : रेडी ! वन, टू, थ्री ! (बाबू दौड़ता है) चपरासी, दरवाज़ा बन्द कर दो ।

१२

बुरे फँसे कार लेकर

(थोड़ी दूर से कार के आने की आवाज़, जो क्रमशः तेज़ होती जाती है। कार रुकती है और फटी-फटी आवाज़ वाला हार्न दो-तीन बार बजता है।)

शंकरलाल : (उत्साहित, आवाज़ दे कर) आशा ! आशा !

आशा : (घर के अंदर से आते हुए, प्रसन्नता से) आ गई कार ?

शंकरलाल : तुम्हारे सामने है। कैसी लगी ?

आशा : यह तो बड़े पुराने मॉडल की कार खरीद लाए।

शंकरलाल : बस, यही तो तुम्हें पता नहीं है। जिस दलाल ने यह कार मुझे दिलवाई है, वह अपना जान-पहचान का ही है। बड़ी तारीफ कर रहा था इसकी।

आशा : क्या तारीफ है इस कार में—जरा मैं भी तो सुनूं।

शंकरलाल : दलाल कहता था कि इस कार का भला आजकल की लिफाफा कार क्या मुकाबला करेगी। एकदम ठोस माल ! भैंस भी टकरा जाए तो इस का कुछ न बिगड़े—उलटे भैंस के फ्रैक्चर हो जाए। और नई कार से कहीं कोई चिड़िया भी टकरा जाए, तो··· जानती हो, आशा, क्या हो ?

आशा : क्या ?

शंकरलाल : तो कार दस जगह से पिचक जाए और चिड़िया···चिड़िया हँसती हुई फुर्र से उड़ जाए !

(आशा और शंकरलाल हँसते हैं।)

आशा : मिली कितने में ?

शंकरलाल : बहुत सस्ती। बस समझ लो कौड़ियों के मोल मिल गई। सिर्फ चार हज़ार देने पड़े।

आशा : चार हज़ार तो कुछ ज्यादा लगते हैं ।

शंकरलाल : यह बात नहीं है, आशा । दलाल कहता था कि इसके ६ हज़ार लग चुके हैं, पर मुझे अपना आदमी समझ कर उसने दो हज़ार कम में दिलवा दी । वह कहता था कि इतने से कम में कार तो नहीं, हाँ चार पहियों वाला डिब्बा ज़रूर मिल जाएगा ।

आशा : खैर, चलो ठीक है । अब हमें आराम तो हो जाएगा ।

शंकरलाल : और क्या ? बगैर कार के तो हमारी ज़िन्दगी बेकार थी । दफ्तर के लिए बस का इंतज़ार तो नहीं करना पड़ेगा । दोस्तों के घर आ-जा सकेंगे !

आशा : कार घर में हो तो दस काम निकलते हैं । ऊपर से अड़ोसियों-पड़ोसियों पर रोब भी रहता है ।

शंकरलाल : क्यों नहीं !

आशा : कार आने की खुशी में आज कुतुब क्यों न चला जाए !

शंकरलाल : हाँ, चलो !

आशा : खाना बन चुका है । साथ ले चलते हैं । वहीं खाएँगे ।

शंकरलाल : ठीक है, तुम खाना कार में रखो, मैं तब तक स्टार्ट करता हूँ ।

(कार स्टार्ट होकर चलती है । रास्ते में)

आशा : चल तो अच्छी रही है !

शंकरलाल : मैंने कहा था न कि चार हज़ार में बहुत बढ़िया कार हाथ लग गई ।

आशा : (घबरा कर) अरे···रे···रे ! यह क्या करते हैं ?

शंकरलाल : क्यों—क्या हुआ ?

आशा : ज़रा धीरे चलाइए ।

शंकरलाल : (हँस कर) धीरे क्यों ? यह कार है—कार ! बैलगाड़ी नहीं ।

आशा : मुझे डर लगता है ।

शंकरलाल : तुम तो बच्चों को भी मात करती हो, आशा ! (हँसता है)

आशा : मैं कहती हूँ—धीरे चलाइए । वह देखिये सामने साइकिल वाला जा रहा है ।

शंकरलाल : (लापरवाही से) अरे, तो इस में घबराने की क्या बात है ? अभी

हार्न बजाता हूँ। जान प्यारी होगी तो अपने आप बच जाएगा··· अरे !

आशा : क्या हुआ ?

शंकरलाल : हार्न को क्या हो गया ? बजता ही नहीं !

आशा : आप कार रोक लीजिए ।

शंकरलाल : परेशान क्यों होती हो—धीमी करे लेता हूँ···हैं···ब्रेक··· !

आशा : क्या हुआ ब्रेकों को ?

शंकरलाल : मैं ब्रेक लगा रहा हूँ, पर लगते ही नहीं ।

आशा : (घबरा कर) अब क्या होगा ?

शंकरलाल : (परेशान) तुम तो मेरे हाथ-पैर फुलाए दे रही हो ! ज़रा शांति से काम लो··· !

आशा : क्या खाक शांति से काम लूँ ? कार रोकिए। (कार रुकती है) ओह, कार है या आँधी ! ओह ! वह तो कहो, साईकिल वाला खुद ही सड़क से दूर हट गया, नहीं तो वह अस्पताल में होता और आप थाने में। मैं बाज़ आई कुतुब की सैर से। अब जैसे भी हो आप कार वापस ले चलिए—और चला कर नहीं ।

शंकरलाल : फिर क्या सिर पर उठा कर ले चलूँ ?

आशा : नहीं, धकेल कर ।

शंकरलाल : तुम्हें मालूम है घर यहाँ से कितनी दूर है ?

आशा : चाहे कितनी ही दूर हो। बिना ब्रेक की कार में मैं नहीं बैठूँगी।

शंकरलाल : घर पूरे एक मील है। इतनी दूर कौन कार को धकेल कर ले जाएगा ?

आशा : जिस की कार है ।

शंकरलाल : मेरा तो दम निकल जाएगा। मैं कहता हूँ धीरे-धीरे चला कर चलता हूँ ।

आशा : बिलकुल नहीं। कार सस्ते में मिल गई, तो हमारी जान तो सस्ती नहीं है । चलिए, मैं और आप दोनों इसे धकेल कर ले चलते हैं ।

शंकरलाल : नहीं, तुम कार में बैठ जाओ। लोग देखेंगे तो मेरा मज़ाक

उड़ाएँगे । मैं ही अकेला हिम्मत करता हूँ ।

आशा : अच्छा, आपकी इज्जत का ख्याल करके मैं साथ-साथ पैदल चलती हूँ ।

(शंकरलाल कार को ढकेलने लगता है और फिर हाँफने लगता है ।)

शंकरलाल : (हाँफते हुए)' हे भगवान् ! अभी तो सात फरलाँग और बाकी हैं ! वह दलाल का बच्चा मिल जाए तो उसे कार में जोत कर सारी दिल्ली का चक्कर लगवाऊँ !

(शंकरलाल इसी तरह बड़बड़ाता और हाँफता हुआ कार धकेलता रहता है)

आशा : आप बहुत थक गए हैं । थोड़ा सुस्ता कर पानी पी लीजिए ।

शंकरलाल : लाओ ! (पानी पीता है । हाँफता रहता है कुछ देर) चलो ! ज्यादा सुस्ताने में रास्ते में ही शाम हो जाएगी । भूख के मारे वैसे ही दम निकला जा रहा है···और ऊपर से यह कसरत !

(फिर कार धकेलने लगता है)

(संगीत)

[दृश्य-२]

नजीरउद्दीन : (आते हुए) मैंने कहा—शंकर बाबू, क्या दौलतखाने में ही तशरीफ फरमाते हैं ?

शंकरलाल : आइए, मौलाना नजीरउद्दीन साहब । तशरीफ रखिए ।

नजीरउद्दीन : मैंने कहा—मिज़ाज तो अच्छे हैं जनाब के ?

शंकरलाल : आपकी दुआ है, मौलाना साहब । आपके यहाँ तो सब खैरियत से हैं न ?

नजीरउद्दीन : खुदा की मेहरबानी है ।

शंकरलाल : कहिए, कैसे तकलीफ की ?

नजीरउद्दीन : मैंने कहा—मियाँ, वक्त ही नहीं मिलता कि पड़ोसियों से मिल-बैठ कर दो अपने दिल की कहें, दो उनके दिल की सुनें । आपके नियाज़ हासिल करने की बहुत दिनों से तमन्ना थी । आखिर आज सायत निकल ही आई ।

शंकरलाल : आपके लिए कुछ चाय-शरबत मँगवाऊँ ?

नजीरउद्दीन : नहीं, मियाँ । इस तकल्लुफ की क्या ज़रूरत है ! अपना ही घर समझता हूँ इसे ।

शंकरलाल : क्यों नहीं !

नजीरउद्दीन : मियाँ, एक बात है···

शंकरलाल : हुक्म कीजिए ।

नजीरउद्दीन : हुक्म क्या, मियाँ, ज़िन्दगी का रोना है । कुछ दिनों से टाँगों में जैसे गठिया उतर आई है ।

शंकरलाल : ओ हो, यह तो बहुत बुरा हुआ ! किसी डाक्टर···

नजीरउद्दीन : डाक्टर क्या करेगा, मियाँ, आपसे ही एक इल्तजा है ! मैंने कहा--सुना है आपने कार ख़रीद ली है ?

शंकरलाल : जी, हाँ, यह तो आपने ठीक ही सुना है ।

नजीरउद्दीन : बड़ी खुशी की बात है । मुबारक हो ! अब तो आने-जाने में बड़ा आराम हो गया होगा आपको ?

शंकरलाल : जी, हाँ, ख़रीदी तो इसी इरादे से है ।

नजीरउद्दीन : मैंने कहा—बड़ी खुशी की बात है । आपकी कार से मुझे भी बड़ा आराम हो जाएगा ।

शंकरलाल : (चौंक कर) जी ? क्या फरमाया ?

नजीरउद्दीन : मैंने कहा—आपकी कार का फायदा मुझे भी हो जाएगा । सुबह दफ्तर जाते हुए मुझे भी अपने साथ लेते चलना । वहीं रास्ते में मैं अपनी दुकान पर उतर जाऊँगा ।

शंकरलाल : जी, वह तो आप का कहना ठीक है, मौलाना साहब, लेकिन···।

नजीरउद्दीन : लेकिन-वेकिन क्या मियाँ ! पड़ोसी ही पड़ोसी के काम नहीं आएगा, तो क्या ग़ैर मुल्क वाले आएँगे ? कुछ दिन में मेरी गठिया ठीक हो ही जाएगी । फिर आप को तकलीफ नहीं दूँगा ।

शंकरलाल : देखिए, बात यह है कि···

नजीरउद्दीन : अब बाकी बातें कल सुबह रास्ते में होंगी । मैंने कहा--कल जब दफ्तर जाने लगो तो मेरे घर पर ही आ जाना कार लेकर । मैं तैयार मिलूँगा । अच्छा, मियाँ, अब इजाज़त चाहता हूँ । आदाब

अर्ज़ ! (जाता है)

शंकरलाल : (स्वतः चिढ़कर) जैसे मौलाना की गठिया मेरी कार का इंतज़ार ही कर रही थी !

[दृश्य-३]

मनमोहन : (आवाज़ देकर) शंकरलाल जी !···अरे भई, घर में हो ?

शंकरलाल : (आते हुए) कौन—मनमोहन बाबू ! आइए, आइए ! बड़े दिनों में दर्शन दिए ? आइए, इधर बैठिए ।

मनमोहन : क्या बताऊँ—ज़िन्दगी की रफ्तार आजकल कुछ ऐसी हो गई है कि मैं तो उस में फँस कर घनचक्कर बन गया हूँ···सुना है आपने कार ख़रीद ली है ?

शंकरलाल : जी, हाँ । पिछले इतवार को ही ली थी ।

मनमोहन : अच्छा किया जो ख़रीद ली । दिल्ली में कार के बिना गुज़ारा नहीं । हर जगह इतनी दूर है कि बस जाने की सोचते ही रहो । आप को अब बड़ा आराम हो जाएगा ।

शंकरलाल : जी, हाँ । ली तो इसी इरादे से है, पर पुरानी कार आराम कम देती है, परेशान ज्यादा करती है ।

मनमोहन : अरे साहब, खाँसी जुकाम तो कार को भी हो जाता है । (हँसता है) खैर, अब तो ठीक है न ?

शंकरलाल : जी, हाँ, कल रात जब गैराज में खड़ी की थी तब तक तो ठीक ही थी । अब रात भर में अपने आप ही कुछ खराबी हो गई हो तो कह नहीं सकता । पुरानी कार का कोई भरोसा नहीं (हँसता है ।)

मनमोहन : आपको एक कष्ट देना चाहता हूँ । पड़ोसी के नाते इस का तो हकदार हूँ ही । हंसता है)

शंकरलाल : (हँसी में योग देते हुए) कहिए, कहिए । कष्ट की क्या बात है !

मनमोहन : आज दिन-भर को आप की कार चाहिए । बात यह है कि रिश्तेदारी में एक शादी है ! अब तक कार का कोई इंतज़ाम हो नहीं सका । सो वह लोग मेरे पास आए । मैंने आप के भरोसे उन से वादा कर लिया है ।

शंकरलाल : लेकिन वादा करने से पहले आप मुझ से पूछ तो लेते ।

मनमोहन : मैं अपनी ग़लती मानता हूँ, शंकर बाबू । लेकिन अब तो आप को मेरे वचन की लाज रखनी ही होगी । अच्छा, अब मैं चलता हूँ । थोड़ी देर में किसी ड्राइवर का इंतज़ाम कर के कार ले जाऊँगा । नमस्ते ! (जाता है ।)

आशा : (आते हुए) आज क्या घर में ही बैठने का इरादा है ?

शंकरलाल : और कर भी क्या सकते हैं ?

आशा : क्यों ? चलो कहीं घूम आएँ ।

शंकरलाल : पैदल चलना चाहो तो चलो ।

आशा : पैदल क्यों ? कार ठीक नहीं है क्या ?

शंकरलाल : कार तो ठीक है, पर आज के लिए मनमोहन बाबू ने माँग ली है । किसी रिश्तेदार की शादी में जरूरत है । मेरे भरोसे वादा कर आए थे । क्या करता—देनी पड़ी । पड़ोस का मामला है ।

आशा : (चिढ़ कर) कार हम ने अपने आराम के लिए खरीदी है या पड़ोसियों के वादे पूरे करने के लिए ?

शंकरलाल : न देता तो कहते—हमें कार का घमंड हो गया है ।

आशा : कहने दो ! अगर हमने हरएक के कहने का खयाल किया तो हमारी कार टैक्सी बन कर रह जाएगी । पड़ोसी भी तो एक दो नहीं हैं ।

शंकरलाल : कहती तो ठीक हो, आशा । लेकिन शराफत भी तो दुनिया में कोई चीज़ है ! मना करते भी तो नहीं बनता ।

आशा : आप से नहीं मना किया जाता, तो माँगने वालों से कह दिया करो कि मुझ से पूछा करें ।

शंकरलाल : (मज़ाक करते हुए) जानती हो फिर लोग मुझे क्या कह कर पुकारेंगे ?

आशा : (चुटकी लेते हुए) तो इस में शरमाने की क्या बात है ?

शंकरलाल : क्या बताएँ, शरमाना ही पड़ता है—मजबूरी है । (हँसता है ।)

आशा : हँसी में बात मत टालो । मैं कहे देती हूँ, आगे से किसी को कार मत देना, नहीं तो···

शंकरलाल : नहीं तो ?

आशा : झगड़ा हो जाएगा ।

शंकरलाल : कार के पीछे तुम मुझ से झगड़ा करोगी ?

आशा : हाँ !

शंकरलाल : इस से तो अच्छा था कि मैं कार खरीदता ही नहीं ।

आशा : नहीं, इस से अच्छा यह है कि कार किसी को उधार न दी जाए···हुँ ! खूब रही ! कार हम खरीदें और इस्तेमाल करें दूसरे !

शंकरलाल : अच्छा, बाबा, अब तो गुस्सा थूक दो । इस कार के पीछे तुमने अपना पाव भर खून जला डाला । (हँसता है)

(संगीत)

[दृश्य-४]

शंकरलाल : यह मनमोहन बाबू को हो क्या गया ? कल सुबह कार ले गए थे और आज शाम हो गई, न कार का पता है न उन का । भले आदमी को कुछ खबर तो करनी थी ।

आशा : भले आदमी होते तो खबर करते ! अब तो आप को ही उन की खबर लेनी होगी ।

शंकरलाल : मुझे पता होता कि वह ऐसा करेंगे तो कभी कार न देता ।

आशा : मेरी सलाह मानी होती तो इस वक्त यों बौखलाए से चक्कर न काटते ।

शंकरलाल : क्या बताएँ ! शराफत का जमाना ही नहीं रहा । अपनी कार दूसरों को दें और खुद टैक्सी में दाम फूंकें ! वाह, हम जैसा बुद्धू भी कोई नहीं होगा !

आशा : (मज़ाक उड़ाते हुए) अब आप को ज्ञान उत्पन्न हुआ है ?

शंकरलाल : आखिर बात क्या हो सकती है, जो मनमोहन अब तक नहीं आए ?

आशा : लो, वह चले आ रहे हैं सामने से मुँह लटकाए । ज़रूर कुछ दाल में काला है, मैं चली अंदर । (जाती है)

मनमोहन : (आते हुए) मैं बहुत शर्मिंदा हूँ, शंकर बाबू कि···

शंकरलाल : (बीच में ही, कुछ नाराज़गी से) आप के शर्मिंदा होने से मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता, मनमोहन बाबू। मेरी कार कहाँ है ? आप छः घंटे के लिए कार माँग कर ले गए थे और अब छत्तीस घंटे हो गए, कार वापस नहीं आई। यह भी कोई बात है ! आपने···

मनमोहन : आप तो एकदम नाराज़ हो गए, शंकर बाबू। मेरी भी तो सुनिए।

शंकरलाल : (क्रोध में) क्या सुनूँ आपकी ? यही कहेंगे न कि आज दिन-भर कार में बरातियों को दिल्ली घुमाते रहे ? लेकिन, मनमोहन बाबू, आप मेरी कार सिर्फ कल शाम को बरात की चढ़त के लिए ले गए थे, बरातियों को दिल्ली घुमाने के लिए नहीं। यह बात आप की बिलकुल गलत है। पड़ोसी के नाते मैंने आप को कार दे दी। इस का मतलब यह तो नहीं कि आप मेरी शराफत का नाजायज फायदा उठाएँ। आप को क्या मालूम कि आप को कार देने की वजह से कल श्रीमती जी को नाराज़ किया और दफ्तर टैक्सी में जाना पड़ा। आखिर आप···

मनमोहन : (बीच में ही, शांतिपूर्वक) आप तो एक ही साँस में सारी महाभारत बखान गए। शंकर बाबू, आप को और भाभी जी को जो तकलीफ हुई उसके लिए मैं बहुत शर्मिंदा हूँ। बरातियों को आप की कार में घुमाने का तो मौका ही नहीं आया। सच बात तो यह है कि आप की कार का हम पूरा फायदा ही नहीं उठा सके, बल्कि उलटे लेने के देने पड़ गए।

शंकरलाल : क्यों, क्या हुआ ?

मनमोहन : बरात की चढ़त के समय आपकी कार में दूल्हा, उसके छोटे भाई-बहन, पिताजी, चाचाजी, मामाजी और ड्राइवर मिला कर कुल नौ अदद थे।

शंकरलाल : क्या ? आप ने उस छोटी-सी कार में नौ सवारियाँ भर दीं ? आप ने क्या उसे ट्रक समझ लिया था ?

मनमोहन : अब आप ही बताइए, शंकर बाबू, मैं क्या करता ? कार कुल एक थी। इन में से अगर किसी को भी पैदल चलाया जाता तो

समधी साहब रूठ जाते और बेचारी लड़की के फेरे न पड़ पाते। एक अकेला ड्राइवर ही था, जिस के रूठने का सवाल नहीं उठता था, लेकिन उसे उतार देते तो कार कैसे चलती ?

शंकरलाल : हाँ, साहब, पराये माल का ऐसे ही बेदर्दी से इस्तेमाल किया जाता है।

मनमोहन : आप कुछ भी कहें, शंकर बाबू, लेकिन सच कहता हूँ कि मुझे आप की कार पर उस समय बहुत तरस आ रहा था, और रास्ते भर मैं भगवान से यही प्रार्थना करता रहा कि किसी तरह कार को लड़की वालों के दरवाज़े तक सही-सलामत पहुँचा दें, लेकिन···

शंकरलाल : (चौंक कर) लेकिन क्या ?

मनमोहन : भगवान ने मेरी एक न सुनी।

शंकरलाल : (परेशानी से) क्या किया भगवान ने ?

मनमोहन : आप की कार रास्ते में ही बैठ गई।

शंकरलाल : बैठ गई ? क्या मतलब ?

मनमोहन : ड्राइवर कह रहा था कि कार के पिछले दोनों स्प्रिंग टूट गए हैं।

शंकरलाल : दोनों स्प्रिंग टूट गए ?

मनमोहन : जी, हाँ। और भी कुछ कह रहा था।

शंकरलाल : क्या कह रहा था ?

मनमोहन : मुझे ठीक से याद नहीं—शायद एक्सिल के बारे में कह रहा था कि वह भी टूट गया है।

शंकरलाल : (माथा ठोंक कर) हो गया ढेर !

मनमोहन : क्या कुछ ज्यादा का नुकसान हो गया ?

शंकरलाल : जी, हाँ, कम-से-कम दो सौ की चपत पड़ गई।

मनमोहन : मुझे बड़ा अफसोस है, शंकर बाबू। वैसे तो मेरे रिश्तेदार को ही यह नुकसान पूरा करना चाहिए। लेकिन उन की इतनी हैसियत नहीं। न जाने कैसे-कैसे करके उन्होंने लड़की की शादी की है। कई साल तक कर्ज़ चुकाते रहेंगे।

शंकरलाल : (व्यंग्य से) जी, हाँ, आप ठीक कहते हैं। कसूर तो मेरा ही है

कि मैंने कार खरीदी और फिर क्यों पड़ोस का धर्म निभा कर आप को अपने रिश्तेदार की लड़की की बरात की चढ़त के लिए कार दी !

मनमोहन : आप बुरा न मानें, शंकर बाबू । आप को अपना समझ कर ही मैंने कार माँगी थी ।

शंकरलाल : बुरा मान कर मैं कर भी क्या लूँगा आपका ! खैर, अब कम-से-कम इतनी मेहरबानी तो कर ही दीजिए कि मेरी लंगड़ी कार का पता-ठिकाना बता दीजिए, ताकि मैं उसे वर्कशाप पहुँचाने का बंदोबस्त कर दूँ ।

मनमोहन : बड़े शौक से । कल सुबह मैं आपके साथ चला चलूँगा । इस समय तो बहुत देर हो गई है । अब चलता हूँ । (जाता है)

आशा : (आते हुए) सिर पकड़े क्यों बैठे हो ?

शंकरलाल : अभी कान भी पकड़ूँगा ।

आशा : क्यों ?

शंकरलाल : कसूर जो किया है मैंने ।

आशा : कैसा कसूर ?

शंकरलाल : कार जो ख़रीद ली है—और वह भी पुरानी । कोई मामूली कसूर है ?

आशा : क्या कोई बात हो गई ?

शंकरलाल : अभी क्या हुआ है ! (साँस खींच कर) इब्तदाए इश्क है रोता है क्या ! आगे-आगे देखिए होता है क्या ?

आशा : तुम तो कविता बखानने लगे ! मुझे देख कर तो आज तक तुम्हें कविता नहीं सूझी, और इस पुरानी छकड़ा कार को देख कर तुम कवि···

शंकरलाल : कवि नहीं—यह छकड़ा कार मुझे पागल बना देगी ।

आशा : (हँसते हुए) एक ही बात है !

शंकरलाल : तुम्हें हँसी सूझ रही है ! मालूम है, मनमोहन के रिश्तेदार की बेटी की शादी में हमारी कार पर क्या बीती ?

आशा : मनमोहन के रिश्तेदार ने हमारी कार अपनी बेटी के दहेज में

तो नहीं दे दी ?

शंकरलाल : अगर दे दी होती तो लाख दर्जे अच्छा होता। तब चार लोग मेरी तारीफ तो करते। और अब उल्टी बुराई ही मिली। ऊपर से दो सौ की चपत पड़ गई।

आशा : आखिर हुआ क्या ?

शंकरलाल : मनमोहन के रिश्तेदार की बेटी का दूल्हा, उसके छोटे भाई-बहन, पिताजी, चाचाजी, मामाजी और ड्राइवर मिला कर सिर्फ नौ अदद कार में बैठे तो कार के दो स्प्रिंग और एक अदद एक्सिल टूट गए।

आशा : मैंने तभी तो कहा था कि कार की सलामती और अपना आराम चाहते हो तो समाज सेवा के चक्कर में मत पड़ो।

शंकरलाल : (साँस खींच कर) लाख इन्सान चाहे तो क्या होता है, होता है वही जो मंजूरे पड़ोसी होता है !

आशा : फिर कविता का दौरा पड़ गया ?

शंकरलाल : जब तक कार अपने पास रहेगी, ऐसे दौरे बराबर पड़ेंगे।

आशा : इस से तो कार को बेच दो।

शंकरलाल : (व्यंग्य से) तब हमारे यही मेहरबान पड़ोसी एक मीटिंग करेंगे और उस में सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव पास किया जाएगा कि "श्री शंकरलाल ने अपने पड़ोसियों पर रोब डालने के लिए बड़ी शान से कार खरीदी थी, लेकिन आठ दिन में ही उनका दिवाला पिट गया, और कार बेचने की नौबत आ गई।"

आशा : लोगों का मुँह कौन बंद कर सकता है ! हमें तो वही करना चाहिए जिस में फायदा हो।

दलाल : (बाहर से आवाज़ देकर) शंकरलाल जी !

शंकरलाल : (आशा से) यह तो वही दलाल है जिससे मैंने यह कार बड़े मौके से आया। आशा तुम्हारी बात ठीक है। हमें यह कार बेच देनी चाहिए। दलाल से बात करता हूँ···तुम अंदर जाओ।

(आशा जाती है)

दलाल : (आवाज़ दे कर) शंकरलाल जी !

शंकरलाल : (पास आते हुए) आया भाई !

दलाल : नमस्ते, शंकरलाल जी !

शंकरलाल : नमस्ते ! आओ, अंदर आ जाओ । कहो, कैसे तकलीफ करी ?

दलाल : यों ही इधर से गुज़र रहा था । सोचा आप के दर्शन कर लूँ । कहिए, कार कैसी सर्विस दे रही है ?

शंकरलाल : बहुत बढ़िया । लेकिन अब मेरा इरादा उसे बेचने का हो रहा है ।

दलाल : क्यों ?

शंकरलाल : बड़ी कार लेना चाहता हूँ । लेकिन पहले इसे बिकवा दो ।

दलाल : हाँ, हाँ, जरूर ।

शंकरलाल : कितने की बिकवा दोगे ? पाँच हज़ार तो मिल ही जाने चाहिएँ ।

दलाल : पाँच हज़ार ? आप भी क्या बात करते हैं, शंकरबाबू ।

शंकरलाल : क्यों, क्या कम हैं ? छः हज़ार मिल जाएँगे ?

दलाल : छः हज़ार ?

शंकरलाल : भई, तुम ने ही तो कहा था कि कोई भी इस के छः हज़ार खुशी से दे देगा । तुम मेरे दोस्त हो । तुम्हारे हाथों दो हजार का फायदा तो होना ही चाहिए मुझे ।

दलाल : शंकरबाबू, कल तक शायद मैं आपको छः हज़ार दिलवा देता । मेरे पास एक गाहक था ।

शंकरलाल : अब कहाँ गया वह ?

दलाल : गाहक तो है, पर अब वह आपकी कार की कीमत मन के हिसाब से देगा ।

शंकरलाल : क्या मतलब ?

दलाल : एक कबाड़ी को मैं साथ लाया हूँ । रास्ते में आप की कार की जो हालत मैंने देखी, उससे सोचा कि शायद आप उसे बेचना चाहें । शंकरबाबू, अब तो उस में सिर्फ लोहा रह गया है । बीस रुपए मन दिलवा दूँगा । बोलिए, है मंज़ूर ?

१३

क्या पकाया है ?

पति : (आवाज़ दे कर) रामू ! (अवकाश) रामू ! (अवकाश) क्या मर गया ? (झुँझला कर) यह नौकर···

पत्नी : (आते हुए) क्या बात है, डियर ? इतना क्यों चीख़ रहे हो ?

पति : चीख़ नहीं रहा हूँ, डार्लिंग, रो रहा हूँ ।

पत्नी : क्यों ? रोने से तन्दुरुस्ती पर ख़राब असर पड़ता है ।

पति : भूख लग रही है ज़ोर से, इसलिए रो रहा हूँ । न जाने यह नौकर कहाँ मर गया ?

पत्नी : नौकर मरा नहीं है ।

पति : तो कहाँ ग़ायब हो गया ?

पत्नी : वह छुट्टी पर है ।

पति : छुट्टी पर क्यों ? तो क्या आज खाने की भी छुट्टी रहेगी ?

पत्नी : मैंने आज उसे छुट्टी दे दी है ।

पति : बहुत भूख लग रही है । अच्छा, लाओ एक गिलास ठंडा पानी ही पिला दो—खाना तो आज मिलने से रहा ।

पत्नी : इतने निराश क्यों होते हो, डियर ? खाने का भी इन्तज़ाम हो जाएगा ।

पति : कहाँ से हो जाएगा ? होटल से मँगाया है क्या ?

पत्नी : मेरी इन्सल्ट न करो, नहीं तो···

पति : उफ ! तुम्हारा अपमान कैसे हो गया ? आख़िर क्या कह दिया मैंने ?

पत्नी : क्या नहीं कहा तुमने ? इस से ज्यादा और कोई कह भी क्या सकता है !

पति : डार्लिंग, मैं कसम खाता हूँ जो मैंने जान-बूझ कर तुम्हारा अपमान किया हो । कम-से-कम बता तो दो आखिर मेरा अपराध क्या है ?

पत्नी : तुमने यह क्यों पूछा कि खाना होटल से मँगाया है ?

पति : तो, डार्लिंग, इस में अपमान की क्या बात है ? यह तो स्पष्ट ही है कि जब घर में खाना नहीं बना है, तो होटल से ही आया होगा ।

पत्नी : लेकिन तुमने यह कैसे समझ लिया कि घर में खाना नहीं बना है ?

पति : क्योंकि नौकर छुट्टी पर है ।

पत्नी : तो क्या तुम समझते हो कि मैं खाना नहीं बना सकती ?

पति : (आश्चर्य से) तुम खाना बना सकती हो ?

पत्नी : तुम्हें आश्चर्य क्यों हो रहा है ? मेरे पास कुकिंग का सर्टिफिकेट है । कुकिंग में सारे कालिज में मैं प्रथम आई थी ।

पति : अच्छा !

पत्नी : और नहीं तो क्या !

पति : क्षमा करना, डार्लिंग, मुझे नहीं मालूम था कि तुम कालिज में खाना बनाने की भी डिग्री लेकर आई हो । लेकिन हमारी शादी के बाद आज पहली बार ही तुमने खाना बनाया है ।

पत्नी : अगर घर की औरतें खुद ही खाना बनाने लगें, तो बेचारे बटलर, रसोइए वग़ैरा तो बेकार हो जाएँगे । आजकल देश में वैसे ही इतनी बेकारी है, तब और भी बढ़ जाएगी । बेकारी की समस्या को थोड़ा-बहुत सुलझाने के लिए ही मैंने रामू को रखा हुआ है, वरना उस से लाख दर्जे अच्छा खाना बना सकती हूँ ।

पति : ओह ! डार्लिंग, मुझे नहीं पता था कि इन विलायती कपड़ों से ढँके शरीर के अंदर देशभक्ति से ओत-प्रोत हृदय छिपा है । वास्तव में तुम महान् हो, डार्लिंग ।

पत्नी : आप तो मुझे खामखाह बना रहे हैं ।

पति : नहीं, मैं सच कह रहा हूँ, आज मैं तुम्हारे विचारों से बहुत प्रभावित हुआ हूँ ।

पत्नी : तो क्या बातों से ही पेट भरने का इरादा है ?

पति : ओह, माफ करना, डार्लिंग । जबसे तुम ने कहा है कि तुम्हें खाना बनाना आता है, मेरी तो जैसे भूख ही गायब हो गई ।

पत्नी : (क्रोध से) क्या मतलब ?

पति : (जल्दी से) मैं···मैं···मेरा मतलब···मुझे इतनी प्रसन्नता हुई कि मैं और सब बातें भूल गया। अच्छा, अब जल्दी से खाना परोस दो। भूख फिर से लग आई है। क्या-क्या पकाया है आज तुमने ?

पत्नी : पूछ कर क्या करोगे ? अभी सामने आया जाता है। तुम इस मेज़ पर बैठो, मैं अभी लाती हूँ।

(प्लेटों की आवाज़)

पति : यह तो सूप मालूम होता है। किस का है ?

पत्नी : पी कर देखो।

पति : (पीते हुए) अरे, वाह ! बहुत स्वादिष्ट बना है। टमाटर का मालूम होता है।

पत्नी : (हँसते हुए) खा गए न धोखा ! टमाटर का नहीं, आलूचों का सूप है।

पति : आलूचों का ? वाकई मैं तो पहचान भी न सका।

पत्नी : यही तो तारीफ है कि खाने वाले को पता ही न लगे कि वह क्या खा रहा है। अच्छा, बताओ, यह सब्ज़ी किस की है ?

पति : (खाते हुए) भई, इसे मैं पहचान गया।

पत्नी : बताओ न ?

पति : लौकी है।

पत्नी : नहीं पपीता है।

पति : खूब ! स्वाद तो बिलकुल लौकी जैसा है।

पत्नी : अच्छा, बताओ यह क्या है ?

पति : देखने में तो मछली के चाप मालूम होते हैं।

पत्नी : खा कर देखो।

पति : (खाते हुए) हाँ, मछली के चाप हैं।

पत्नी : फिर धोखा खा गए। मछली के चाप नहीं, बेसन के हैं।

पति : डार्लिंग, तुमने तो कमाल कर दिया ! अच्छा, इस बार तो मैं जरूर पहचान जाऊँगा। लाओ, यह आखिरी चीज़ भी परोस दो। (खाते हुए) अब के मैं धोखा नहीं खा सकता। यह गोभी है। क्यों है न गोभी ही ?

पत्नी : (कुछ अचम्भे से) हाँ, लेकिन···

पति : (खाते हुए) गोभी बनी बहुत अच्छी है। गोभी ही क्या, सारा खाना बहुत अच्छा बना है। दिल करता है बनाने वाले के हाथ चूम लूँ। आज मैं बहुत खुश हूँ कि मेरी पत्नी इतना अच्छा खाना···(टेलीफोन की घण्टी बजती है) नहीं, डार्लिंग, तुम कष्ट न करो, मैं ही टेलीफोन सुन लेता हूँ। (रिसीवर पर आ कर) कौन साहब बोल रहे हैं ?

बटलर : (टेलीफोन पर) मैं हूँ, बटलर।

पति : क्या बात है ?

बटलर : (टेलीफोन पर) हुजूर, मेम साहब ने जो आलूचों का सूप, पपीते की सब्जी, बेसन के चाप और एक सूखी तरकारी का आर्डर दिया था सो तो थे नहीं, उनकी जगह टमाटर का सूप, लौकी की सब्जी, मछली के चाप और गोभी की तरकारी भिजवा दी है।

पति : किस ने भिजवाई है ? कहाँ से भिजवाई है ?

बटलर : (टेलीफोन पर) हुजूर, मैंने भिजवाई है। होटल से। खाना अच्छा था न ?

पति : (झुँझला कर) बहुत अच्छा था !

(टेलीफोन ज़ोर से पटक देता है।)

१४

डाक्टर

रामचंद्र : (पेट दर्द से चिल्लाते हुए) हाय, राम ! हाय, मरा !

श्यामसुन्दर : घबराओ नहीं, हिम्मत से काम लो, पेट दर्द से कोई नहीं मरता।

रामचंद्र : जीजाजी, आप की इन बातों से मेरा दर्द बंद नहीं होगा। हाय, अब नहीं सहा जाएगा ।

श्यामसुन्दर : मैं ने चूरन तो खिलाया है। बस दो-चार मिनट में दर्द बंद हुआ जाता है।

रामचंद्र : चूरन से कुछ नहीं होगा। किसी डाक्टर को बुलाओ। हाय, मरा !

श्यामसुन्दर : यहाँ जंगल में डाक्टर कहाँ है ? शहर भी यहाँ से पाँच मील है और फिर रात को ११ बजे जाऊँ भी तो कैसे—न रिक्शा, न बस।

रामचंद्र : (कराहते हुए) अब बातें ही बनाते रहेंगे या कुछ करेंगे भी, हाय ! उफ !

श्यामसुन्दर : अब तुम ही बताओ क्या करूँ ? यहाँ आस-पास कोई टेलीफोन भी तो नहीं है, कैसी मुसीबत में जान है ?

रामचंद्र : (ज़ोर से) हाय, मरा ! हाय ! उफ मेरे राम !

श्यामसुन्दर : समझ में नहीं आता क्या करूँ ? चूरन की एक पुड़िया और खा लो—शायद इस बार कुछ असर कर जाए।

रामचद्र : किस कबाड़ी की दुकान से चूरन उठा लाए हैं आप ? मैं नहीं खाता इसे। आप किसी डाक्टर को बुलाइए।

श्यामसुन्दर : पर कहाँ से बुलाऊँ ?

रामचंद्र : मैं कुछ नहीं जानता—या तो फौरन डाक्टर को बुलाइये, नहीं तो मैं अपने घर जाता हूँ।

श्यामसुन्दर : अरे भाई, ऐसा गजब न कर बैठना। क्यों ससुराल में मेरी नाक कटवाने पर तुले हो ?

रामचंद्र : तो फिर डाक्टर को ले कर आइये जल्दी से। हाय, राम ! हाय, मरा !

श्यामसुन्दर : अच्छा, भई जाता हूँ—लाऊँगा कहीं-न-कहीं से डाक्टर को। (जाता है)।

पड़ौसी : क्या बात है, श्यामसुन्दर जी ? आप के घर से किसी के चीखने-चिल्लाने की आवाज़ आ रही है—मैंने सोचा देख आऊँ क्या बात है ?

श्यामसुन्दर : क्या बताऊँ ? अजीब मुसीबत में फँस गया हूँ—साले साहब के पेट में अचानक दर्द उठ खड़ा हुआ है।

पड़ौसी : तो कोई दवा नहीं दी ?

श्यामसुन्दर : चूरन दिया था, पर उस से कोई फायदा नहीं हुआ।

पड़ौसी : फिर ?

श्यामसुन्दर : किसी डाक्टर की तलाश में जा रहा हूँ। पर यहाँ तो आसपास मीलों तक कोई डाक्टर नहीं है।

पड़ौसी : इस कालोनी में तो कोई···हाँ, याद आया—शाम को जब मैं दफ्तर से लौट रहा था तो एक मकान पर किसी डाक्टर की नेम प्लेट लगी देखी थी।

श्यामसुन्दर : किस मकान पर ?

पड़ौसी : अरे, वह है न इधर से बाएँ जाने पर दाएँ हाथ वाली सड़क पर ११ नंबर का मकान—उसी पर।

श्यामसुन्दर : अरे, वह तो खाली पड़ा था।

पड़ौसी : शायद आज ही कोई डाक्टर उस में आए हैं। भला सा नाम है—शायद राममोहन या रामकृष्ण। दूर से ठीक नहीं पढ़ा गया।

श्यामसुन्दर : खैर, कोई बात नहीं—राममोहन हो या रामकृष्ण, बस डाक्टर होना चाहिए। अच्छा भई, मैं इतने में डाक्टर को बुला लाऊँ, आप ज़रा साले साहब के पास बैठ जाएँ तो बड़ी कृपा होगी।

पड़ौसी : क्यों, क्या आप की श्रीमती जी नहीं हैं ?

श्यामसुन्दर : अगर होतीं तो मेरी मुसीबत क्यों होती ! वह तो सुबह से ही मायके गई हैं। शाम को अपने भाई जान को भेजा था मेरी मिज़ाजपुर्सी के लिए, अब उलटे मुझे ही उन की मिज़ाजपुर्सी करनी पड़ रही है।

पड़ौसी : (हँस कर) कोई बात नहीं, श्रीमती जी की आँखों में अब आप और भी चढ़ जाएँगे। अच्छा, आप डाक्टर को बुला लाइए, मैं बैठा हूँ।

(श्यामसुन्दर जाता है)

श्यामसुन्दर : (चलते-चलते) यह रहा ११ नंबर, जल्दी ही मिल गया, दरवाजे पर नेमप्लेट भी लगी है। (पढ़ता है) डाक्टर रामकृष्ण, लेकिन घर के अन्दर तो अँधेरा है। क्या डाक्टर साहब कहीं मरीज़ देखने गए हैं ? या शायद अभी दवाखाने से ही न लौटे हों। नहीं, इतनी रात गए तक दवाखाने में क्या काम ? कहीं सो न गए हों ? खैर, आवाज़ दे कर देखता हूँ, (ज़ोर से) डाक्टर साहब ! डाक्टर साहब !

डाक्टर : (दूर से ऊँघते हुए) कौन साहब हैं ?

श्यामसुन्दर : (ज़ोर से) ज़रा बाहर तो तशरीफ लाइए।

डाक्टर : (दूर से) अभी हाज़िर होता हूँ (दरवाज़ा खोलकर) फरमाइए।

श्यामसुन्दर : क्षमा कीजिए, डाक्टर साहब, आपको इस समय कष्ट दिया। आप सो गए थे शायद ?

डाक्टर : (जँभाई लेते हुए) नहीं, कोई बात नहीं।

श्यामसुन्दर : जी, मैं इस कालोनी में रहता हूँ और···

डाक्टर : अच्छा आप का शुभनाम ?

श्यामसुन्दर : जी, मुझे श्यामसुन्दर कहते हैं। २५ नंबर में रहता हूँ।

डाक्टर : बड़ी खुशी हुई आपसे मिल कर।

श्यामसुन्दर : मुझे अभी पता चला कि इस मकान में आप आ गए हैं, इसी-लिए··· ।

डाक्टर : बड़ी कृपा है आप की जो दर्शन दिए। आइए, अन्दर चल कर बैठें। मैंने सोचा था ज़रा सामान ठीक से जमा लूँ तो फिर

यहाँ सब से परिचय करने निकलूँ ! और सुनाइए ।

श्यामसुन्दर : क्या बताऊँ, डाक्टर साहब, आप भी कहेंगे कि आया तो अपने मतलब से ।

डाक्टर : कोई बात नहीं । कहिए मैं क्या सेवा कर सकता हूँ आप की ? अच्छा, पहले आप के लिए चाय मँगवाऊँ ।

श्यामसुन्दर : नहीं, डाक्टर साहब, चाय का यह कोई वक्त नहीं है ।

डाक्टर : अरे साहब, चाय के लिए भी क्या कोई वक्त निकालना पड़ता है ? बस एक मिनट में आ जाएगी ।

श्यामसुन्दर : नहीं, चाय रहने दीजिए । दरअसल मैं इस समय आप को अपने घर ले चलने को आया था ।

डाक्टर : अरे साहब, जब आप आए हैं तो मैं भी क्यों नहीं आप के घर आऊँगा ?

श्यामसुन्दर : तो फिर चलिए ।

डाक्टर : अभी ? अरे साहब, अब तो आप आ ही गए हैं । मैं कल हाज़िर हो जाऊँगा । इस समय तो···

श्यामसुन्दर : डाक्टर साहब, अभी चले चलिए तो आप की बड़ी कृपा होगी । बात यह है कि मेरे साले साहब के पेट में बहुत ज़ोर का दर्द हो रहा है ।

डाक्टर : अरे, यह तो बहुत बुरी बात है ।

श्यामसुन्दर : अब इस जंगल में आप के सिवाय···

डाक्टर : कोई बात नहीं, कोई बात नहीं । मैं अभी चलता हूँ । आखिर वक्त पर इंसान ही इंसान के काम आता है । मैं ज़रा कपड़े बदल लूँ । बस एक मिनट में आया । (जाता है ।)

श्यामसुन्दर : (सोचता है) बड़ा शरीफ डाक्टर मालूम होता है । फीस-वीस का भी पहले से कोई ज़िक्र नहीं । शायद न भी ले । आखिर पड़ोसी जो ठहरा । पहली ही भेंट में कैसे घुलमिल कर बातें करने लगा, जैसे पुराना परिचित हो ।

डाक्टर : (आते हुए) चलिए, साहब, मैं तैयार हूँ ।

श्यामसुन्दर : चलिए । (चलते-चलते) डाक्टर साहब, मैं तो डर रहा था कहीं

आप मना न कर दें। इतनी रात हो चुकी है आप वैसे ही आज थके हुए हैं।

डाक्टर : अजी साहब, क्यों शर्मिंदा करते हैं! यह तो मेरा फर्ज़ था।

श्यामसुन्दर : आप के इस कालोनी में आने से सभी को आराम हो जाएगा।

डाक्टर : एक दूसरे से ही सब का काम निकलता है।

श्यामसुन्दर : आप पहले कहाँ रहते थे?

डाक्टर : चाँदनी चौक में। पर यह जरा खुली जगह है, इसलिए यहाँ आ गया।

श्यामसुन्दर : जी, हाँ, जगह तो बहुत अच्छी है। पर अभी कई चीज़ों की दिक्कत है यहाँ।

डाक्टर : बसते-बसते सब सहूलियतें पैदा हो जाएँगी।

श्यामसुन्दर : जी, हाँ, लीजिए, वह आ गया मेरा मकान। आइए, उधर सीढ़ियों पर। देखिए, सँभल कर।

डाक्टर : कोई बात नहीं।

(रामचंद्र के कराहने की आवाज़ आती है।)

श्यामसुन्दर : इधर आइए, डाक्टर साहब, इस कमरे में।

रामचंद्र : (कराहते हुए) हाय मरा! हाय! उफ! हाय मेरी माँ!

श्यामसुन्दर : घबराओ नहीं, सब ठीक हो जाएगा।

डाक्टर : (रामचन्द्र से) पेट में दर्द हो रहा है?

रामचंद्र : जी, हाँ, बहुत जोर से। हाय, मरा! उफ!

डाक्टर : क्या खाने में कोई गड़बड़ी की थी?

श्यामसुन्दर : शाम को गोलगप्पे खा लिए थे।

डाक्टर : बस यही तो आप लोग गलती करते हैं। भला पेट में दर्द नहीं होगा तो क्या होगा?

श्यामसुन्दर : जी, आप ठीक कहते हैं।

डाक्टर : काफी तकलीफ है बेचारे को। श्यामसुन्दर जी, आपने किसी को डाक्टर के पास भेजा है?

श्यामसुन्दर : (हक्का-बक्का) जी!

डाक्टर : मैंने कहा डाक्टर को बुलाया है आपने?

श्यामसुन्दर : आप को और किस लिए ले कर आया हूँ।
डाक्टर : कोई बात नहीं। मैं ही डाक्टर को बुलाने चला जाता हूँ।
श्यामसुन्दर : पर आप भी तो डाक्टर हैं।
डाक्टर : अरे, साहब, आप भी कमाल करते हैं! मैं तो इतिहास का डाक्टर हूँ।

१५

हाथ की रेखाएँ बताती हैं...

(बाज़ार का शोरगुल)

ज्योतिषी : (आवाज़ दे कर) अरे बच्चा, सुन तो !

नमकराम : किस को बोलता है, बाबा ?

ज्योतिषी : तुम्हें ही बुलाते हैं, बच्चा । इधर आओ ।

नमकराम : (पास आ कर) तुम हम को बच्चा बोलता है ! एं ? हम तुमको अभी बच्चा दिखाई देता है ? तुम्हारा आँख ठीक है ?

ज्योतिषी : (हँसकर) हमारे लिए सभी बच्चे हैं ।

नमकराम : हमारा उमर पैंतीस साल का हो गया । तुम्हारा बराबर हमारा आधा दर्जन बच्चा भी है और हम को तुम अपना बच्चा कहता है ? एं !

ज्योतिषी : तुम मसखरी करते हो, बच्चा । हमारी उमर पचास से भी ऊपर है । हमारे बराबर तुम्हारे बच्चे कैसे हो सकते हैं ?

नमकराम : बराबर हो सकते हैं । हमारा शागिर्द लोग हम को दादा बोलता है, जो हम को दादा बोलता है वह हमारा क्या लगा ?

ज्योतिषी : अच्छा, ठीक है, बच्चा । हम समझ गए । ज़रा दिखाओ तो अपना हाथ ।

नमकराम : तुम हमारे हाथ की सफाई देखना माँगता है ?

ज्योतिषी : नहीं, बच्चा, तुम्हारा हाथ देखना चाहते हैं ।

नमकराम : क्यों ?

ज्योतिषी : हम ज्योतिषी हैं । तुम्हारा हाथ देखकर तुम्हारी किस्मत बताएँगे ।

नमकराम : जाओ ! तुम क्या हमारा किस्मत बोलेगा ? हम खुद अपना किस्मत बनाता है । भगवान भी हमारा किस्मत में दस्तंदाजी नहीं

करता । भगवान ने हमारे डैडी ममी को बोला, हमारा नाम रख दो नमकहराम । पर हम ने वह हाथ का सफाई दिखाया कि सब देखता रह गया ।

ज्योतिषी : सो कैसे, बच्चा ?

नमकराम : नमकहराम में से हम ने 'ह' को साफ गायब कर दिया, और अपना नाम नमकराम रख लिया । बस, तब से भगवान हमारे मामले में नहीं बोलता ।

ज्योतिषी : नाम तो तुम ने अपना अच्छा रख लिया । पर, बच्चा, तुम्हारा काम बड़े जोखिम का है ।

नमकराम : तुम ने कैसे जाना ?

ज्योतिषी : अरे बच्चा, हम ज्योतिषी जो हैं । तुम्हारे हाथ की रेखाएँ देख कर हम जान गए । कहो, हम ने ठीक बताया है न ।

नमकराम : आधा ठीक है, आधा गलत ।

ज्योतिषी : सो कैसे ?

नमकराम : काम वह जरूर जोखिम का है, पर हमारे लिए उस में कोई जोखिम नहीं ।

ज्योतिषी : यही तो, बच्चा, तुम्हें पता नहीं ।

नमकराम : हमको पता नहीं तो क्या तुमको पता है ?

ज्योतिषी : हाँ, बच्चा ! हम ज्योतिषी जो हैं । यह देखो तुम्हारे हाथ की यह रेखा बता रही है कि एक दिन तुम ऐसे फँसोगे कि जेल की हवा खानी पड़ेगी ।

नमकराम : गलत, एकदम गलत । हम हवा खाता ही नहीं, रोटी खाता है ।

ज्योतिषी : तो जेल की रोटी खानी पड़ेगी, बच्चा !

नमकराम : ऐसा ? तो हम रोटी नहीं खाएगा—डबलरोटी खाएगा । जेल में डबलरोटी नहीं मिलता, इसलिए हम को जेल की डबलरोटी नहीं खाना पड़ेगा । क्या समझे ? और बोलो, हाथ का लकीर क्या कहता है ?

ज्योतिषी : हृदय की रेखा बताती है कि तुम दिल के काले को ।

नमकराम : क्या बोला ! हमारा दिल काला है ?

ज्योतिषी : हाँ ।

नमकराम : (गंभीर) बाबा, हमारा एक बात मानेगा ?

ज्योतिषी : क्या ?

नमकराम : तुम एकदम बेवकूफ है ।

ज्योतिषी : क्यों ?

नमकराम : हमारा दिल टेक्नीकलर है ।

ज्योतिषी : यह कौन सा रंग है ?

नमकराम : जिस में कई रंग होता है—उस को टेक्नीकलर बोलता है । हम को जब गुस्सा आता है तो हमारा दिल लाल हो जाता है । जब हम खुश होता है तो दिल हरा हो जाता है । जब हम को डर लगता है तो दिल सफेद हो जाता है । हम बड़ा रंगीन दिल का आदमी है, बाबा ।

ज्योतिषी : लेकिन, बच्चा, रेखा तो बताती है तुम्हारा हृदय काला ही नहीं, खोटा भी है ।

नमकराम : तभी तो हम बोलता है तुम एकदम बेवकूफ है । जैसे खोटा सिक्का नहीं चल सकता वैसे खोटा दिल भी नहीं चल सकता । हम को पैदा हुए पैंतीस साल हो गया । तब से अब तक बरोबर हमारा दिल चल रहा है । खोटा होता तो कभी का बन्द न हो जाता ?

ज्योतिषी : लेकिन···

नमकराम : लेकिन-वेकिन कुछ नहीं । दूसरी रेखा देखो ।

ज्योतिषी : लेकिन, बच्चा, एक बात तो रह ही गई । हमारी दक्षिणा तो तय हो जानी चाहिए ।

नमकराम : तुम एक बात सच्ची बताएगा, हम तुम को पाँच रुपया देगा । पर अभी तक तुमने सब गलत बताया है ।

ज्योतिषी : अच्छा तो, बच्चा, मैं दावे के साथ कहता हूँ कि मेरी यह बात अवश्य सच होगी ।

नमकराम : दावा पीछे करना, पहले बात बताओ ।

ज्योतिषी : तुम्हारे हाथ की यह रेखा बताती है कि तुम्हारी दो पत्नियाँ हैं । क्यों, ठीक है न ?

नमकराम : ऐं ! क्या बोला ? दो बीबियाँ ? फिर से बोलो ।

ज्योतिषी : हाँ, बच्चा, तुम्हारे दो पत्नियाँ हैं ।

नमकराम : गलत बात । दो बीबियाँ थीं—हैं नहीं ।

ज्योतिषी : यानी अब नहीं हैं ? किंतु तुम्हारे हाथ की रेखा तो बताती है कि दोनों पत्नियाँ जीवित हैं ।

नमकराम : अरे, हम कब बोलता वो मर गया ।

ज्योतिषी : तो फिर क्यों कहते हो कि थीं—हैं नहीं ।

नमकराम : (गंभीर हो कर) बाबा, हमारा एक बात मानेगा ?

ज्योतिषी : क्या ?

नमकराम : तुम एकदम बेवकूफ है ।

ज्योतिषी : क्यों ?

नमकराम : तुम्हारा जनरल नौलिज एकदम जीरो है । तुम को पता नहीं, यार, तलाक कानून पास होते ही दो बीबियाँ नहीं रह सकता । इस लिए हमारा दोनों बीबियों ने एक साथ हम को तलाक दे दिया । अब हम मैरिड बैचलर है ।

ज्योतिषी : लेकिन···

नमकराम : लेकिन-वेकिन कुछ नहीं, बाबा । हमारा टाइम बहुत कीमती है । जल्दी करो—कोई और रेखा-वेखा रह गई हो तो उसको भी देख लो ।

ज्योतिषी : हाँ, बच्चा, रेखाएँ तो अभी बहुत हैं । तुम्हारे मस्तिष्क की रेखा बताती है कि पचास साल की उमर में तुम पागल हो जाओगे ।

नमकराम : ऐं ? क्या बोला ? हम पागल हो जाएगा ?

ज्योतिषी : हाँ, रेखा तो यही बताती है ।

नमकराम : बाबा, तुम्हारा दिमाग तो नहीं खराब हो गया ?

ज्योतिषी : मेरे हाथ की रेखा तो ऐसा नहीं बताती ।

नमकराम : हम को लगता है तुम्हारे हाथ में दिमाग की रेखा है ही नहीं, तभी तो तुम ऐसी उलटी बात बोलता है ।

ज्योतिषी : अरे, बच्चा, सात पुश्तों से हमारे यहाँ ज्योतिषी पैदा होते रहे हैं, और, तुम कहते हो मैं उलटी बात बोलता हूँ ।

नमकराम : और नहीं तो क्या ! पचास साल की उमर में कोई पागल होता है ! अरे, पागल होने का उमर होता है १५ से २५ साल—जब छोकरा लोग जवान होता है। उस वक्त कोई सिनेमा के पीछे पागल होता है, कोई फ़ैशन के पीछे···और लड़की के पीछे तो सब पागल होता है। समझा ?

ज्योतिषी : बच्चा, हम जो बताते हैं उसे तुम गलत सिद्ध कर देते हो। अब हम कुछ और नहीं बताएँगे। तुम अपना रास्ता नापो।

नमकराम : हम तो पहले ही कहता था, तुम हाथ देखना नहीं जानता। खैर, अब हम तुम्हारा हाथ देखकर बिल्कुल सच्चा बात बताएगा।

ज्योतिषी : क्या तुम भी ज्योतिषी हो ?

नमकराम : हाँ, लेकिन हम सिर्फ एक ही बात बताता है।

ज्योतिषी : क्या ?

नमकराम : तुम रोएगा या नहीं ?

ज्योतिषी : हम क्यों रोएँगे ?

नमकराम : यह बाद में अपने आप तुम जान जाएगा। पहले अपना हाथ दिखाओ...ठीक है। तुम जरूर रोएगा।

ज्योतिषी : बिल्कुल गलत है। मैं तो आज तक नहीं रोया।

नमकराम : हम झूठ नहीं बोलता, बाबा। तुम्हारे हाथ में लिखा है कि पाँच मिनट बाद तुम जरूर रोएगा।

ज्योतिषी : अच्छा, अगर तुम्हारी भविष्यवाणी सत्य हुई तो मैं तुम्हें अपना गुरु मान लूँगा।

नमकराम : तुम मानो न मानो—हम पहले ही बहुत बड़ा उस्ताद है। अच्छा, अब हम अपना रास्ता नापता है। (जाता है।)

ज्योतिषी : (स्वतः) चला गया। बड़ा बातूनी आदमी था। मेरी हर बात काट दी। लेकिन वह यह क्यों कहता था कि मैं रोऊँगा ? भला किसी के हाथ में लिखा होता है कि वह रोएगा या हँसेगा ? ...अजी, छोड़ो, मैं भी किस चक्कर में पड़ गया ! इतना समय चाट गया, और दिया-दिलाया कुछ भी नहीं।

बच्चा : (आकर) पिताजी, अम्माँ ने कहा है सुबह से जितने पैसे कमाए

हों दे दो—आटा लाना है।

ज्योतिषी : कौन, मदन ? हाँ, बेटा, ले जा ये पैसे, आज दो-चार अच्छे मूर्ख फँस गए थे। बीस रुपए कमाए हैं। अम्मा से कहियो आज खीर बनाए।

बच्चा : (प्रसन्न होकर) खीर ? पिताजी, मैं भी खाऊँगा खीर।

ज्योतिषी : हाँ, हाँ, क्यों नहीं। तू भी खीर खाएगा और तेरी अम्माँ भी। ले, ये रुपए...ऐं ! यह क्या ?

बच्चा क्या हुआ, पिताजी ?

ज्योतिषी : (घबरा कर) मेरी जेब ? मेरी जेब कट गई। हाय, अब मैं क्या करूँ ?

बच्चा : पिताजी जेब कट गई तो अम्माँ सी देगी।

ज्योतिषी : अरे, बेटा, अब यह जेब नहीं सिल सकती। हाय मेरे बीस रुपए निकल गए।

बच्चा : अब हमें खीर नहीं मिलेगी ?

ज्योतिषी : अरे, तुझे खीर की पड़ी है, यहाँ तो सूखी रोटी भी गई ! हाय, अब मैं क्या करूँ ? जाने किस मरदुए का काम है यह ? (रोने लगता है) अरे, समझ गया। यह नमकराम का ही काम है। साला जेबकतरा था। तभी कहता था मेरे हाथ में रोना लिखा है—हाथ की सफाई दिखा गया। (रोते हुए) हाय, मैं लुट गया !

१६

जरा आराम कर लें

रजनी : (दिनेश को जगाते हुए) अरे, उठोगे नहीं क्या आज ?

दिनेश : (नींद में कुनमुनाता हुआ) सोने दो ।

रजनी : सारी रात तो हो गई सोते हुए और अब दिन के ग्यारह भी बज गए ।

दिनेश : (कुनमुनाते हुए) बजने दो ।

रजनी : लगता है जैसे घोड़े बेच कर सोए हो ।

दिनेश : (कुनमुनाते हुए) किस जमाने की बात कर रही हो ! आजकल घोड़े कौन पालता है ! अब तो साइकिल, स्कूटर या कार होती है ! अब कहो कि मैं साइकिल बेच कर सोया हूँ तो एक बात भी है ।

रजनी : (हँसते हुए) साइकिल बेच दोगे तो दफ्तर कैसे जाओगे ?

दिनेश : (कुनमुनाते हुए) दफ्तर नहीं जाना है मुझे ।

रजनी : फिर क्या घास खोदोगे ? (हँसती है)

दिनेश : ओ हो, तुम्हें तो कुछ याद ही नहीं रहता । आज इतवार है—इतवार ! आज दफ्तर नहीं जाना है—आराम करना है—आराम ! अब जाओ मुझे आराम से सोने दो ।

रजनी : तुम आराम से सोओ—और मैं क्या करूँ ?

दिनेश : तुम भी आराम से सो जाओ । कल से फिर छः दिन तक तुम्हें भी तो दफ्तर जाना पड़ेगा ।

रजनी : यह दफ्तर का काम तो कमर तोड़ डालता है । सोच तो मैं भी रही थी कि आज इतवार है, कमर सीधी कर लूँ ।

दिनेश : यही तो मैं कह रहा हूँ । अब जाओ, तुम कमर सीधी करो, और मुझे आराम से सोने दो ।

रजनी : अच्छा···लेकिन···

दिनेश : लेकिन-वेकिन कुछ नहीं। आज तो आराम करने का ही प्रोग्राम है सारे दिन। इस में किसी किस्म की गड़बड़ नहीं होनी चाहिए।

कलुआ : (जोर से आवाज देता हुआ आता है) बीबी जी! बीबी जी!

रजनी : (नाराज़ हो कर) शोर क्यों मचाता है? उधर चल कर बात कर। देखता नहीं बाबूजी सो रहे हैं?

कलुआ : अभी तक तो रहे हैं? क्या तबीयत खराब है?

रजनी : नहीं। आज इतवार है—जरा आराम कर रहे हैं।

कलुआ : यही तो मैं भी कहने आया था, बीबीजी।

रजनी : क्या कहने आया था?

कलुआ : यही कि आज इतवार है। मैं बारह वाली शो में सनीमा देखने जा रहा हूँ।

रजनी : नहीं, आज तू नहीं जा सकता।

कलुआ : बाकी दिन तो दिन की शो में बच्चों को सनीमा न देखने का कानून बन गया है, और रात को मैं जा नहीं सकता, क्योंकि दिन-भर काम करता-करता थक जाता हूँ, इसलिए आराम करता हूँ।

रजनी : तू सिनेमा चला जाएगा, तो खाना कौन बनाएगा? मुझे भी आज आराम करना है।

कलुआ : सनीमा से लौट कर तीन बजे बना दूँगा, बीबी जी।

रजनी : तब तक क्या हम भूखे बैठे रहेंगे?

कलुआ : नहीं, बीबीजी, तब तक आप लोग लेट कर आराम करना।

रजनी : अच्छा, बातें मत बना ज्यादा। कह दिया कि इस वक्त तू सिनेमा नहीं जा सकता।

कलुआ : बीबीजी, गजब हो जाएगा!

रजनी : क्या गजब हो जाएगा?

कलुआ : मेरा सवा रुपया डूब जाएगा?

रजनी : क्यों?

कलुआ : मैंने अडवाँस बुकिंग करवा ली है।

रजनी : मैं कुछ नहीं जानती। तू ने पहले मुझ से पूछ कर क्यों नहीं टिकट

लिया ?

कलुआ : मुझे क्या पता था कि आप मना कर देंगी ।

रजनी : अच्छा, अब जाकर खाना बना । मैं जरा कमर सीधी कर लूँ । खाना बन जाए तो मुझे बता देना···जाता क्यों नहीं ?

कलुआ : जाता हूँ ।

रजनी : और सुन, पहले जाकर बाजार से आध सेर दही ले आ ।

कलुआ : अच्छा ।

रजनी : और देख ! जल्दी लौट कर आना ।

कलुआ : अच्छा । (जाता है)

रामू : (आवाज देते हुए) चाची ! चाची !

रजनी : (झुँझला कर स्वतः) अरे, यह रामू इस वक्त कहाँ से आ मरा । दो मिनट लेट भी न पाई थी···

रामू : (आवाज़ देते हुए) चाची !

रजनी : (जोर से) आती हूँ ! (पास आ कर) क्या है, रे रामू ? इतना गला फाड़-फाड़ कर क्यों चीख रहा है ?

रामू : अम्माँ ने कहा है कि टेलीफोन आया है ।

रजनी : किस का ?

रामू : चाचा का ।

रजनी : कह दे जा कर कि चाचा सो रहे हैं । बाद में करना टेलीफोन ।

रामू : अच्छा । (जाता है)

रजनी : (स्वतः) वैसे तो पूरे हफ्ते किसी का टेलीफोन नहीं आएगा, और आएगा तो आज इतवार को ही । अब दौड़े जाओ पड़ोसी के घर तक टेलीफोन सुनने को । सुनने को मिलेगा (बन कर) हैलो···क्या कर रहे हो ?···(नाराज हो कर) कर रहे हैं तुम्हारा सिर !

रामू : (आते हुए) चाची !

रजनी : तू फिर आ गया ?

रामू : मैं क्या करूँ ! अम्माँ भेजती हैं तो आ जाता हूँ । टेलीफोन वाला कह कह रहा है कि बहुत जरूरी काम है । चाचा को जगा दो ।

रजनी : है कौन ? नाम नहीं पूछा ?

रामू : मैंने तो नहीं पूछा । पूछ आऊँ ?

रजनी : नहीं रहने दे । मैं तेरे चाचा को जगा देती हूँ । (अवकाश । दिनेश को जगाते हुए) उठो ! तुम्हारा टेलीफोन आया है ।

दिनेश : (झुँझला कर) क्या मुसीबत है ! मैं, नहीं जाता । मुझे आराम करने दो ।

रजनी : जरा देर को सुन ही आओ न जा कर । पता नहीं कौन है । रामू दो वार आ चुका है । मालूम होता है कोई जरूरी काम होगा ।

दिनेश : होने दो । आज आराम करने से ज्यादा जरूरी काम नहीं हो सकता ।

रजनी : कहो तो मैं सुन आऊँ ?

दिनेश : नहीं, नहीं, क्या पता कोई आज अपने घर आने का प्रोग्राम ही बना रहा हो । उसे पता चल गया कि हम घर ही हैं तो जरूर आ धमकेगा और···

रजनी : तो क्या कहलवा दूँ ?

दिनेश : कहलवा दो कि घर में नहीं हैं ।

रजनी : लेकिन मैं तो कहलवा चुकी हूँ कि तुम सो रहे हो ।

दिनेश : (झुँझला कर) तुम भी सोच-समझ कर काम नहीं करतीं । अब कोई न कोई बहाना तो बनाना ही पड़ेगा···(सोच कर) हाँ, कहलवा दो कि सो रहे थे । और सोते ही रह गए ।

रजनी : ऐसी बुरी बात मुँह से क्यों निकालते हो ?

दिनेश : नहीं, नहीं, यह बात भी नहीं चलेगी । टेलीफोन करने वाला अगर कहीं जरा गहरे किस्म का दोस्त हुआ, तो मातमपुरसी करने आ जाएगा···कोई और ही बहाना खोजना पड़ेगा ।

रजनी : इतनी देर में तो तुम टेलीफोन सुन भी आते । ऐसा करो कि चले जाओ । अगर रास्ते में कोई अच्छा बहाना सूझ जाए तो रामू को बता देना, नहीं तो बात कर लेना ।

दिनेश : क्या मुसीबत है ! वक्त पर अकल भी काम नहीं देती । अच्छा, जाता हूँ । चल, भई रामू । (अवकाश) रामू, तू एक काम कर सकता है ?

रामू : क्या काम, चाचा ?

दिनेश : तू घर जाकर टेलीफोन बन्द कर दे ।

रामू : लेकिन चाचा, वह तो फिर टनटनाएगा ।
दिनेश : तू रिसीवर उठा कर वगैर कुछ कहे फिर रख देना ।
रामू : लेकिन वह फिर टनटनाया तो ?
दिनेश : तो फिर वंद कर देना ।
रामू : नहीं, चाचा, अपने वस का यह काम नहीं है ।
दिनेश : क्यों ?
रामू : दिन-भर मैं यही करता रहा तो आराम कव करूँगा ?
दिनेश : तुझे भी आज ही आराम करना है ?
रामू : और कव करूँ ? छः दिन तक स्कूल से घर और घर से स्कूल गधे की तरह किताबों का वोझा ढोता हूँ, तव कहीं जाकर सातवें दिन इतवार आता है । मैं तो आप को वुलाने आ ही नहीं रहा था । अम्मा ने जवरदस्ती भेज दिया ।
दिनेश : अच्छा, भई, जैसी तेरी मरजी ।
रामू : चाचा, अव तो टेलीफोन सामने ही दिखाई दे रहा है । वात कर ही लो ।
दिनेश : करनी ही पड़ेगी । (रिसीवर में) हैलो ! हैलो !
आवाज : (टेलीफोन पर) कौन वोल रहा है ?
दिनेश : आप कौन वोल रहे हैं ?
आवाज : मैं रामकृष्ण हूँ ।
दिनेश : कौन रामकृष्ण ?
आवाज : अरे भई, मैं हूँ रामकृष्ण ! रेलवे स्टेशन से वोल रहा हूँ । पहचाना नहीं ?
दिनेश : जी, नहीं ।
आवाज : कमाल करते हो, भई, तुम भी !
दिनेश : (चिढ़ कर) इस में कमाल की कोई वात नहीं है, जनाव । मैंने आज से पहले कभी आप की आवाज नहीं सुनी ।
आवाज : मालूम होता है अभी तक नींद में हो । (हँसता है)
दिनेश : (चिढ़ कर) देखिए, जनाव, एक तो आप ने मेरे आराम में खलल डाला, और ऊपर से मेरा मजाक उड़ा रहे हैं ।

आवाज : अरे भई, वाह ! खूब ! मजाक तो तुम कर रहे हो मेरे साथ । खत में तो लिख दिया कि मैं तुम्हें स्टेशन पर लेने आऊँगा । गाड़ी लेट थी । तुम्हें यहाँ न देख कर मैंने टेलीफोन किया तो हजरत आवाज ही पहचानने से इनकार कर रहे हैं ।

दिनेश : (चिढ़ कर) मैंने न किसी को खत लिखा है, न स्टेशन पर आने का वादा किया है ।

आवाज : (हँसते हुए) अच्छा, भई, अब चलो अब चलो बहुत हो गया, नरेश···

दिनेश : (चौंक कर) नरेश ? क्या कहा आपने ?

आवाज : अरे भई, चौंकते क्यों हो ? तुम्हारा नाम ही तो लिया है, गाली तो नहीं दी ।

दिनेश : जरा एक दफा फिर से तो लीजिए ।

आवाज : अजीब आदमी हो तुम भी ! अपना नाम सुन कर ही चौंक पड़ते हो ! अच्छा, अब बताओ तुम कितनी देर में यहाँ पहुँच जाओगे ? मेरे लिए शहर नया है । इधर-उधर चक्कर ही काटता फिरूँगा, नरेश ।

दिनेश : नरेश ? जनाब, मैं नरेश नहीं, दिनेश बोल रहा हूँ ।

आवाज : (आश्चर्य से) दिनेश !

दिनेश : जी—दिनेश ।

आवाज : (आश्चर्य से) यह कैसे हो सकता है ?

दिनेश : क्यों नहीं हो सकता ? कहिए तो अपनी जन्मपत्री दिखा कर साबित कर दूँ कि मेरा नाम तीस वर्ष से आज तक दिनेश रहा है और जब तक मरूँगा यही रहेगा । तब तो आपको यकीन आएगा ?

आवाज : लेकिन अपने खत में तो आप ने···मेरा मतलब नरेश ने अपना टेलीफोन नम्बर ४०९०१ ही लिखा था । मैंने वही नम्बर मिलाया है ।

दिनेश : पहले रहा होगा । अब यह नम्बर मिस्टर सीताचरण का हो गया है ।

आवाज : यह कैसे हो सकता है ?

दिनेश : (झुँझला कर) हो कैसे नहीं सकता, जनाब ! यह दिल्ली है—यहाँ

सब कुछ हो सकता है। टेलीफोन एक्सचेंज बदल जाने से नम्बर भी बदल गए।

आवाज : अच्छा, तो आप मेहरबानी करके मुझे नरेश का नम्बर बता दीजिए।

दिनेश : नम्बर बदल गया है, लेकिन अभी टेलीफोन डायरेक्टरी नहीं बदली है। मैं आप की कुछ मदद नहीं कर सकता।

आवाज : तो क्या मैं स्टेशन पर ही टहलता रहूँ ?

दिनेश : इस से अच्छा तो यह होगा कि आप जहाँ से आए हैं वहीं वापस लौट जाएँ।

आवाज : अब यहाँ तक आ गया हूँ तो···साहब, कुछ तो मदद कीजिए। आप ने ही तो कहा था कि दिल्ली है—यहाँ सब कुछ हो सकता है। क्या आप मुझे नरेश का नम्बर मालूम करने में भी मदद नहीं कर सकते ?

दिनेश : अच्छा, तो आप टेलीफोन इनक्वायरी से मालूम करिए।

आवाज : धन्यवाद !

दिनेश : (रिसीवर रख कर) बेकार ही इतना परेशान किया। (रामू से) रामू !

रामू : जी चाचाजी !

दिनेश : अब अगर नरेश, राजेश, मुखेश, वीरेश, राकेश, धीरेश, परेश, चरेश लरेश···वगैरा किसी का भी टेलीफोन आए, मुझे मत बुलाने आ जाना।

रामू : अगर दिनेश चाचाजी का आए तो।

दिनेश : तब भी नहीं। समझे ?

रामू : समझ गया, चाचाजी !

(अवकाश)

रजनी : कौन था टेलीफोन पर ?

दिनेश : (चिढ़ा हुआ) कोई गधा था !

रजनी : (हँस कर) गधा ? क्या जमाना इतना तरक्की कर चुका है कि अब गधे भी टेलीफोन करने लगे ?

दिनेश : यही समझो। गलत नम्बर और गलत नाम का शिकार बन गया।

कमबख्त ने इतना समय बरबाद कर दिया। नींद भी गायब हो गई। अब उठा हूँ तो खाना ही खा लूँ। फिर जरा आराम कर लूँगा। खाना तैयार है ?

रजनी : होना तो चाहिए था, लेकिन अभी तक उस के आसार ही नज़र नहीं आ रहे हैं।

दिनेश : क्या मतलब ? कलुआ क्या कर रहा है अब तक ?

रजनी : मालूम होता है सिनेमा देख रहा है।

दिनेश : सिनेमा ?

रजनी : हाँ, छुट्टी माँग रहा था। मैंने मना कर दिया। बाजार से दही लेने भेजा था।

दिनेश : तो क्या आज व्रत रखना पड़ेगा ?

रजनी : नजर तो ऐसा ही आता है। सुबह से यह वक्त हो गया मैं एक मिनट को भी आराम नहीं कर सकी।

दिनेश : अजी, अब आराम को मारो गोली, और दाल-रोटी का कुछ हिसाब करो।

रजनी : जी हाँ, मैं चूल्हे में सिर झोंकूँ और आप आराम से लम्बी तान कर सोएँ ! यह नहीं चलेगा।

दिनेश : तो फिर क्या चलेगा ?

रजनी : तुम भी मेरा हाथ बटाओ। मैं खाना बनाती हूँ, तुम बरतन साफ करो, बाजार से दही ले आओ।

दिनेश : हो गया कबाड़ा !

रजनी : देख लो, भूखा नहीं रहना है तो यह सब कुछ करना ही पड़ेगा।

दिनेश : वाह री किस्मत !

रजनी : वाह रे कलुआ !

दिनेश : आने दो कलुआ को—खड़े-खड़े निकाल दूँगा।

रजनी : ऐसा गजब न कर बैठना।

दिनेश : क्यों ?

रजनी : नौकरों की समस्या आजकल राष्ट्रीय समस्या बन गई है। रोज-रोज नौकर नहीं मिलते।

दिनेश : न सही। जो वक्त पर दगा दे जाए ऐसे नौकरों से क्या फायदा !

रजनी : लेकिन कलुआ ने आज ही तो दगा दी है। हफ्ते के छः दिन तो वह काम करता ही है। अगर नौकर नहीं होगा तो खाना कौन बनाएगा, घर की सफाई कैसे होगी ?

दिनेश : तुम जो हो।

रजनी : मेरी जगह दफ्तर कौन जाएगा ?

दिनेश : ओह, यह तो मैंने सोचा ही नहीं था।

रजनी : तभी तो कहती हूँ कि पुरुष अक्सर विना सोचे-समझे ही काम करते हैं।

दिनेश : अच्छा, अच्छा, वस रहने दो अपना रटारटाया पेटेंट भाषण। अरे, हम पुरुषों को देखो—दफ्तर भी काम करते हैं और घर का काम भी। स्त्रियाँ अगर नौकरी करेंगी तो घर के काम को हाथ तक नहीं लगाएँगी।

रजनी : अच्छा, अच्छा, वस रहने दो अपना रटारटाया पेटेंट भाषण।

(दोनों हँसते हैं)

दिनेश : अच्छा, तो अव तुम रसोई घर की तरफ कूच करो।

रजनी : और तुम वाजार की तरफ···और हाँ, तुम भी कहीं कलुआ की तरह सिनेमा में न जा वैठना।

दिनेश : वाह रे कलुआ ! तूने आज हमारी परेड करवा दी !

(अवकाश)

रजनी : खाना-पीना तो निवट गया। अव क्या इरादा है ?

दिनेश : इरादा वही है जो आज सुवह था। अव जरा आराम कर लिया जाए। ऐसा करो कि सव खिड़की-दरवाजे अन्दर से वन्द कर दो, ताकि अव कोई आ कर तंग न करे।

रजनी : अच्छा।

(दरवाजे व खिड़की वंद करने की आवाज)

दिनेश : अव ठीक है।

रजनी : देखो, मैं भी आराम करना चाहती हूँ। कहीं वीच में उठा कर पानी-वानी मत माँगने लगना।

दिनेश : और देखो, तुम भी कोई घरेलू समस्या ले कर मेरा सिर मत खाने लगना। अब दो-चार घंटे डट कर आराम कर लें, तो सुबह की कसर कुछ तो पूरी हो जाए।

(बाहर से आवाज आती है)

प्रेम : दिनेश !

दिनेश : (धीरे से) अब यह कौन आ मरा ?

प्रेम : दिनेश !

दिनेश : (धीरे से) रजनी, जरा भी आवाज़ मत करना। जो भी होगा चीख-चिल्ला कर लौट जाएगा।

रजनी : (धीरे से) पर यह तो तुम्हारा दोस्त प्रेम मालूम होता है।

दिनेश : (धीरे से) प्रेम-वेम का चक्कर छोड़ो, नहीं तो आराम···

प्रेम : (और भी जोर से) दिनेश ! दिनेश !

रजनी : (धीरे से) यह तो चीखे ही जा रहा है।

दिनेश : (धीरे से) चुप्पी साध कर बैठी रहो।

प्रेम : (जोर से) अरे भई, यह दरवाज़ा बन्द कर के भाभीजी से क्या खुसर-फुसर बातें हो रही हैं ?

दिनेश : (धीरे से) मार डाला !

रजनी : (धीरे से) अब ?

दिनेश : (धीरे से) अब तो उसे दर्शन देने ही पड़ेंगे, नहीं तो कल सारे दफ्तर में तरह-तरह की बातें उड़ाएगा। (जोर से) कौन है, भई ?

प्रेम : मैं हूँ—प्रेम।

दिनेश : आया, भई ! अभी एक मिनट। (दरवाजा खोल कर) आओ, भई ! आओ !

प्रेम : मैं इतनी देर से आवाज़ दे रहा था। तुम्हें सुनाई नहीं दिया ?

दिनेश : अच्छा ? खाना खा कर अभी लेटा ही था। झपकी आ गई होगी।

प्रेम : लेकिन मैं ने तो तुम्हें बोलते सुना था।

रजनी : इन्हें नींद में बड़बड़ाने की आदत है।

प्रेम : कब से ?

दिनेश : शादी के बाद से।

(तीनों हँसते हैं)

प्रेम : बात यह है कि आज इतवार है। सुबह से घर में पड़े-पड़े काफी ऊब गया था। सोचा तुम से ही चल कर गपशप मारी जाए। वक्त अच्छा कट जाएगा।

दिनेश : (गिरी आवाज में) अच्छा किया।

प्रेम : क्या बात है—तुम्हारा और भाभीजी का चेहरा कुछ उतरा हुआ दिखाई दे रहा है।

दिनेश : नहीं तो।

प्रेम : नहीं तो क्या ? जरूर कोई बात है। झगड़ा हो गया ? भाभीजी, आप बताइए सच-सच क्या बात है ?

रजनी : बात क्या होती ! कुछ भी नहीं।

दिनेश : बात यह है, प्रेम, कि आज इतवार है न—घर में पड़े-पड़े सुस्ती आ ही जाती है।

प्रेम : यह बात है तो इस का इलाज तो मेरे पास बहुत बढ़िया है। चलो उठो, चटपट तैयार हो जाओ।

दिनेश : क्यों ?

प्रेम : कहीं बाहर चलते हैं—कुतुब, ओखला जहाँ मरजी हो।

दिनेश : (टालते हुए) अरे, कहाँ इतनी दूर जाओगे !

प्रेम : अच्छा ही है। वक्त तो कट ही जाएगा।

दिनेश : बस के इन्तज़ार में ही शाम हो जाएगी।

प्रेम : यह भी एक एडवेंचर रहेगा।

दिनेश : खड़े-खड़े टाँगें टूट जाएँगी।

प्रेम : घर में लेटे-लेटे ऊबने से तो वही अच्छा है। क्यों, भाभीजी, क्या खयाल है आप का ?

रजनी : मेरा···मैं···मुझे तो घर में काम है। आप इन्हें ले जाइए।

दिनेश : जी हाँ, जैसे मैं तो फालतू ही बैठा हूँ।

प्रेम : अरे, आप दोनों तो झगड़ा करने लगे।

रजनी : यह बात ही ऐसी करते हैं !

दिनेश : मैंने ऐसी क्या ईंट मार दी ?

प्रेम : यह सब घर में पड़े-पड़े खाट तोड़ने का नतीजा है। खाली बैठने से यही सब खुराफात सूझती है। मेरी नेक सलाह मानिए, और घूमने चलिए। ताजी हवा लगेगी तो दिमाग ठंडा हो जाएगा।

दिनेश : मेरा खयाल है कि आज रहने ही दो। फिर कभी सही।

प्रेम : और मैं जो इतनी दूर अपने घर से कवायद करता हुआ यहाँ आया हूँ उसका तुम्हें कोई खयाल नहीं है ?

दिनेश : काफी थक गए होगे—तुम भी आराम करो और मैं भी···

प्रेम : नहीं, नहीं, तुम सुबह से काफी आराम कर चुके हो और मुझे आराम की जरूरत नहीं है।

दिनेश : मेरी पूरी बात तो सुन लो।

प्रेम : सुन ली, अब चलो। चलिए, भाभीजी।

रजनी : जल्दी ही वापस लौट आएँगे।

प्रेम : जल्दी क्या है ! पहले कुतुब चलेंगे। वापसी में कनाट प्लेस घूमघाम कर नौ-दस बजे तक घर लौट आएँगे। आज इतवार है—जरा सैर-तफरीह कर लें।

दिनेश : (गिरे स्वर से) हाँ, आज इतवार है—जरा आराम···

प्रेम : जरा आराम के साथ घूमें-फिरेंगे।

१७

सब जानूँ राम से भेंट

पहला : हाँ तो, श्रीमान्, आप का कहना है कि कोई ऐसा प्रश्न नहीं है, जिस का आप ठीक-ठीक उत्तर न दे सकें, कोई ऐसी समस्या नहीं है जिसे आप सुलझा न सकें ?

दूसरा : निस्संदेह ।

पहला : आप कोई प्रमाण दे सकते हैं ?

दूसरा : आप कोरे मूर्ख मालूम पड़ते हैं ।

पहला : आप ने कैसे अनुमान लगाया ?

दूसरा : श्रीमान्, प्रत्यक्ष को प्रमाण की क्या आवश्यकता है, आप कोई प्रश्न पूछ कर देखिए, कोई समस्या सामने रख कर देखिये—आप की तसल्ली हो जाएगी ।

पहला : और जो न हुई तो ?

दूसरा : न हुई तो मैं अपना दावा वापस ले लूँगा—इस में शरमाने की बात क्या है ?

पहला : अच्छा, श्रीमान्, तो बताइये अंतिम मुगल सम्राट् बहादुरशाह की मृत्यु का कारण क्या था ?

दूसरा : प्रथम मुगल सम्राट् बाबर ।

पहला : मैं नहीं समझा ।

दूसरा : आप जैसे मूर्ख सीधी सी बात भी जरा देर से समझते हैं । देखिये समझने की कोशिश कीजिए । अगर बाबर न होता तो हुमायूँ नहीं होता, और हुमायूँ न होता तो अकबर नहीं होता, और अकबर नहीं होता तो जहाँगीर नहीं होता, और जहाँगीर न होता तो शाहजहाँ नहीं होता, और शाहजहाँ नहीं होता तो औरंगजेब नहीं होता, और···

पहला अरे श्रीमान्, आप तो मुगल वंश का शिजरा बताने लगे।

दूसरा : और क्या करूँ ? वैसे मेरा उत्तर आपकी समझ में जो नहीं आता।

पहला : समझ में तो अब भी नहीं आ रहा है।

दूसरा : मैं कह रहा था कि बाबर नहीं होता तो उस के वंशज भी न होते और अंतिम वंशज बहादुरशाह का भी जन्म नहीं होता, ठीक है न ?

पहला : ठीक है।

दूसरा : जब बहादुरशाह का जन्म ही नहीं होता तो वह मरता भी नहीं। इसलिए हम कह सकते हैं कि बहादुरशाह की मृत्यु का कारण बाबर था। समझ गए आप ?

पहला : जी, अच्छा, अब यह बताइए कि वर्षा क्यों होती है ?

दूसरा : वर्षा होने का एक तो प्राकृतिक कारण है जो स्कूलों में बच्चों को बताया जाता है। किन्तु मेरे विचार से इस का एक अन्य कारण है।

पहला : वह क्या ?

दूसरा : वर्षा इस लिए होती है कि नदियों में बाढ़ आ जाए, आसपास के गाँव डूब जाएँ, लोग बेघर हो जाएँ, और समाज सेवकों को बाढ़ पीड़ितों की सेवा करने का इतना समय अवश्य मिल जाए जितनी देर में उन का फोटो खिंच सके और फिर अखबारों में छप सके। समझ गए ?

पहला : जी, अब यह बताइये कि अगर घोड़े नहीं होते तो क्या होता ?

दूसरा : मोटरें नहीं बनतीं।

पहला : क्यों ?

दूसरा : क्योंकि मोटरों में हार्स पावर होनी जरूरी है। समझ गए ?

पहला : जी, और अगर गधे न होते ?

दूसरा : तो आप जैसे अनेक लोग अपने को अक्लमन्द समझते। समझ गए ?

पहला : जी, अगर मनुष्य चाँद पर उतर जाए तो ?

दूसरा : तो महीने में पंद्रह दिन वह घटेगा और पंद्रह दिन बढ़ेगा। समझ गए ?

पहला : जी, सिर दर्द दूर करने का सब से अच्छा उपाय बताइए।

दूसरा : सिर दर्द के कारण को दूर करिए। समझ गए ?

पहला : जी, लेखक बनने का सब से आसान रास्ता क्या है ?

दूसरा : चोरी, यानी दूसरे की रचना को अपने नाम छपवा देना, समझ गए ?

पहला : जी, चाँद रात में ही क्यों निकलता है ?

दूसरा : दिन में उसे शरम लगती है, समझ गए ?

पहला : जी, भूख क्यों लगती है ?

दूसरा : ताकि किसान भूखा न मर जाए ? समझ गए ?

पहला : जी, पत्नी से पति बड़ा होता है या पति से पत्नी ?

दूसरा : इंचीटेप ले कर उनकी लम्बाई नाप लीजिए ।

पहला : अगर आपके पड़ोसी का घर जल कर खाक हो जाए तो आप को खुशी होगी या अफसोस ?

दूसरा : खुशी । इसलिए कि अब उसे हाऊस टेक्स नहीं देना पड़ेगा ।

पहला : मकानों की समस्या कैसे सुलझाई जा सकती है ?

दूसरा : लोगों को खुली हवा में रहने के लाभ बताकर । समझ गए ?

पहला : जी, लक्ष्मीजी उल्लू पर क्यों सवारी करती हैं ?

दूसरा : क्योंकि अभी तक स्वर्ग में हवाई जहाज बनने शुरू नहीं हुए । समझ गए ?

१८

अब कोई चिंता नहीं

(नीरज थकाहारा शाम को दफ्तर से लौटता है और एक कुरसी पर बैठ जाता है। उसकी पत्नी लक्ष्मी अन्दर से आ कर पूछती है)

लक्ष्मी : (आते हुए) क्या हुआ ?

नीरज : (थके स्वर में) होना क्या था ! अरजा नामंजूर हो गई।

लक्ष्मी : क्यों ?

नीरज : क्यों क्या ! बस हो गई ।

लक्ष्मी : आखिर कारण तो बताया होगा ?

नीरज : कारण क्या—बहाना कहो।

लक्ष्मी : पूरी बात तो कहो ।

नीरज : तो सुनो—हमारी छुट्टी की अरजी इसलिए नामंजूर कर दी गई कि गरमियों में पहाड़ जाने वालों की सूची में पहले अफसर, फिर बड़े बाबू और सब से बाद में हम जैसे छोटे बाबू आते हैं। कुछ अफसर, कुछ बड़े बाबू और कुछ छोटे बाबुओं को छुट्टी मिल गई, और बाकी को इसलिए नहीं मिली कि पूरे दफ्तर को पहाड़ पर ले जाने की योजना अभी तक नहीं बनी है।

लक्ष्मी : इसका मतलब यह हुआ कि हम इस बार पहाड़ नहीं जा सकते। हमें दिल्ली की गरमी में भुनना पड़ेगा।

नीरज : लक्ष्मी, तुम क्यों इस गरमी में भुनती हो ? तुम पहाड़ चली जाओ। मेरी छुट्टी नामंजूर हुई है—तुम्हारी तो नहीं। मैं तुम्हारी छुट्टी मंजूर करता हूँ।

लक्ष्मी : (हँसते हुए) क्या कहने हैं बड़े साहब के !

नीरज : (हँसी में योग देते हुए) दफ्तर में न सही—घर में तो मैं बड़ा साहब

हूँ ही ।

लक्ष्मी : जबरदस्ती ही ? जब मैं तुम्हें अपना बड़ा साहब मानती ही नहीं, तो तुम कैसे बन सकते हो ?

नीरज : तो फिर क्या मानती हो ?

(लक्ष्मी शरमाने लगती है ।)

नीरज : बोलो न, लक्ष्मी । शरमाती क्यों हो ?...बताओ न !

लक्ष्मी : (शरमा कर) बताऊँ ?

नीरज : (उत्सुक) हाँ ।

लक्ष्मी : (शरमा कर) मैं तुम्हें अपने...

नीरज : (उत्सुक) हाँ, हाँ, बताओ न !

लक्ष्मी : पिताजी का दामाद मानती हूँ ?

नीरज : (निराश) बस ? और अपना ?

लक्ष्मी : कुछ नहीं ।

नीरज : यह बात है ! खैर, तुम्हारी मरजी । अच्छा, तुम अपने पिताजी का कहना तो मानती हो न !

लक्ष्मी : न मानती तो तुम उनके दामाद कैसे बन जाते ?

नीरज : अच्छा, तो मैं तुम्हारा दामादा बनने···

लक्ष्मी : (टोक कर) क्या कहा ?

नीरज : (अनजान सा) दामाद बनने···

लक्ष्मी : किस का दामाद ?

नीरज : तुम्हारा !

लक्ष्मी : शरम नहीं आती तुम्हें ?

नीरज : कोई ज़बरदस्ती है ?

लक्ष्मी : सोच-समझ कर बोलो । दामाद तुम मेरे पिताजी के हो या मेरे ?

नीरज : क्या बेतुकी बात करती हो । भला मैं तुम्हारे पिताजी का दामाद किस रिश्ते से हो सकता हूँ ?

लक्ष्मी : (झुँझला कर) मेरे पति होने के रिश्ते से ।

नीरज : लेकिन तुम मुझे अपना पति मानती ही कहाँ हो ?

लक्ष्मी : और क्या मानती हूँ ?

नीरज : अपने पिताजी का दामाद ।

लक्ष्मी : चलो हटो, तुम बड़े वो हो ।

नीरज : एक बार फिर कहो न !

लक्ष्मी : नहीं कहती ।

नीरज : नहीं ?

लक्ष्मी : नहीं !

नीरज : नहीं ?

लक्ष्मी : नहीं ! नहीं !

नीरज : नहीं, तो न सही । तुम्हारे 'नहीं-नहीं' के चक्कर में असली बात तो खटाई में पड़ गई । दफ्तर से लौटते हुए तुम्हारे पिताजी से मिला था । उन्होंने तुम्हें इसी समय बुलाया है ।

लक्ष्मी : क्यों ?

नीरज : बात यह है कि जब मैंने उन्हें बताया कि छुट्टी न मिलने की वजह से मैं पहाड़ नहीं जा सकता और इस से उन की बेटी का दिल टूटने का खतरा है···

लक्ष्मी : मैंने कब कहा ?

नीरज : कहा नहीं, पर मैं तो तुम्हारे दिल की बात समझ सकता हूं । हफ्ते भर से तुम पहाड़ जाने की तैयारी कर रही हो ।

लक्ष्मी : तो क्या हुआ ?

नीरज : भला, मैं कैसे यह देख सकता हूँ कि तुम मेरे कारण मन मार कर बैठ जाओ । मैं ने जब तुम्हारे पिताजी से सब कहा, तो बोले, 'कोई बात नहीं—मैं लक्ष्मी को अपने साथ पहाड़ ले जाऊँगा ।'

लक्ष्मी : लेकिन पिताजी का तो कोई प्रोग्राम था नहीं इस साल पहाड़ जाने का ।

नीरज : एकाएक बन गया । चलो, अच्छा ही हुआ ।

लक्ष्मी : मैं नहीं जाती तुम्हारे बिना ।

नीरज : यह क्या बात हुई ! तुम नहीं जाओगी तो मुझे बहुत बुरा लगेगा ।

लक्ष्मी : मेरे जाने से तुम्हें खुशी होगी ?

नीरज : बहुत ज्यादा ।

लक्ष्मी : (रूठकर कर) मैं क्या अब इतनी बुरी लगने लगी हूँ तुम्हें ?

नीरज : (घबरा कर) नहीं...नहीं...मेरा मतलब यह नहीं था···

लक्ष्मी : और नहीं तो क्या ! मुझ से मन भर गया है ?

नीरज : नहीं लक्ष्मी, यह बात नहीं है, मेरा मतलब था कि दिल्ली की गरमी से तुम्हारी जान बच जाएगी—इस की मुझे खुशी है ।

लक्ष्मी : यानी मुझ से दूर रहने की खुशी तुम्हें नहीं है ?

नीरज : अजी, राम का नाम लो ! तुम तो जानती ही हो कि जिस दिन से हम एक हुए हैं मैं दो की गिनती ही भूल गया ।

लक्ष्मी : क्यों झूट बोलते हो !

नीरज : तुम्हें यकीन नहीं आता तो दफ्तर से मेरी फाइलें मँगा कर देख लो ।

लक्ष्मी : फाइलों में क्या है ?

नीरज : जगह-जगह लिखा मिलेगा 'नील' ।

लक्ष्मी : (आश्चर्य से) नील ? कपड़ों में देने का नील ? क्या तुम दफ्तर में नील बेचते हो ?

नीरज : आह, कितनी भोली हो तुम ! यह कपड़े धोने का नील नहीं, बल्कि मेरे और तुम्हारे नाम के पहले अक्षर के योग से बना नील है—नीरज और लक्ष्मी ।

लक्ष्मी : चलो हटो, तुम बड़े वो हो !

नीरज : एक बार फिर कहो न !

लक्ष्मी : नहीं कहती ।

नीरज : नहीं ?

लक्ष्मी : नहीं !

नीरज : नहीं ?

लक्ष्मी : नहीं ! नहीं !

नीरज : नहीं, तो न सही । तुम्हारे 'नहीं-नहीं' के चक्कर में असली बात तो खटाई में पड़ गई । हाँ, तो मैं कह रहा था कि तुम्हारे पिताजी ने तुम्हें इसी समय बुलाया है । कल किसी समय उन का इरादा है जाने का ।

लक्ष्मी : मैं तो पिताजी से कह दूँगी कि इस तरह तुम्हें यहाँ छोड़ कर मुझे पहाड़ जाना अच्छा नहीं लगता ।

नीरज : फिर वही बात ! तुम तो बच्चों की तरह ज़िद पर अड़ जाती हो । तुम नहीं जाओगी तो पिताजी भी नहीं जाएँगे । इस बुढ़ापे में वह यहाँ गरमी में भुनें—यह तुम्हें अच्छा लगेगा ?

लक्ष्मी : लेकिन...

नीरज : लेकिन-वेकिन कुछ नहीं । चलो, तुम्हें पिताजी के घर छोड़ आऊँ ।

लक्ष्मी : लेकिन मैं जल्दी ही लौट आऊँगी । तुम्हारे बिना मुझे वहाँ अच्छा नहीं लगेगा ।

नीरज : जब दिल्ली में बारिश शुरू हो जाए, तो लौट आना ।

लक्ष्मी : मेरे पीछे तुम अपना ध्यान रखोगे न ?

नीरज : अपना ही नहीं, यहाँ बैठे-बैठे मैं तुम्हारा ध्यान भी रखूँगा ।

लक्ष्मी : मैं हर घंटे एक पत्र लिखा करूँगी । उत्तर दोगे न ?

नीरज : न...न...ऐसा न करना ।

लक्ष्मी : क्यों ? परेशान हो जाओगे पढ़ते-पढ़ते ?

नीरज : नहीं, नौकरी छूट जाएगी ।

लक्ष्मी : क्यों ?

नीरज : तुम्हारे पत्र पढ़ता रहूँगा तो दफ्तर जाने का समय कहाँ मिलेगा ।

लक्ष्मी : तुम्हें मुझ से ज्यादा दफ्तर प्यारा है ?

नीरज : क्या बेतुकी बात करती हो !

लक्ष्मी : (आँसू ला कर) अच्छा, अब मेरी बातें तुम्हें बेतुकी लगने लगीं ! कल को मैं भी बेतुकी लगने लगूँगी ! मैं नहीं जाती ।

नीरज : अरे...रे...रे ! तुम तो रोने लगीं । अच्छा, बाबा, तुम्हारी हर शर्त मुझे मंजूर है । अब तो खुश हो ?

लक्ष्मी : हाँ ।

नीरज : (चिढ़ाते हुए) हाँ !...अच्छा, चलो तुम्हें छोड़ आऊँ ।

लक्ष्मी : तुम कोई फटफट पकड़ लो । मैं तब तक सामान सँभाल लूँ ।

नीरज : अच्छा ।

(दोनों जाते हैं । फटफट के जाने की आवाज़)

(नीरज और उस के दो मित्र हँसते हुए प्रवेश करते हैं।)

रघुवीर : तो, नीरज, आखिर तुम्हें भाभीजी से छुटकारा मिल ही गया !

नीरज : रघ्घू भाई, बड़ी मुश्किल से यह दिन देखना नसीब हुआ है।

श्याम : लेकिन, नीरज, मेरी समझ में यह नहीं आया कि भाभीजी के साथ पहाड़ों की सैर के मुकाबले अकेले दिल्ली की लू तुम्हें क्यों पसन्द है ?

नीरज : (साँस भर कर) श्यामू, जब शादी करोगे न, तब समझोगे मेरा दर्द।

श्याम : अभी समझा दो, ताकि हम शादी ही न करें।

नीरज : तुमने शहद की मक्खी का छत्ता देखा है ?

श्याम : देखा है।

नीरज : उसका शहद खाया है ?

श्याम : खाया है।

नीरज : कैसा होता है ?

श्याम : मीठा।

नीरज : कभी शहद के छत्ते में हाथ डाला है ?

श्याम : हाँ, एक बार।

नीरज : कैसी बीती ?

श्याम : दर्द के मारे चीख निकल पड़ी।

नीरज : बस तो यही समझ लो कि शादी शहद की मक्खी का छत्ता है। कभी शहद के समान मीठा और कभी दर्द भरी चीख।

रघुवीर : अच्छा, आने दो भाभीजी को—तुम्हारी शिकायत करूँगा।

नीरज : उसका मौका ही कब मिलेगा ! साल भर हो गया मुझे शहद के छत्ते में रहते हुए। बताओ, कितनी बार तुम जैसे पुराने यार-दोस्तों से मिल-बैठ कर गप्पें हाँकी हैं ?

रघुवीर : यह तो ठीक ही कहते हो, यार।

नीरज : बस, यही तो बात है। मैं तो जैसे कटघरे में बन्द हो गया था। अब कम-से-कम एक महीना तो आज़ादी से कटेगा।

श्याम : क्या प्रोग्राम बनाया है ?

नीरज : प्रोग्रामों की क्या कमी है ! अब कोई चिंता नहीं। दफ्तर से उठ कर आराम के साथ कनाट प्लेस की सैर करेंगे, सिनेमा देखेंगे, और फिर

होटल में ठाठ से खाना खा कर देर से घर लौटेंगे।

रघुवीर : पिकनिक का प्रोग्राम बनाया जाए।

श्याम : कुतुब चलो।

रघुवीर : नहीं, ओखले। चाँदनी रात में नदी किनारे बड़ा मज़ा आएगा।

नीरज : जहाँ चाहे चलो। अब तो कुछ दिनों के लिए अपनी ज़िंदगी ही पिकनिक बन गई है।

श्याम : बड़े मूड में मालूम होते हो, यार!

नीरज : और क्या! श्यामू, एक आइडिया आया है।

श्याम : क्या?

नीरज : एक साल से खुल कर हँसा नहीं हूँ। आओ, हम तीनों कम-से-कम पाँच मिनट तक लगातार हँसते रहें? क्या खयाल है?

श्याम : पड़ोसी क्या कहेंगे?

नीरज : ज्यादा से ज्यादा यही तो कहेंगे कि हम पागल हो गए हैं! कहने दो।

रघुवीर : लेकिन हँसोगे किस बात पर?

नीरज : इस बात पर कि साल भर से मैं हँसा क्यों नहीं?

रघुवीर : तो पहले तुम्हीं हँसना शुरू करो। फिर हम दोनों तुम पर हँसेंगे।

नीरज : मंजूर (हँसने की कोशिश करता है। लेकिन बार-बार कोशिश करने पर भी एक फीकी हँसी निकल कर रह जाती है) मालूम होता है हँसने की प्रेक्टिस ही छूट गई।

श्याम : वाकई, नीरज, तुम्हारी यह हालत देख कर तो तरस आता है।

रघुवीर : कोई बात नहीं, नीरज। एक बार फिर कोशिश करो।

(नीरज फिर हँसने की कोशिश करता है, लेकिन खिसियानी हँसी हँस कर रह जाता है।)

नीरज : नहीं हँसा जा रहा है। छोड़ो, कोई और प्रोग्राम बनाओ।

श्याम : ताश जम जाए।

रघुवीर : और सारी रात चले, जैसे तुम्हारी शादी से पहले जमा करती थी, नीरज।

नीरज : लेकिन जब से शादी हुई है, घर में ताश के पत्ते ही नजर नहीं आते।

रघुवीर : क्यों?

नीरज : लक्ष्मी को ताश से नफरत है। मैं ने कहा न कि इस घर में सब काम लक्ष्मी की मरजी से होते हैं। मैं कहूँ कि गरम चाय पिऊँगा, तो वह कहती है ठंडा शरवत पिओ। मैं कहता हूँ...खैर, छोड़ो— अब उन बातों की याद कर के मूड क्यों खराब करूँ ?

श्याम : हाँ, तो फिर ताश के प्रोग्राम का क्या रहा ?

रघुवीर : मैं अभी बाजार से जा कर खरीद लाता हूँ। नीरज, पैसे निकालो।

नीरज : जरूर। अब पैसों की क्या चिंता है ! लक्ष्मी तो है नहीं जो बात-बात पर पूछे, 'क्यों चाहिए पैसे ?...क्या करोगे ?...क्यों फिजूलखर्ची करते हो ?...'

रघुवीर : अच्छा, लाओ तो निकालो तीन रुपए।

नीरज : तीन क्या, चार ले जाओ। बढ़िया वाले ताश लाना।

रघुवीर : मैं अभी आया एक मिनट में (जाता है)।

(बाहर फटफट के आने की आवाज। रघुवीर घबराया हुआ जल्दी से अंदर आता है।)

नीरज : (आश्चर्य से) क्या हुआ ?

रघुवीर : वह···बाहर···

श्याम : इतने घबरा क्यों रहे हो ? बाहर क्या भूत है ?

रघुवीर : नहीं।

नीरज : फिर कौन है ?

लक्ष्मी : (आते हुए) मैं हूँ।

नीरज : (हक्का-बक्का) तुम ?

लक्ष्मी : हाँ ! यह क्या धमाचौकड़ी मचा रखी है ?

रघुवीर : भाभीजी, हमारा कोई कसूर नहीं।

श्याम : भाभीजी, असली बात यह है कि आप के जाने से बेचारा नीरज बहुत उदास हो गया था। सो हम दोनों इस का मन बहला रहे थे।

रघुवीर : हाँ, भाभीजी, श्यामू ठीक कह रहा है। देखिए न, बेचारा कैसा खोया सा बैठा है। जब से आप गई हैं बस ऐसा ही गुमसुम बैठा है।

लक्ष्मी : अब कोई चिंता नहीं। मैं आ गई हूँ।

श्याम : अच्छा, हम चलते हैं। (दोनों जाते हैं)

लक्ष्मी : (नीरज से) क्या हुआ तुम्हें ?

नीरज : (धीरे से उखड़ा-उखड़ा) तुम वापस क्यों चली आईं ?

लक्ष्मी : तुम्हें साथ ले जाने के लिए ?

नीरज : मैं कैसे जा सकता हूँ ?

लक्ष्मी : मेरे जोर देने पर पिताजी तुम्हारे अफसर से छुट्टी की सिफारिश करेंगे। वह पिताजी के पुराने मित्र हैं। ज़रूर मान जाएँगे। अब कोई चिंता नहीं—हम दोनों साथ-साथ पहाड़ की सैर करेंगे।

१९

बात बस टिकट की थी

(बस स्टाप पर आकर रुकती है। बस में पहले चढ़ने के लिए भगदड़ मच जाती है।)

कंडक्टर : (जोर से) एक-एक कर के लाइन में आइए, साहब !

लालाजी : (झगड़ते हुए) लाइन में मैं सब से आगे था।

मनोहर : (युवक, लालाजी को छेड़ते हुए) लालाजी, लाइन में आप नहीं, आप की तोंद आगे थी—आप दूसरे नम्बर पर थे।

(भीड़ की हँसी)

लालाजी : (बिगड़ कर) बड़े बदतमीज़ हो जी तुम !

मनोहर : (व्यंग्य से हँस कर) पर आप की तरह झूठा नहीं हूँ। क्या खयाल है आप का ?

लालाजी : (नाराज़ हो कर) अच्छा, चलो ! चलो ! तुम्हीं पहले चढ़ जाओ बस पर।

मनोहर : (चिढ़ा कर) नहीं, पहले आप ही चढ़ जाइए। आजकल झूठ का ही बोलबाला है—फिर आप का ही झूठ क्यों न कामयाब हो ! चलिए आगे।

लालाजी : (भुनभुनाते हुए) आजकल के लड़के···

कंडक्टर : लालाजी, लड़के-लड़कियों का ज़िकर बस में बैठ कर करना। बस चलने दोगे या नहीं ? अभी पूरी लाइन खड़ी है।

मनोहर : (हँस कर) अजी, लालाजी का राज है—जितनी देर चाहें बस खड़ी रख सकते हैं।

लालाजी : (बिगड़ कर) देखो जी, मुझ से छेड़छाड़ मत करो, नहीं तो···

मनोहर : (बात काट कर) दिल्ली से जलावतन कर दोगे ? (हँसता है)

कंडक्टर : (अन्य लोगों से) आइए, साहब, जल्दी-जल्दी बैठिए। बस को देर हो रही है।

(लोग बस में चढ़ते हैं। कंडक्टर घंटी देता है। बस चलती है।)

कंडक्टर : जिन साहब ने टिकट न लिया हो, आवाज़ देकर माँग लें। शरमाने की जरूरत नहीं है।

बाबूजी : एक टिकट नार्थ ब्लाक।

कंडक्टर : कहाँ से बैठे हैं ?

बाबूजी : अभी हम बैठा ही कहाँ है ?

कंडक्टर : तो क्या बस स्टाप पर खड़े हैं ?

बाबूजी : नहीं, बस में खड़ा है—विनय नगर से।

(बस में बैठे यात्री कहकहा लगाते हैं)

कंडक्टर : निकालिए २० नए पैसे। यह लीजिए विनय नगर से नार्थ ब्लाक का बस में खड़े होने का टिकट। अगर बैठे तो ५ नए पैसे और देने पड़ेंगे।

बाबूजी : यह बात है, तो हम एक ही टाँग पर खड़ा हो जाता है। लो, दस नए पैसे का टिकट काट दो।

(यात्रियों का कहकहा)

लालाजी : कंडक्टर जी, एक टिकट मुझे भी देना।

कंडक्टर : कहाँ का ?

मनोहर : (धीरे से) ब्लैक मार्केट का।

लालाजी : (बिगड़ कर) क्या कहा ?

मनोहर : (गम्भीर) आप ने मुझ से कुछ कहा ?

लालाजी : तुमने अभी क्या कहा ?

मनोहर : किस से ?

लालाजी : कंडक्टर जी से।

मनोहर : तो फिर कंडक्टर ही पूछ लेगा—आप क्यों परेशान होते हैं ?

लालाजी : तुमने मेरे बारे में कहा था।

मनोहर : आप को शुबहा कैसे हुआ ?

लालाजी : मैंने सुना जो था ।

मनोहर : जब सुन ही लिया, तो पूछते क्यों हैं ?

लालाजी : देखो, जी, मैं कहे देता हूँ मुझ से छेड़छाड़मत करो, नहीं तो···

मनोहर : (बात काट कर) आप क्यों तकलीफ करते हैं—मैं खुद ही दिल्ली छोड़कर चला जाऊँगा ।

(यात्रियों का कहकहा)

कंडक्टर : हाँ, लालाजी, तो फिर कहाँ का टिकट काट दूँ ?

लालाजी : (बिगड़ कर) कंडक्टर जी···नहीं···कंडक्टर, तुम हँसते क्यों हो ? मैं तुम्हारी शिकायत करूँगा । कम्पलेंट बुक लाओ ।

बाबूजी : क्या लिखेगा कम्पलेंट बुक में, लालाजी ?

लालाजी : लिखूँगा कि कंडक्टर हँस रहा था ।

बाबूजी : लेकिन हँसना तो कोई जुर्म नहीं है ।

मनोहर : लालाजी, आप को धोखा हो गया है । कंडक्टर के चेहरे की हँसी असली नहीं है—बनावटी है । आजकल कर्टसी वीक जो चल रहा है ।

लालाजी : (एकदम बिगड़ कर) तुम चुप रहो जी !

मनोहर : (बनावटी शिष्टता से) जो आज्ञा !

(यात्रियों का कहकहा)

कंडक्टर : हाँ, तो लालाजी, जल्दी बताइए कहाँ का टिकट काटूँ ?

लालाजी : बस कहाँ जाएगी ?

कंडक्टर : आप को कहाँ जाना है ?

लालाजी : क्यों बताऊँ ? मैं नहीं चाहता कि किसी को मालूम हो कि मैं कहाँ जा रहा हूँ ।

कंडक्टर : नहीं बताओगे तो टिकट कैसे दूँगा ?

लालाजी : तुम टिकट दे दो जहाँ तक बस जाती है । मेरी जहाँ मरजी होगी उतर जाऊँगा ।

मनोहर : उतरते समय सब मुसाफिरों से कह दीजिएगा कि अपनी आँखें बन्द कर लें ।

लालाजी : (बिगड़ कर) तुम्हारी आँखें तो मैं अभी बन्द कर दूँगा ।

मनोहर : आप क्यों कष्ट करते हैं—मैं खुद ही बंद कर लेता हूँ।
कंडक्टर : निकालिए ५० नए पैसे, लालाजी।
लालाजी : यह लो।
कंडक्टर : यह लो टिकट।

(कंडक्टर घंटी दे कर बस रोकता है।)

कंडक्टर : ऐरोड्रोम ! हवाई अड्डा ! आइए, साहब, जल्दी-जल्दी बैठिए।
चौधरी : (ग्रामीण बूढ़ा) ओ भैया बस वाले, कहाँ को जाएगी यह ?
कंडक्टर : तुम्हें कहाँ जाना है चौधरी ?
चौधरी : अपने घर को।
कंडक्टर : (भिन्ना कर) कहाँ है तुम्हारा घर ?
चौधरी : गाँव में।
कंडक्टर : (क्रोध से) अजीब गंवा···(क्रोध दबाते हुए) कर्ट्सी बीक है; नहीं तो अभी दो-चार चटपटी सुना देता।
बाबूजी : चौधरी, बस में बैठ जा जल्दी से। फिर सारी पूछताछ कर लेना। हम को दफ्तर को देर हो रही है।
चौधरी : ठीक कहो हो, बाबूजी।

(कंडक्टर घंटी देता है। बस चलती है।)

कंडक्टर : चौधरी, फिर कहाँ का टिकट दूँ ?
चौधरी : भैया, मैंने तो अपने घर जाना है। अब तू चाहे तो वहीं का टिकट काट दे।
कंडक्टर : चौधरी, यह बस तेरे घर नहीं जाएगी। करौल बाग जाएगी।
चौधरी : नहीं, भैया, मुझे किसी बाग में नहीं जाना है। मैं तो अपने गाँव पहुँच कर अपने खेत जाऊँगा। ईख काटनी है।
बाबूजी : चौधरी, कौन सा गाँव है तुम्हारा ?
चौधरी : बहादराबाद।
बाबूजी : तब तो तुम्हें २ नम्बर की बस में बैठना था।
चौधरी : (आश्चर्य से) तो क्या शहर के लोगों की तरह यहाँ की बसें भी नम्बरी होती हैं ?
मनोहर : मालूम होता है, दिल्ली पहली बार आए हो ?

चौधरी : हाँ, भैया। मेरे ललुआ की यहाँ नौकरी लगी है। वीने नगर में सरकारी झोंपड़ी में रहता है। उस के साथ कल आया था गाँव से। आज जा रहा हूँ। ललुआ ने कहा था कि सड़क-सड़क चले जाओ, जहाँ बस मिले बैठ जाना। सो, भैया, वीने नगर से पैदल चलता-चलता यहाँ तक आ गया। थक गया था। जरा सुस्ताने खड़ा हुआ कि यह बस आ गई और इस वाले भैया ने जब बैठने को कहा तो बस में बैठ गया।

मनोहर : खैर, कोई बात नहीं। तुम रीडिंग रोड पर उतर जाना। वहाँ से झंडे वाला जाकर दो नम्बर की बस में बैठ जाना।

कंडक्टर : तो रीडिंग रोड का टिकट दूँ, चौधरी ?

चौधरी : दे दे भैया।

कंडक्टर : यह लो। निकालो ३५ नए पैसे !

चौधरी : भैया, ३५ नए पैसे तो बहुत ज्यादा हैं। कुछ कम ले लो।

कंडक्टर : (विगड़ कर) यह कोई बनिए की दुकान नहीं है ? किराए में मोल-भाव नहीं होता।

चौधरी : तो भैया, नाराज क्यों होते हो ? तुम्हारा पड़ता नहीं खाता तो रहने दो। मुझे यहीं उतार दो—किसी दूसरी बस में चला जाऊँगा।

कंडक्टर : सब बसों में एक ही किराया लिया जाता है।

चौधरी : यह तो बड़ा अँधेरखाता है।

कंडक्टर : निकालो पैसे जल्दी से।

चौधरी : लो, भैया।

(यात्रियों का कहकहा)

कंडक्टर : (अन्य यात्रियों से) आप का टिकट हो गया ?···आप का ? और किसी साहब को टिकट लेना है ? आप का ? आप का टिकट हो गया, साहब ?

मनोहर : नहीं।

कंडक्टर : तो, साहब, आप बोलते क्यों नहीं ?

मनोहर : जब मुझे टिकट लेना ही नहीं है तो क्यों बोलूँ ?

कंडक्टर : आप बग़ैर टिकट सफर करना चाहते हैं ?

मनोहर : हाँ ।

कंडक्टर : मालूम है बग़ैर टिकट सफर करना जुर्म है ।

मनोहर : मालूम है ।

कंडक्टर : फिर क्या मरजी है ?

मनोहर : कुछ नहीं, आराम से बैठे हैं ।

कंडक्टर : बग़ैर टिकट आप बस में नहीं बैठ सकते ।

मनोहर : बैठ सकता हूँ ।

लालाजी : जरा देखो तो ! चोरी और सीनाज़ोरी !

मनोहर : लालाजी, आपकी चोरी मैंने खूब देखी है । आपके पड़ोस में ही रहता हूँ । मेरे बीच में मत बोलो, नहीं तो सब के सामने तुम्हारी पोल खोल दूँगा ।

लालाजी : अरे, जाओ ! तुम क्या बिगाड़ लोगे मेरा ! शरम नहीं आती तुम्हें—बगैर टिकट सफर करने में ! राष्ट्रीय सरकार को धोखा देना चाहते हो ?

मनोहर : धोखा मैं नहीं तुम देते हो मसाले में मिलावट, घी में मिलावट कर के जनता को ज़हर खिलाते हो—और ऊपर से लीडरी झाड़ते हो ।

लालाजी : देखो, जी, तुम मुझ पर झूठा आरोप लगा रहे हो । सब के सामने मेरी बेइज्जती कर रहे हो । इस का नतीजा अच्छा नहीं होगा ।

मनोहर : वह तो बाद में देखा जाएगा, लालाजी । तुम्हारे खिलाफ मैं ने पक्के सबूत इकट्ठे कर लिए हैं । बस एक दिन पुलिस को ले कर आने वाला हूँ । तैयार रहना ।

लालाजी : हाँ, हाँ, ले आना पुलिस को । देख लूँगा पुलिस को और तुम्हें भी ।

कंडक्टर : (मनोहर से) मैं आखिरी बार कहता हूँ साहब, आप या तो टिकट ले लीजिए, वरना मुझे बस थाने ले जानी पड़ेगी ।

मनोहर : शौक से ले चलो ।

बाबूजी : (मनोहर से) मिस्टर, क्यों झगड़ा करता है ? बस थाने जाएगी तो हम को दफ्तर को देर हो जाएगी ।

मनोहर : देर हो जाएगी तो आप को क्या फर्क पड़ेगा, बाबूजी ? वहाँ कौन सा आप काम करते हैं ?

बाबूजी : काम नहीं करता तो क्या करता है ?

मनोहर : सब जानता हूँ। दिन भर चाय पीने और गप्पें हाँकने के अलावा आप को और क्या काम रहता है ?

लालाजी : सब को अपनी ही तरह निठल्ला समझते हो ?

मनोहर : आप को नहीं, लालाजी। आप तो चौबीसों घंटे लोगों की जेब काटने में लगे रहते हैं—यह मैं जानता हूँ।

लालाजी : (बिगड़ कर) ऐ ! ज़बान सँभाल कर बात करो ! जेबकतरे होगे तुम !

मनोहर : काश, कि मैं भी इस विद्या में आप की तरह पारंगत होता, तो कम-से-कम आप की जेब काटता, और सब मालमत्ता ग़रीबों को बाँट देता।

लालाजी : क्या कहने हैं दानवीर सेठ के ! तभी तो राष्ट्रीय सरकार की जेब काट रहे हो, ताकि बस टिकट के पैसे गरीबों को बाँट दो ! वाह ! वाह ! देख लो, भाइयो, ऐसे दानवीर के दर्शन बड़ी मुश्किल से होते हैं ! (हँसते हैं)।

कंडक्टर : साहब, आप लोग इस झगड़े को बाद में तय कर लेना। पहले टिकट की बात करो। वह देख लीजिए बस में नोटिस लगा है—"दिल्ली परिवहन की बसों में बिना टिकट सफर करना जुर्म है···"

मनोहर : (बात काट कर) "और टिकट न लेने पर ५० रुपए तक जुर्माना हो सकता है जिसे अदा न करने पर १५ दिन की कैद भी हो सकती है"—यह मैं जानता हूँ। तो, कंडक्टर महाराज, तुम से जो हो सके कर लो। मैं ने एक बार कह दिया कि मुझे टिकट नहीं लेना है। बस बात खत्म हो गई।

कंडक्टर : बात कैसे खत्म हो गई ! बात तो अब शुरू होगी। यह लीजिए थाना भी आ गया।

(कंडक्टर घंटी दे कर बस रुकवाता है)

कंडक्टर : उतरिए, साहब।

मनोहर : बड़े शौक से।

कंडक्टर : लालाजी, आप भी अगर गवाही के लिए साथ चलें, तो बड़ी मेहर-

वानी होगी ।

लालाजी : ज़रूर, ज़रूर । ऐसे लोगों को तो ज़रूर सज़ा दिलवानी चाहिए । यह तो धर्म का काम है । देश-सेवा है ।

कंडक्टर : बाबूजी, आप भी चलिए ।

बाबूजी : (घबरा कर) क्यों ? हम को क्यों पकड़वाता है ? हम ने तो पूरा टिकट लिया है ।

कंडक्टर : नहीं, बाबूजी, आप को मैं क्यों पकड़वाऊँगा !

बाबूजी : फिर हम को क्यों साथ चलने को कहता है ?

कंडक्टर : इन साहब के खिलाफ गवाही देने के लिए ।

बाबूजी : नहीं, बाबा, हम झगड़े में नहीं पड़ता ।

मनोहर : चलिए भी, बाबूजी, तमाशा देखिएगा । साथ ही आज की तारीख़ में आप को कुछ काम करने को मिल जाएगा ।

लालाजी : बाबूजी, आप को ज़रूर गवाही देनी चाहिए । इन साहब ने आप को भी तो बुरा-भला कहा था । उस का मज़ा तो चखाना चाहिए इन्हें ।

बाबूजी : हाँ, हाँ, वह तो है ! कहता था हम दफ्तर में कुछ काम नहीं करता । अब हम बताएगा क्या काम करता है । चलो ।

(तीनों चलते हैं ।)

कंडक्टर : थानेदार साहब, यह साहब बस में बिना टिकट सफर कर रहे हैं ।

थानेदार : ये तीनों आदमी ?

बाबूजी : (घबरा कर) नहीं, नहीं, हम तो पूरा टिकट लिया है ।

कंडक्टर : नहीं, थानेदार साहब, यह बाबूजी और लालाजी गवाही के लिए आए हैं । टिकट इन तीसरे साहब ने नहीं लिया ।

थानेदार : (मनोहर से) देखने में तो शरीफ लगते हो ।

मनोहर : खानदानी शरीफ हूँ ।

लालाजी : क्या कहने हैं ! तभी तो टिकट नहीं लिया ।

थानेदार : (मनोहर से) क्यों साहब, आपने टिकट नहीं लिया ?

मनोहर : जी नहीं ।

थानेदार : आप जानते हैं टिकट न लेना जुर्म है ?

मनोहर : खूब अच्छी तरह ।

थानेदार : जेब में पैसे नहीं हैं ?

मनोहर : बटुआ भरा हुआ है ।

थानेदार : देखिये, साहब, आप अब भी टिकट ले लें, तो मैं आप को छोड़ सकता हूँ ।

मनोहर : छूट तो मैं वग़ैर टिकट के भी जाऊँगा ।

थानेदार : कैसे ?

मनोहर : यह देखिए !

(थानेदार, कंडक्टर, लालाजी और बाबूजी एक साथ आश्चर्य से कहते हैं—'एं !')

कंडक्टर : तो आप ने पहले क्यों नहीं बताया ?

मनोहर : तुम ने पूछा ही कब था ? पूछते तो बता देता कि मेरे पास बस का पास है ।

२०

होली है !

(पार्श्व में होली से संबंधित कोई गीत गाते-बजाते लोगों की टोली का स्वर । बीच-बीच में 'होली है ! होली है !' का हुल्लड़ ।)

नरेश : (जरा दूर से) भाभी ! होली है ! (हँसता है) ।

भाभी : अरे लाला, यह क्या ? बिना अल्टीमेटम के रंग डालना कहाँ की बहादुरी है ?

नरेश : अल्टीमेटम देने पर क्या कोई रंग डलवाता है ?

भाभी : अच्छा, यह बात है, तो लो ! (हँसती है ।)

नरेश : हैं ! हैं ! यह क्या करती हो, भाभी ? आँख, नाक, कान, सिर —सब में गुलाल भर दिया ।

भाभी : (हँसते हुए) होली है ! रोते क्यों हो, लाला ?

नरेश : रोता कौन है, भाभी ! आज जो रोए उस से बड़ा मनहूस और कौन होगा ? मैं अभी चाँदनी चौक से होकर आया हूँ । खूब रंग जम रहा है । जिधर देखो अबीर-गुलाल के बादल उड़ रहे हैं । रंग की फुहारें उड़ रही हैं ।

भाभी : अभी गली की औरतें आई थीं । सब ने मिल कर मेरी अच्छी गत बनाई ।

नरेश : तभी इतनी रंगीन दिखाई दे रही हो, भाभी ?

भाभी : और, लाला, तुम भी तो एकदम भूत बने हुए हो । जरा शीशे में देखो—आधा मुँह काला हो रहा है ।

नरेश : तुम चाहे कुछ भी कहो, भाभी, मैं काला मुँह करके घर से जाने से तो रहा ।

(नरेश और भाभी हँसते हैं।)

लेकिन, भाभी, होली का मजा तो बाहर ही है। खूब धमा चौकड़ी जमी हुई है। चाँदनी चौक से कोई अछूता गुजर तो जाए!

भाभी : गलियों में बच कर निकलने का रास्ता ही कहाँ होता है। बस, एक बार कोई दिखाई दे जाना चाहिये—एकदम घिर जाता है।

नरेश : मेरे देखते-देखते एक हजरत की वह गत बनी कि जिन्दगी भर याद रहेगा।

भाभी : क्या हुआ?

नरेश : हुआ क्या? हजरत छिपते-छिपाते निकले जा रहे थे। सामने से एक टोली ने घेर लिया। वह पीछे भागे, तो ऊपर छज्जों से रंग की बाल्टियाँ उनके ऊपर खाली होने लगीं। घिर गए, तो लगे छटपटाने। लोगों ने पकड़कर उन का बन्दर बना दिया।

(दोनों हँसते हैं।)

भाभी : साल भर बाद तो होली का त्यौहार आता है। आज के दिन सब को खुली छूट होती है।

नरेश : फिर भी बुरा मानने वाले बुरा मान ही जाते हैं। गली में एक लालाजी बड़ी शान से चले जा रहे थे कि एकाएक उन के सिर पर से टोपी गायब हो गई। ऊपर जो देखा तो टोपी उड़ी जा रही थी।

भाभी : (हँसते हुए) कैसे?

नरेश : छज्जे पर एक लड़का धागे में काँटा बाँध कर लटकाए बैठा था। नीचे से दूसरे लड़के ने लालाजी की टोपी में चुपके से काँटा फँसा दिया और ऊपर वाले लड़के ने टोपी समेत धागे को खींच लिया।

(दोनों हँसते हैं।)

भाभी : लालाजी बहुत झेंपे होंगे?

नरेश : अजी, वह तो एकदम लाल-पीले हो गए। लगे लड़कों को गालियाँ देने। पर तुम जानो—लड़के और फिर होली ! ताली वजा-वजा कर लालाजी से वह लोक-नृत्य करवाया कि मजा आ गया।

भाभी : कोई उन से पूछे कि अगर इस सब से बचना था तो घर से बाहर निकले ही क्यों ?

नरेश : और क्या ! हमारे भैया की तरह सुबह से ही कमरा बन्द कर के बैठ जाते।

भाभी : छोड़ो उन की बात ! वह भी कोई आदमी हैं।

नरेश : (हँस कर) आदमी नहीं तो क्या बन्दर हैं ?

भाभी : धीरे बोलो ! कहीं सुन लिया, तो तुम्हारा बन्दर बना देंगे।

नरेश : एक बार बाहर निकलें तो, फिर देखो क्या हालत बनाता हूँ उन की।

भाभी : यह तो बड़ी मनहूसियत है, लाला। बाहर गली-मुहल्लों में लोग गा-बजा रहे हैं, रंग खेल रहे हैं, होली मिल रहे हैं और यहाँ यह कमरा बन्द कर के बैठे हैं।

नरेश : आज क्या—भैया तो हर साल कमरा बन्द करके बैठ जाते हैं।

भाभी : क्या उन्हें किसी तरह बाहर नहीं निकाला जा सकता ?

नरेश : कुछ तो करना ही चाहिए।

भाभी : लेकिन क्या ?

नरेश : वही तो सोच रहा हूँ।

भाभी : जल्दी सोचो।

नरेश : तुम भी कुछ सोचो, भाभी।

भाभी : सोच लिया।

नरेश : क्या ?

भाभी : कान में सुनो (फुसफुसा कर कुछ कहती है)।

नरेश : वाह ! वह मारा पापड़ वाले को।

भाभी : और उस के बाद।

नरेश : वह तुम मुझ पर छोड़ दो।

भाभी : बस तो ठीक है। मैं चलती हूँ।

नरेश : और मैं भी चला भैया के कमरे की तरफ। (दरवाजा खटखटा कर, परेशानी में) भैया ! भैया !

भैया : (अन्दर से) कौन है ?

नरेश : मैं हूँ—नरेश ?

भैया : सच बोल रहे हो, या कोई और नरेश की आवाज बना कर बोल रहा है ?

नरेश : भैया, मैं ही हूँ—बिल्कुल असली आवाज है।

भैया : क्या बात है ?

नरेश : दरवाजा खोलो।

भैया : दरवाजा नहीं खोलूंगा। बाहर से ही कहो क्या बात है ?

नरेश : भीभी को कुछ हो गया है।

भैया : क्या हो गया है ?

नरेश : पता नहीं—एकदम गश आ गया।

भैया : जरूर किसी ने मिठाई में भंग मिला कर खिला दी होगी। तभी तो कहता हूँ होली मत खेला करो। यह शरीफ आदमियों का त्यौहार नहीं है। पर मेरी कोई सुनता ही नहीं।

नरेश : भैया, यह होली की अच्छाई-बुराई बताने का समय नहीं है। बाहर आकर भाभी को देखिए।

भैया : तुम सच बोल रहे हो न ?

नरेश : एकदम काला सच।

भैया : यह काला सच क्या होता है ?

नरेश : सफेद झूठ का बिलकुल उलटा।

भैया : लेकिन मुझे कैसे यकीन आये ?

नरेश : (झुँझला कर) आप को यकीन चाहे आए, चाहे न आए। पर मुझ से बाद में कुछ मत कहिएगा कि खबर नहीं करी। अब आप जानें और भाभी। मैं अपना फर्ज निभाने के लिए डाक्टर को बुलाने जाता हूँ।

(कहता-कहता जाता है ।)

भैया : (दरवाजा खोलकर) जरूर कोई गड़बड़ है, नहीं तो नरेश इतना घबराया हुआ न होता । चलूँ, देखूँ क्या बात है ? (आवाज दे कर) मैंने कहा—कहाँ हो ?···अरे, मैं भी कैसा बुद्धू हूँ—वह तो बेहोश है । सुनेगी कैसे ! चलूँ उसके कमरे में (चलता है) अरे, यहाँ तो कोई भी नहीं ! क्या नरेश उसे डाक्टर के ले गया ?···नहीं, नहीं, होली के हुड़दंग में वह एक बेहोश औरत को लेकर कैसे डाक्टर के पास जा सकता है !··· पर नरेश ने तो कहा था कि अपने कमरे में बेहोश पड़ी है··· कहीं उस ने घबराहट में गलत कमरा तो नहीं बता दिया ?··· या मैं ही घबरा कर किसी दूसरे कमरे में तो नहीं आ गया ?

भाभी : (आते हुए) कैसी घबराहट, कैसा कमरा ?

भैया : (आश्चर्य से) हैं ! तुम होश में आ गईं ?

भाभी : (आश्चर्य से) मैं होश में थी कब नहीं ?

भैया : यानी कि तुम बेहोश नहीं थीं ?

भाभी : आप तो होश में बातें कर रहे हैं ?

भैया : नरेश तो कह रहा था कि तुम बेहोश हो गई हो ।

भाभी : नरेश आप को कहाँ मिला ? वह तो सुबह से ही घर से गायब है । होली खेलने गया है ।

भैया : होली खेलने कैसे जा सकता है ?

भाभी : क्यों नहीं जा सकता ? मेरे सामने गया है ।

भैया : लेकिन अभी-अभी तो उसने दरवाजा खटखटा कर मुझ से कहा है कि तुम अपने कमरे में बेहोश पड़ी हो, और वह डाक्टर को बुलाने जा रहा है ।

भाभी : (हँसते हुए) आप को वहम हो गया होगा ।

भैया : नहीं, जी, वहम कैसे हो सकता है !

भाभी : फिर कोई भूत होगा ।

भैया : भूत तो आज सभी बने हुए हैं । जरूर कोई होली का भूत आया होगा—उसी ने मजाक किया है ।

भाभी : पर मैं तो घर में ही थी। मैंने तो किसी भूत को अंदर आते देखा नहीं।

भैया : सच कह रही हो ?

भाभी : मैं भला आप से झूठ क्यों बोलूंगी—मैंने किसी को आप का दरवाजा खटखटाते नहीं देखा।

भैया : फिर क्या मामला है ?

भाभी : मेरा खयाल है आप ने सपना देखा होगा।

भैया : मैं कोई सो थोड़े ही रहा था जो सपना देखता।

भाभी : ऐसा पहली बार ही हुआ है, या अकसर आप को इस तरह का दौरा पड़ जाता है ?

भैया : (झुंझला कर) मुझे कुछ नहीं हुआ है।

भाभी : फिर भी किसी डाक्टर को दिखाना अच्छा रहेगा। मेरे मायके में एक आदमी को इसी तरह आवाजें सुनाई देती थीं।

भैया : (क्रोध से) गोली मारो अपने मायके को ! मुझे पागल बना दिया।

भाभी : तभी तो कहती हूँ किसी डाक्टर को दिखाने में क्या हर्ज है ? वहम मिट जाएगा।

भैया : मुझे कोई वहम नहीं है।

भाभी : पर मेरी तसल्ली हो जाएगी।

भैया : भाड़ में जाए तुम्हारी तसल्ली !

भाभी : (रुआँसी) आप मेरे लिए इतना भी नहीं कर सकते ?

भैया : बस, लगीं आँसू बहाने !

भाभी : और क्या हँसूं ? तुम्हारी ऐसी हालत है, और मैं हँसूं ?

भैया : (खीझकर) मैंने कह दिया—मुझे कुछ नहीं हुआ। मैं चला अपने कमरे में। दिमाग खराब हो गया !

(जाता है। दरवाजा बंद होता है। फिर एकदम कमरे के अंदर से, डर कर घिग्घी बँधी आवाज में) भू···भू···भूत ! (चीख कर) भूत ! भूत !

(कई स्वरों का मिलाजुला हुल्लड़ मचता है—'होली है !

होली है !')

भैया : (घिग्घी) भू···भू···भूत होली···खे···खे···लने···

पहला पड़ोसी : (हँसते हुए) भाई साहब, भूत नहीं—हम हैं आप के प्यारे पड़ोसी ।

भैया : (घिग्घी) नहीं···तु···तुम···भूत···हो ! तु···तुम्हारी···शक्लें भू···भू···भूत जैसी हैं ।

दूसरा पड़ोसी : (हँसते हुए) भाई साहब, डरिए मत । हम होली के भूत हैं—असली भूत नहीं हैं । आप ने पहचाना नहीं—मैं हूँ राधेश्याम, यह है रामसिंह, और यह मनोहर, और···

भैया : (कुछ आश्वस्त होकर) तुम्हारी आवाज तो राधेश्याम से मिलती है ।

दूसरा पड़ोसी : आप तो बहुत ही डरपोक हैं ।

भैया : पर तुम लोग मेरे कमरे में आए कैसे ?

पहला पड़ोसी : पीछे की खिड़की से ।

दूसरा पड़ोसी : खुली देखी, तो चले आए ।

भैया : अच्छा, तो अब आप लोग यहाँ से चले जाइए ।

पहला पड़ोसी : ऐसी भी क्या नाराजी ?

भैया : खबरदार, जो मेरे पास आए !

दूसरा पड़ोसी : अब तो भाई साहब, हम आ ही गए ।

भैया : भागो यहाँ से !

पहला पड़ोसी : भागें भी तो किधर से ? किसी ने बाहर से खिड़की बंद कर दी है ।

दूसरा पड़ोसी : और सामने का दरवाजा आपने बन्द कर दिया है ।

(कई स्वरों का कहकहा ।)

भैया : ठहरो, मैं अभी दरवाजा खोलता हूँ । (चटखनी उतारता है) अरे, किसी ने इस दरवाजे को भी बन्द कर दिया ।

पहला पड़ोसी : बहुत अक्लमन्द मालूम होता है । (हँसता है ।)

दूसरा पड़ोसी : बड़ी मजबूरी है । अब तो हमारे साथ होली खेल ही लीजिए । भाई साहब ।

भैया : (क्रोधित) नहीं, नहीं ! मुझे यह गँवारों का खेल पसन्द नहीं ।

पहला पड़ोसी : क्या बात कहते हैं, भाई साहब ! होली तो कृष्ण कन्हैया भी खेलते थे ।

दूसरा पड़ोसी : अब यह मनहूसियत छोड़िए, भाई साहब ।

भैया : नहीं, मुझे होली से सख्त नफरत है ।

पहला पड़ोसी : एक बार होली का मजा चख कर तो देखिए—सब नफरत दूर हो जाएगी । फिर तो आप होली के रंग में ऐसे डूबेंगे कि रोज ही होली मनाएँगे ।

भैया : मैं कहता हूँ तुम लोग···

दूसरा पड़ोसी : (बात काट कर, जोर से) मैं कहता हूँ, भाइयो, देखते क्या हो ! आज भाई साहब की वह गत बनाओ कि अगली-पिछली सब कसर पूरी हो जाए ।

(हुल्लड़ मचता है—'होली है ! होली है !' कहकहे)

पहला पड़ोसी : (जोर से) देखना, भाइयो, जरा-सी भी कसर न रह जाए !

दूसरा पड़ोसी : (जोर से) भाई साहब को आज भूत नजर आ रहे हैं—इन्हें भी भूत बना कर छोड़ना ।

भैया : (क्रोधित) छोड़ो मुझे !

पहला पड़ोसी : अभी जरा सब्र कीजिए ।

(सब का कहकहा ।)

भैया : (आवाज दे कर) नरेश की भाभी !···नरेश की भाभी ! बाहर से दरवाजा खोल दो !

दूसरा पड़ोसी : (हँसते हुए) अरे वाह, भाई साहब ! आप मर्द हो कर स्त्री को सहायता के लिए पुकार रहे हैं !

(सब का कहकहा ।)

भैया : (क्रोधित) देख लूँगा ! एक-एक को देख लूँगा ! सब को देख लूँगा !

पहला पड़ोसी : देख लीजिएगा । लेकिन पहले शीशे में अपनी शक्ल तो देख लीजिए ।

(सब का कहकहा)

दूसरा पड़ोसी : (जोर से) बस, भाइयो, अब छोड़ दो ।

पहला पड़ोसी : (हँसते हुए) अब भाई साहब गैर नहीं रहे—हम भूतों की बिरादरी में शामिल हो गए हैं ।

दूसरा पड़ोसी : (आवाज दे कर) नरेश ! दरवाजा खोल दो ।

(दरवाजा खुलता है ।)

भैया : (क्रोधित) नरेश, तुम तो डाक्टर को लेने गए थे ?

नरेश : (हँसी दबा कर) जी, मैं ही तो इन सब डाक्टरों को ले कर आया हूँ ।

भाभी : आप की मनहूसियत का इलाज करने के लिए ।

पहला पड़ोसी : भाभी, हम सब डाक्टरों ने भाई साहब की मनहूसियत का हमेशा के लिए इलाज कर दिया है ।

(सब का कहकहा ।)

भाभी : आप लोग बैठिए । कुछ खा कर जाइएगा ।

दूसरा पड़ोसी : अभी नहीं, भाभी । पहले भाई साहब को चाँदनी चौक का रंग दिखा लाऊँ ।

पहला पड़ोसी : हाँ, अब तो इन का डर दूर हो गया ।

दूसरा पड़ोसी : रही-सही कसर वहाँ पूरी हो जाएगी ।

पहला पड़ोसी : चलिए, भाई साहब ।

भैया : चलो भई ।

नरेश : मैं भी चलूँ, भैया ?

भैया : नहीं, तू मेरी जगह कमरे में बंद होकर बैठ जा । शैतान कहीं का !

(सब का कहकहा ।)

(शुरू वाला होली से सम्बन्धित कोई गीत गाते-बजाते लोगों की टोली का स्वर उभरता है । बीच-बीच में 'होली है ! होली है !' का हुल्लड़ ।)

२१

पूछताछ

गिनतीराम : (दरवाजा खटखटाकर) श्रीमानजी ! बाबूजी ! लालाजी ! मिस्टर जी !

रमेश : (अन्दर से) कौन ?

गिनतीराम : मैं हूँ ।

रमेश : (दरवाजा खोल कर, नाराज) क्यों, साहब, आप को पागल कुत्ते ने काटा है क्या ?

गिनतीराम : (घबरा कर) नहीं तो ।

रमेश : तो फिर इतनी ज़ोर-जोर से दरवाजा क्यों पीट रहे हैं ?

गिनतीराम : और फिर किसे पीटता ?

रमेश : अपने सिर को ! वह आप को कॉल बेल नहीं दिखाई दे रही है ?

गिनतीराम : ओह्, क्षमा कीजिए । मैंने देखा नहीं ।

रमेश : आप भी अजीब आदमी हैं ! अभी कल ही तो लगवाई है— और आप ने देखी ही नहीं ।

गिनतीराम : क्षमा कीजिए ।

रमेश : क्षमा कैसे कीजिए ! मैं अन्दर जाता हूँ···

गिनतीराम : सुनिए तो···

रमेश : बाद में सुनूँगा । पहले मैं जैसे कहता हूँ आप को वैसा ही करना पड़ेगा, नहीं तो···

गिनतीराम : नहीं तो ?

रमेश : अबाउट टर्न ! क्वीक मार्च ! लेफ्ट ! राइट !

गिनतीराम : अच्छा, अच्छा, आप जैसा कहें मैं वैसा ही करूँगा ।

रमेश : तब ठीक है। हाँ, तो मैं अन्दर जाता हूँ। आप कॉल बेल बजाइए—जरा जोर से ताकि पड़ोसी भी सुन लें। समझ गए ?

गिनतीराम : जी।

रमेश : लीजिए, मैं अन्दर चल दिया। (जाता है।)

गिनतीराम : (स्वतः) अजब सनकी से पाला पड़ा है। देखो, आगे कैसी बीतती है ! अरे, कॉल बेल तो बजा दूँ। (घंटी बजाता है।)

रमेश : (आ कर) कहिए, किस से मिलना है ?

गिनतीराम : आप से।

रमेश : तशरीफ रखिए।

गिनतीराम : धन्यवाद !

रमेश : अब कहिए।

गिनतीराम : आप से कुछ पूछना है।

रमेश : (नाराज हो कर) पूछताछ का दफ्तर आगे है।

गिनतीराम : आप सुनिए तो सही।

रमेश : अच्छा, सुनाइए।

गिनतीराम : जी, मेरा मतलब···मैं तो जनगणना यानी मरदुमशुमारी यानी सेंसस के लिए आया हूँ। आप को मालूम ही होगा कि आजकल सारे देश में यह काम हो रहा है।

रमेश : (हँसते हुए) ओह, तो आप गिनतीराम हैं !

गिनतीराम : (आश्चर्य से) गिनतीराम ?··· नहीं तो।

रमेश : नहीं तो कैसे नहीं ! बताइए—लोहे का काम करने वाले को लुहार, सोने का काम करने वाले को सुनार, मिट्टी के बरतन बनाने वाले को कुम्हार, चमड़े का काम करने वाले को चमार कहते हैं कि नहीं ?

गिनतीराम : जी कहते हैं।

रमेश : बस तो फिर गिनती करने वाले को भी गिनतीराम कहना चाहिए। ठीक है न ?

गिनतीराम : चलिए, जैसी आप की खुशी।

रमेश : (खुश होकर) हाँ, यह बात हुई !

गिनतीराम : अब मैं कुछ पूछ सकता हूँ ?

रमेश : खुशी से ।

गिनतीराम : आप के घर में कौन-कौन आदमी रहते हैं ?

रमेश : सिर्फ मैं ।

गिनतीराम : आप अभी कुँआरे हैं, या विधुर या तलाकशुदा ?

रमेश : (नाराज होकर) आप भी अच्छे-खासे मसखरे मालूम होते हैं !

गिनतीराम : (आश्चर्य से) जी ? मैं ने तो कोई मजाक नहीं किया ।

रमेश : यह मजाक नहीं तो और क्या है ? एक दस साल की स्टैंडिंग के शादीशुदा आदमी को आप कुँआरा, विधुर और तलाकशुदा फरमा रहे हैं ! खूब !

गिनतीराम : लेकिन आप ने ही तो कहा था कि घर में सिर्फ आप ही रहते हैं ।

रमेश : ठीक तो है । आपने ही तो पूछा था कि घर में कौन-कौन 'आदमी' रहते हैं । सो, जनाब, 'आदमी' तो इस घर में सिर्फ मैं ही हूँ । बाकी एक अदद बीवी है, जो आदमी नहीं 'औरत' है और एक अदद बच्चा है जो लड़की है—'आदमी' नहीं ।

गिनतीराम : ओह, समझा...और वह लड़का जो अभी-अभी बाहर गया है—वह क्या आपका नहीं है ?

रमेश : (नाराज होकर) देखिए, जनाब, गाली मत दीजिए, नहीं तो···

गिनतीराम : (बीच में, आश्चर्य से) जी...जी...मैं भला आप को गाली क्यों देता !

रमेश : गाली नहीं तो क्या है ! मेरे लड़के को आप किसी दूसरे का बता रहे हैं !

गिनतीराम : आपने घर में रहने वाले लोगों में उसका नाम नहीं गिनवाया, इसीलिए मुझे शुबहा हुआ था ।

रमेश : गिनवाता भी क्यों ? वह लड़का घर में रहता ही कहाँ है—सारे दिन बाहर आवारागर्दी करता फिरता है ।

गिनतीराम : ओह !...अच्छा, साहब, वह जो अभी काला-काला आदमी घर के अन्दर गया है, वह क्या आप का नौकर है ?

रमेश : वैसे तो मुझे आपकी इस बात पर नाराज होना चाहिए था,

लेकिन वास्तव में मैं बहुत खुश हूँ ।

गिनतीराम : (आश्चर्य से) क्यों ?

रमेश : इसलिए कि उस आदमी को मैं बहुत दिनों से वही कहना चाहता था, जो आपने कहा है । लेकिन कुछ विशेष कारणों से कह नहीं सकता था । शक्ल-सूरत से वह डोमेस्टिक सर्वेंट ही लगता है, लेकिन है नहीं ।

गिनतीराम : फिर कौन है ?

रमेश : कान में सुनिए । (धीरे से) मेरा साला है ।

गिनतीराम : (खिसिया कर) ओह, मैं क्षमा चाहता हूँ ।

रमेश : नहीं, नहीं, क्षमा माँगने की कोई बात नहीं है ।

गिनतीराम : आप के साले साहब यहीं रहते हैं ?

रमेश : जी, आते-जाते रहते हैं ।

गिनतीराम : आपका शुभ नाम ?

रमेश : श्री रमेश चंदर ।

गिनतीराम : आपकी पत्नी का ?

रमेश : उनका नाम लेते डर लगता है—कहीं सुन लिया तो जबरदस्ती मुझे लज्जित करके छोड़ेंगी ।

गिनतीराम : अच्छा, तो आप कागज पर लिख दीजिए ।

रमेश : यह मंजूर है । (लिखते हुए) यह लीजिए ।

गिनतीराम : (पढ़ते हुए) श्रीमती सौभाग्यवती रामकलीजी ।

रमेश : (प्रसन्न होकर) जी ।

गिनतीराम : आपके लड़के का नाम ?

रमेश : कबूतर ।

गिनतीराम : (आश्चर्य से) जी ?

रमेश : जी, हाँ । उस की माँ उसे कबूतर ही कहती है—सारे दिन उड़ा-उड़ा जो फिरता है ।

गिनतीराम : और आप की लड़की का नाम ?

रमेश : उसका अभी कोई नाम नहीं रखा—बहुत छोटी है ।

गिनतीराम : आप का जन्मस्थान ?

रमेश : अस्पताल ।
गिनतीराम : आप की पत्नी का ?
रमेश : मेरी ससुराल ।
गिनतीराम : आप का लड़का कहाँ पैदा हुआ था ?
रमेश : चलती रेलगाड़ी में ।
गिनतीराम : और आपकी लड़की ?
रमेश : मेरे घर में ।
गिनतीराम : आप की उमर क्या है ?
रमेश शक्ल से चालीस वर्ष, स्कूल के सार्टीफिकेट से तीस वर्ष ।
गिनतीराम : और जन्ममत्री से ?
रमेश : जन्मपत्री तो दीमक चाट गई ।
गिनतीराम : आपकी पत्नी की उमर क्या है ?
रमेश : (नाराज होकर) आप को मालूम नहीं···
गिनतीराम : (बीच में, आश्चर्य से) जी, मुझे कैसे मालूम हो सकती है !
रमेश : (नाराज) बीच में मत बोलो । मैं कह रहा था—आप को मालूम नहीं···
गिनतीराम : (बीच में ही) वही तो मैं भी कह रहा था कि मुझे कैसे मालूम···
रमेश : (नाराज, बीच में) फिर बोले ! मैं कह रहा था—(बहुत जल्दी से) आप को मालूम नहीं (धीरे-धीरे) कि औरतों की उमर पूछना भारतीय संस्कृति के विरुद्ध है?
गिनतीराम : ओह ! अच्छा, अपने लड़के की उमर तो बताएँगे ?
रमेश : अपने बाप से भी ज्यादा ।
गिनतीराम : (आश्चर्य से) जी, क्या फरमाया ?
रमेश : आपने सुना नहीं ?
गिनतीराम : सुन लिया ।
रमेश : (नाराज) खाक सुन लिया ! अभी मैंने सुनाया ही कहाँ, जो आपने सुन लिया !
गिनतीराम : तो फिर अब सुना दीजिए ।
रमेश : सुनिए । किसी ने कहा है—'चाइल्ड इज द फादर ऑफ मैन' ।

इसलिए मेरा लड़का मेरा बाप हुआ। और जब वह मेरा बाप हुआ तो उमर में भी मुझ से बड़ा ही हुआ। समझ गए ?

गिनतीराम : जी। इस हिसाब से आपकी लड़की आप की माँ हुई ?

रमेश : जरूर।

गिनतीराम : आप काम क्या करते हैं ?

रमेश : नपाई।

गिनतीराम : अच्छा, तो आप सर्वे ऑफ इंडिया में काम करते हैं ?

रमेश : जी, नहीं—सर्वे ऑफ नैक में। कहिए तो अभी आप की गरदन नाप कर बता दूँ ?

गिनतीराम : (घबरा कर) नहीं, नहीं, रहने दीजिए—मैं समझ गया। आप की दरजी की दुकान होगी।

रमेश : जी।

गिनतीराम : आप की आमदनी क्या है ?

रमेश : खर्च से आधी।

गिनतीराम : फिर गुजारा कैसे होता है ?

रमेश : उधार के सहारे।

गिनतीराम : आप की पत्नी कोई काम करती हैं ?

रमेश : जी हाँ।

गिनतीराम : कौन सा ?

रमेश : दिन में पड़ोसिनों से गप्पें हाँकना, और रात में मुझ से लड़ना।

गिनतीराम : आप कहाँ तक पढ़े हैं ?

रमेश : जो कुछ पढ़ा था—नून, तेल, लकड़ी के चक्कर में भूल चुका हूँ।

गिनतीराम : आपकी पत्नी पढ़ी-लिखी हैं ?

रमेश : (साँस भर कर) न होतीं तो अच्छा था—पत्र-पत्रिकाओं का खर्चा तो बचता।

गिनतीराम : आप के लड़के-लड़की स्कूल में पढ़ते हैं ?

रमेश : पैदा होते ही स्कूल में दोनों के नाम रजिस्टर करवा दिए थे—अभी तक दाखिले का नंबर नहीं आया है ?

गिनतीराम : आप किस जाति के हैं ?

रमेश : जिस के हमारे बाप-दादे थे ।
गिनतीराम : वह किस जाति के थे ?
रमेश : बन्दर जाति के—मिस्टर डारविन के अनुसार ।
गिनतीराम : आप किस धर्म में विश्वास करते हैं ?
रमेश : आपद् धर्म में ।
गिनतीराम : और आप की पत्नी भी इसी धर्म को मनती होंगी ?
रमेश : जी, नहीं ।
गिनतीराम : फिर वह किस धर्म कोमानती हैं ?
रमेश : पति धर्म को ।
गिनतीराम : आप की मातृभाषा क्या है ?
रमेश : पंजाबी ।
गिनतीराम : मैं तो समझा था कि आपकी मातृभाषा हिंदी है ।
रमेश : क्यों समझे थे ?
गिनतीराम : आप बड़ी अच्छी हिंदी जो बोल रहे हैं ।
रमेश : आपने मेरी भाषा पूछी थी या मेरी मातृभाषा ?
गिनतीराम : एक ही बात है ।
रमेश : एक ही बात कैसे है ! मेरी भाषा मेरी भाषा है, और मातृभाषा मेरी माँ की भाषा है ।
गिनतीराम : आपकी पत्नी भी हिंदी भाषा बोलती होंगी ।
रमेश : जी, नहीं ।
गिनतीराम : फिर वह कौन सी भाषा बोलती हैं ?
रमेश : कटु भाषा ।
गिनतीराम : यह मकान आप का है ?
रमेश : नहीं ।
गिनतीराम : किराए पर लिया है ?
रमेश : नहीं ।
गिनतीराम : फिर किस का है ?
रमेश : जनाब, असली बात यह है कि यह मकान ही नहीं है ।
गिनतीराम : (आश्चर्य से) मकान नहीं है ?

रमेश : जी ।

गिनतीराम : फिर क्या है ?

रमेश : धर्मशाला ।

गिनतीराम : क्या मतलब ?

रमेश : मतलब यह कि जब मेरे सास-ससुर, साले-सालियाँ वगैरा-वगैरा मुझ से बगैर पूछे ही आए दिन यहाँ डेरा जमाए रहते हैं, तो यह धर्मशाला ही हुई । समझ गए ?

गिनतीराम : जी ।

रमेश : अच्छा, जनाब, अब मेरा एक एंगेजमेंट है ! रात हो गई है और मेरी पत्नी को अब मुझ से लड़का है । अब आप से १० वर्ष बाद १९७१ में अगली जनगणना पर मुलाकात होगी ।

गिनतीराम : आपसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई, नमस्ते !

रमेश : नमस्ते !

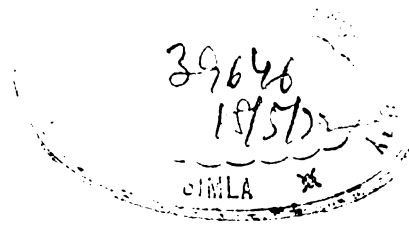

Library IIAS, Shimla
H 817 Sw 12 M
00039646